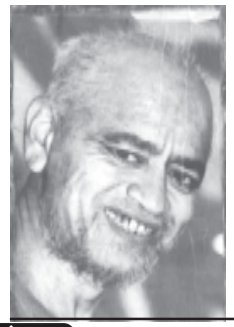

प्रवचन विशिष्ठ विशेषांक

संस्कार सागर

• वर्ष : 19 • अंक : 221 • सितम्बर 2017

• वीर नि.संवत 2544 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1938

लेख

- आचार्यविद्यासागर केप्रवचनों में चारित्र निर्माण की प्रेरणा 9
- ओम् 16
- आचार्य विद्यासागरजी महाराज के प्रवचनों पर आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी का प्रभाव 22
- जैन तीर्थ नैनागिरि और आचार्य विद्यासागर 31
- आचार्य विद्यासागर जी के प्रवचनों में नीतिवाक्य 38
- आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज 52
- उत्कृष्ट ज्ञान और चारित्र के धनी : पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी 64
- श्रमण-शतक में और एक परिशीलन 74
- सागरजी अटल गहराईयों वाला विलक्षण व्यक्तित्व-आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागरजी महाराज 76
- आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की त्याग तपस्याचर्या है अनूठी और बेमिसाल 78
- गल्लिकायज्जी पर भाड़ी पड़े यक्षरक्षित जिनबिम्ब तपस्याचर्या है अनूठी और बेमिसाल 80
- मेरी कुंठा मुखि

बाल कहानी

- मेमने की चतुराई 86

कविता

- सल्लेखना-संथारा 15
- संकट देवता 21
- दीवाना 37
- बुजुर्गो की सीख 44
- प्रयत्न करो 55
- प्यास 57
- कैंची नहीं, सुई बन 61
- ओ मेरे हमदर्द ? चीरों मत किसी कली का हृदय 84
- योग गीत 87

कहानी

- तोता की गवाही 71

नियमित स्तंभ

• **पाती पाठकों की** : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 14
• चलो देखें यात्रा : 35 • आगम दर्शन : 36 • पुराण प्रेरणा : 46 • माथा पच्ची : 46 • कैरियर गाइड : 47
• दुनिया भर की बातें : 48 • • आओ सीखें : जैन न्याय : 56 • इसे भी जानिये : 62 • दिशाबोध : 62
• हमारे गौरव : 86 • बाल संस्कार डेस्क : 88 • संस्कार गीत व बाल कविता : 89 •
हास्य तरंग : 90 • समाचार : 91

प्रतियोगिताएं :अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : 45 : वर्ग पहेली : 98

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ,
इन्दौर (म.प्र.)
आंतरिक सज्जा : नीरज गुप्ता, इन्दौर 97542 40305

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का

बाकी सदस्यता शुल्क

जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें । बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क
-आजीवन : **2100/-** (15 साल)
परम संरक्षक : **15000/-**

अपने शहर के
- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (संस्कार सागर)
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक (ब्र. जिनेश मलैया)
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स
  खाता क्र. 07882151004198(IFSC :ORBC0100788)
- आईडीबीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 155104000037022
- आईसीआईसीआय बैंक (श्री दिगम्बर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकते हैं।

कार्यालय
संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 8717924109
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

• श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, अगस्त 2017 का संस्कार सागर पढ़ा इस अंक में श्रीमती डॉ. सराफ का लेख ''श्रमण शतक एक परिशील'' लेख अत्यंत विद्वतापूर्ण लगा। श्रमण शतक आचार्य विद्यासागरजी की श्रेष्ठतम कृति हैं जीव में संस्कार तो अनादिकाल से अहंकार के पड़े हुए हैं परन्तु आचार्यश्री ने इस ग्रन्थ के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयास कियाहै कि साधु श्रमण वही सच्चा होगा जो मान-अपमान से ऊपर उठकर आत्म चिंतन में सदैव मगन रहता है। विद्वान् लेखिका ने रचना के उन सभी पक्षों को सामने लाने का प्रयास किया है जिनका गूढ़ रहस्य समझने में सामान्य पाठक को कई वर्ष लग जाते हैं। लेख ने तो मेरे मर्म को छू लिया है। नीलम जी को बहुत-बहुत साधुवाद।**– राजकुमार जैन, इन्दौर**

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के अगस्त अंक में वर्षायोग विशेषांक देखकर मुझे बहुत विस्मय हुआ। के लगभग 1200 साधु-साध्वियों का चातुर्मास स्थल के पते साथ उनके सम्पर्क सूत्र भी देना कितना श्रम साध्य कार्य, इसका अनुमान वही कर सकता है जिसने कभी कोई इस तरह के कार्य किये हों। उसे ही श्रम के आंकलन ज्ञात होता है। आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के 50 वें दीक्षा वर्ष के विशेषांकों की श्रृंखला में वर्षायोग विशेषांक अनेक स्मृति चित्रों के साथ सुन्दर पृष्ठ सज्जा, ज्ञान वर्द्धक लेखों का समूह इस विशेषांक का मुख्याधार नजर आ रहा है। वर्तमान में संत-साधुओं की समग्र जानकारी देने वाली जैन समाज की इकलौती पत्रिका संस्कार सागर को सतत् उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए पत्रिका के सम्पादक मंडल को बहुत-बहुत बधाईयां। **श्रीमती अनिता जैन, ललितपुर**

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों कश्मी की मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने अपने एक बयान में कहा कि जम्मू-कश्मीर में जो हिंसा हो रही है उसे बाहरी ताकतें संचालित कर रही हैं जिनमें चीन का भी हाथ है। जम्मू-कश्मीर में चीन का दखल एक बहुंत बड़ी चेतावनी के रूप में लेने की जरूरत है। यह तो निर्विवाद है कि आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा के अचूक इंतजाम करने के अलावा भारत के पास और कोई विकल्प नहीं है। इसके अलावा उसे कूटनीति भी अपनाना होगी जिससे चीन को भारत पर टेढ़ी नजर डालना महंगा सौदा लगने लगे। देश का आम जनमत एवं विपक्ष इस मुद्दे पर सरकार के साथ रहना चाहिये अब यह सरकार का दायित्व है कि वह चीन की मंशा को नाकाम करने के लिए प्रभावी कदम उठाये। **– सत्यम जैन सागर**

• सम्पादक महोदय, बीते दिनों एक समाचार सुर्खियों में रहा कि म.प्र. में कांग्रेस भवन के वास्तु दोष दूर करने के प्रयास चल रहे है। विशेष मंत्रों के उच्चारण के साथ आहूति दी जाये और कांग्रेस भवन के वास्तु दोष दूर हो जायें गे। परन्तु मेरा मानना है कांग्रेस को इस अंधविश्वास के ऊपर उठ कर कुछ सोचना होगा कि अभिजात्यवर्ग ने जब से कांग्रेस पर नियंत्रण किया तब से वे उपेक्षा के शिकार होते रहे हैं। परिणाम से कांग्रेस के कर्ताधर्ता अपरिचित नहीं है। पार्टी के नेताओं को बीज बोकर फसल आने का धैर्य तो रखना ही होगा कहते हैं 12 वर्ष में कचरा घर के दिन भी बदल जाते हैं। कांग्रेस वनवास के 13 वर्ष पूरे हो चुके हैं। कांग्रेस के नेताओं को सामान्य मतदाताओं में पैठ बनाना चाहिए। अंधविश्वास में जुड़कर अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहिए। **सुबोध जैन मारौरा, इन्दौर** ■

भक्ति तरंग

गुनपूरित अरिहंत

वीतराग जिन महिमा धारी, वरन सकै को जन त्रिभुवन में।।टेका।।
तुमरे अनंत चतुष्टय प्रगट्यो, निः शेषावरनच्छय छिन में।
मेघ पटल विघटनतैं प्रगटन, जिमि मार्तंड प्रकाश गगन में।।1।।
अप्रमेय ज्ञेयन के ज्ञायक, नहिं परिनमत तदपि ज्ञेयन में।
देखन नयन अनेक रूप जिमि, मिलत नहीं पुनि निज विषयन में।।2।।
निज उपयोग आपनै स्वामी, गाल दिया निश्चल आपन में।
है असमर्थ बाह्य निकसन को, लवन घुला जैसैं जीवन में।।3।।
तुमरे भक्त परम सुख पावत, परत अभक्त अनंत दुखन मैं ।।
जैसो मुख देखो तैसो हो, भासत जिम निर्मल दरपन में।।4।।

भावार्थ - हे जिनेन्द्र ! आप वीतराग हैं, आपकी इस महिमा का वर्णन करने में तीनलोक में कोई भी समर्थ नहीं है।

जिस प्रकार घने मेघों की परते छिन्न-भिन्न होकर हट जाने से, बादल विघट जाने से आकाश में सर्वत्र प्रचण्ड सूर्य का प्रकाश फैल जाता है, उसी प्रकार आपके घातिया कर्म नष्ट हो जाने से, क्षण भर में सभी आवरणों (ज्ञानावरण आदि) के हट जाने से असीम-अनन्त चतुष्टय प्रकट हो गए हैं।

जिनका किसी प्रमाण के द्वारा बोध नहीं कराया जा सकता है। ऐसे अनन्त ज्ञेयों, सभी ज्ञेयों के ज्ञाता हो आप। जबकि आपका ज्ञेयों में परिणमन नहीं होता। जैसे आँखों के द्वारा अनेक वस्तुएँ, अनेक रूप देखे जाते हैं परन्तु आँखें उन वस्तुओं में प्रवेश नहीं करती उन वस्तुओं में घुसती नही हैं अर्थात् ज्ञान ज्ञेयरूप। वस्तुरूप नहीं होता।

हे जिनेन्द्र ! आप निज उपयोग में ही इतने एकमेक हो गये हो कि अब उस उपयोग का बाहर की ओर जाना कठिन हैं, असभंव है अर्थात् आपने अपना उपयोग 'स्व' में ही लीन कर रखा है, आप स्व में ही लीन हैं, स्व में ही रम रहे हैं। जिस प्रकार नमक पानी में घुल-मिलकर एकमएक होता है उसी प्रकार आप आत्मस्थ होकर निज उपयोग से एकसत्व हो गये हो ।

■

संस्कार प्रवाह

प्रवचन का जादू

तीर्थंकरों की वाणी प्रवचन के रूप में स्वीकार्य होती है। उत्कृष्ट प्रामाणिक वचन को प्रवचन माना गया है। संदेह, विपरीतता, अनिश्चितता से शून्य प्रवचन होता है। प्रमाण और नय की तर्कशैली पर आधारित प्रवचन शैली का विकास आचार्य परम्परा से हुआ है। द्रव्य, गुण, पर्याय, स्वभाव, तीनकाल, नव पदार्थ जीव तत्त्व, आत्म तत्त्व, षट्काय, षट् लेश्या, पंचास्तिकाय, व्रत, पांच समिति तीन गुप्ति, पांच चारित्र, प्रवचन के विषय भगवान महावीर की देशना से उपलब्ध हुए हैं। प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग ये चार विभाग तीर्थंकरों की वाणी के बनाये गये हैं। स्व पर कल्याण प्रवचन का मुख्य उद्देश्य है। जैन धर्म की श्रुत परम्परा में प्रवचन का महत्व अलग ही है। कथाएं चार प्रकार की उपलब्ध होती है। आक्षेपणी-विक्षेपणी संवेगनी और निवेदनी इन कथाओं में से प्रवचन संवेगनी और निर्वेदनी कथा की प्रधानता होती है। स्वाध्याय के भेद क्रम में एक भेद धर्मकथा का भी है। धर्मकथा प्रवचन के लिए आधार प्रदान करती है। तीर्थकरत्व की ओर गतिशील करने वाली षोडषकारण भावनाओं में प्रवचन भक्ति और प्रवचन वात्सल्य का उल्लेख उपलब्ध होता है।

इस युग के जैन दर्शन जैन धर्म जैन सिद्धांत अध्यात्म जीवन व्यवहार के अधिकृत प्रवक्ता आचार्य विद्यासागरजी हैं, जिनके प्रवचन की शैली और प्रस्तुति अनूठी है, जिससे सुनने के लिए हर व्यक्ति एकाग्रचित्त होकर श्रवण करते हैं । दशलक्षण धर्म के पर्यूषण पर्व के अवसर पर परम पूज्य आचार्यश्री के विशेष प्रवचन हुए हैं । यदि विगत 50 वर्षों के प्रवचनों का संकलन किया जाता तो एक बड़ा ग्रन्थ बन जाता जो ग्रंथ समाज के लिए मार्गदर्शन होता, फिरोजाबाद के सोलह स्वप्नतथा पर्यूषण पर्व के

अभी तक जितने प्रवचन संकलित किये गये हैं। उनमें लगभग 1500 प्रवचन ऐसे हैं जिन्हें व्यक्ति एक बार पढ़ने बैठ जाता है तो वह जब तक प्रवचन पूर्ण नहीं कर लेता है तब तक वह बेचैन-सा रहता है। पूज्य आचार्यश्री के प्रचनों का सम्मोहन कुछ इस प्रकार है कि विद्वान से लेकर सामान्य जैन-अजैन श्रोता भी अपना-अपना समय निकाल कर प्रवचन सुनने अवश्य ही जाते रहे हैं।

शब्दों के खिलाड़ी, उपन्यास शैली, अविष्कारक तथा अध्यात्म और चरित्र निर्माण को अपने प्रवचन का केन्द्र बनाने वाले आचार्यश्री परिवार, समाज व राष्ट्र के उत्थान के लिए सदैव गम्भीर प्रेरणा देते रहे हैं। आचार्य विद्यासागरजी के ''संयम स्वर्ण वर्ष'' पर उनके प्रवचनों का मूल्यांकन करते हुए श्रोता अपने जीवन में आंशिक भी परिवर्तन लाता है तो प्रवचन की सार्थकता स्वतः ही सिद्ध हो जाती है। वैसे आचार्यश्री के प्रवचन से प्रभावित होकर देश व विदेश में युवक-युवतियों का एक बहुत बड़ा समूह उनका अनुयायी बन चुका है। यह संख्या सामान्य लोगों की नहीं है अपितु प्रतिभाशाली व्यक्तित्वों की है। अब देखना यह है कि संयम स्वर्ण वर्ष के प्रवचन समाज को क्या दिशा बोध देते हैं। ■

शताब्दी समारोह के अन्तर्गत चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज की पुण्यतिथि का आयोजन

श्रवणबेलगोला। 20 वीं शताब्दी के प्रथम आचार्य परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज (दक्षिण) की 62 वीं पुण्य तिथि उनके मुनि दीक्षा के शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत जन-जन की आस्था एवं श्रद्धा का तीर्थस्थल गोम्मटेश्वर बाहुबली श्रवणबेलगोला में वात्सल्य वारिधि आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज के मंगल सान्निध्य में श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक मनाई गई। इस अवसर पर आचार्य श्री वासुपूज्य सागरजी ससंघ, आचार्यश्री पंचकल्याणकसागरजी ससंघ, आचार्य चन्द्रसागरजी ससंघ, मुनिश्री अमितसागर जी ससंघ सहित 84 पूज्य पिच्छिधारी संत भी मंच पर विराजमान रहे।

आ. विद्यासागर के प्रवचनों में चारित्र निर्माण की प्रेरणा

• डॉ. आराधना जैन 'स्वतंत्र' •

यदि धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, चारित्र चला गया तो सब कुछ नष्ट हो गया। इस उक्ति से स्पष्ट कि जीवन में चारित्र सबसे महत्वपूर्ण है।

चारित्र से तात्पर्य है आचरण, चाल-चलन, अच्छा व्यवहार आदि। मानव एक सामाजिक प्राणी है अतः उसका आचरण ऐसा होना चाहिए जिससे वह समाज में शान्तिपूर्वक रहते हुए देश की प्रगति में अपना योगदान दे सके। ईमानदारी, उदारता, विनम्रता, सहिष्णुता, सत्यभाषण, जीवदया, संयम, लगनशीलता, उद्यमशीलता, उपकार आदि चरित्र में आते हैं। ये सच्चरित्रता की पहचान है।

किसी व्यक्ति का सच्चरित्रवान होना इस बात पर निर्भर नहीं करता कि वह कितना पढ़ा लिखा है। एक अनपढ़ व्यक्ति भी अपने मर्यादित एवं संयममय जीवन से सच्चरित्रवान होता है। और एक उच्च शिक्षित अधिकारी भ्रष्टाचार में लीन हो कर चरित्रहीन की संज्ञा पाता है।

जैन दर्शन में चारित्र के दो रूप माने गये हैं- निश्चय चारित्र और व्यवहार चारित्र। निश्चय चारित्र निवृत्ति मूलक है तथा व्यवहार चारित्र प्रवृत्तिपरक। चारित्र का बाह्य आचारात्मक पक्ष व्यवहार चारित्र है और उसका आन्तरिक पक्ष निश्चय चारित्र है। निश्चय चारित्र का अर्थ है समस्त राग-द्वेषादि विकारी भावों से रहित हो कर परम साम्यभाव में ही अवस्थिति। यह आत्मरमण की स्थिति है। निश्चय चारित्र की भावना ही जीव के आध्यात्मिक विकास का आधार है। इसे समता, वीतरागता भी कहते हैं। व्यवहार चारित्र का सम्बन्ध आचार नियमों के परिपालन से है। मन, वचन और काय की अशुभ प्रवृत्तियों को त्याग कर व्रत समिति आदि शुभ प्रवृत्तियों में लीन होना व्यवहार-चारित्र है। इसे देश व्रत और महाव्रत इन दो वर्गों में विभाजित किया गया है। देशव्रत चारित्र का सम्बन्ध गृहस्थों से और महाव्रत का सम्बन्ध मुनियों से हैं।

वर्तमान में परम पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाव्रतों/मुनिचर्या का निर्दोष पालन कर रहे हैं। उनके प्रवचनों, निर्मल चारित्र चर्या से प्रभावित हो कर उच्च शिक्षित विदेशों की कम्पनियों में लाखों का पैकेज पाने वाले युवाओं ने अपनी नौकरी, कारोबार, माता-पिता आदि सब कुछ छोड़ कर मुनिव्रत धारण किया और आचार्यश्री संघ में साधना कर रहे हैं। अनेक बहनों ने उनसे आर्यिका व्रत अंगीकार किया तथा निरन्तर साधना में रत हैं। अनेक भाई-बहन आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत, प्रतिमाव्रत ले कर आश्रम/घर में रह कर साधना कर रहे हैं।

परम पूज्य आचार्यश्री आपनी साधना, तप, स्वाध्याय से स्व का कल्याण तो कर ही रहे हैं। वे अपने लोक मंगलकारी प्रवचनों के द्वारा श्रावक-आमजन का पथ प्रदर्शन कर रहे हैं जिससे जीवन में चारित्र निर्माण कर शान्तिपूर्वक जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। जीवन में चारित्र निर्माण की कतिपय प्रेरणायें इस प्रकार हैं-

वर्तमान में आचार्यश्री शिष्यों को और समाज को शिक्षित होने की प्रेरणा देते हैं। शिक्षा के द्वारा देय-उपादेय, लाभ-हानि, उचित-अनुचित,

ग्रहणीय-अग्रहणीय, हित-अहित, नैतिक-अनैतिक आदि का विवेक जागृत होता है। विवेक जागृत होने पर हमारे कदम सही दिशा की ओर अग्रसर होते हैं। बालिकाओं को शिक्षित और सुसंस्कारित करने के लिए प्रतिभा स्थली जबलपुर डोंगरगढ़ और रामटेक में तीन आदर्श विद्यालय स्थापित किये गये है। जबलपुर एवं दिल्ली में प्रशासनिक प्रशिक्षक केन्द्र की स्थापना की गई है। जयपुर, आगरा, हैदराबाद, इन्दौर, जबलपुर आदि स्थानों पर छात्रावास स्थापित किये गये हैं जहाँ छात्रों को आवास भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था है। यहां रह कर छात्र शिक्षा प्राप्त कर उत्तम उन्नत जीवन का निर्माण कर सकते हैं।

स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा -

आचार्यश्री स्वावलम्बी जीवन जीते हैं। एक बार उन्होंने प्रवचन में कहा था- वास्तविक सुख स्वावलम्बन में हैं। आरम्भ में छोटे-छोटे बच्चों को सहारा देना होता है किन्तु बड़े होने पर उन बच्चों को अपने पैरों पर बिना दूसरे के सहारे खड़े होने की शिक्षा देनी होगी। अतः वे कहते हैं नौकरी नहीं, व्यवसाय करो। आपके आशीर्वाद एवं प्रेरणा से अहिंसक आजीविका 'हथकरघा' उद्योग की अनेक स्थानों पर स्थापना हुई है और ये उद्योग सफलतापूर्वक चल रहे हैं। इन उद्योगों द्वारा जहां बेरोजगारी दूर हो रही है। वहीं स्वावलम्बन की ओर भी अग्रसर हो रहे हैं।

गोदाम नहीं, गोधाम बनाने की प्रेरणा

अहिंसा का जीवन में पूर्णरूपेण पालन करने वाले एवं मांसनिर्यात से पीड़ित हृदय आचार्यश्री प्रवचन के माध्यम से गोधाम बनाने की प्रेरणा देते हैं। उनका मानना है कि गोधाम बनाने से सड़क पर घूमने वाले, बीमार, बूढ़े पशुओं को आश्रय मिलेगा। इससे मांसनिर्यात में कमी आयेगी। आचार्यश्री की प्रेरणा और आशीर्वाद से जीवदया और अहिंसा को साकार रूप देने के लिए भारत के पांच राज्यों में 72 गौशालाएं संचालित हो रही है। इन गौशालाओं में अद्यावधि एक लाख से अधिक गौवंश को कत्लखानों में जाने व काटने से बचाया गया। सन् 2016 में हबीबगंज भोपाल में चातुर्मास के दौरान आचार्यश्री ने एक दिन विधानसभा में प्रवचन किये थे। उस समय उन्होंने अपनी मातृभाषा में अध्ययन की प्रेरणा दी थी। अध्ययन का माध्यम हिन्दी/मातृभाषा हो अंग्रेजी नहीं। अंग्रेजी को एक भाषा/विषय के रूप में पढ़े। आज छोटे-छोटे बच्चे विदेशी/अंग्रेजी भाषा की अंगुली पकड़ कर नये सिरे से चलना सीखते हैं तो वे न भाषा ही समझ पाते हैं और न विषय। उनकी मौलिक प्रतिभा, मनोबल सबका हनन हो जाता है। व्यक्ति का मौलिक चिन्तन हमेशा मातृभषा में ही होता है। अंग्रेजी माध्यम से छात्र की मौलिक क्षमता का ह्रास होता है और उसकी वास्तविक प्रतिभा कभी भी उभरकर सामने नहीं पाती। आचार्यश्री मातृभाषा के व्यवहार की प्रेरणा पूर्व में भी प्रवचन के माध्यम से देते रहे हैं। उनकी प्रेरणा के परिणामस्वरूप भोपाल में अटलबिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय आरम्भ हो गया है। उच्च शिक्षा के अंग्रेजी माध्यम के ग्रन्थों/पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद हुआ है और यह म.प्र. के मुख्यमंत्री शिवराज चौहान के सहयोग से संभव हुआ है। आचार्यश्री ने एक महत्वपूर्ण बात कही थी कि चीन ने स्वतंत्र होते ही अपने देश की चीनी भाषा का व्यवहार आरम्भ कर

दिया था तो हमारे देश के कर्णधार हिन्दी राष्ट्रभाषा सम्बन्धी राजनीतिक निर्णय लेने का साहस क्यों नहीं जुटा पाते हैं। निज भाषा की उन्नति को सब उन्नति का मूल माना गया है अतः भारतीय भाषा के व्यवहार की आवश्यकता है।

सेवा, वैयावृत्ति की प्रेरणा

स्व-पर कल्याण में निरत आचार्यश्री वैयावृत्य की प्रेरणा देते हैं। सेवा सुश्रुषा, अनुग्रह, उपकार। सेवा की चर्चा करते ही हमारा ध्यान पड़ोसी/पर की ओर चला जाता है। सेवा तभी हो सकती है जब हमारे अन्दर सभी के प्रति अनुकम्पा जागृत हो जाये। अनुकम्पा के अभाव में न हम अपनी सेवा कर सकते हैं और न दूसरे की ही सेवा कर सकते हैं। सेवा वही कर सकता है जो झुकना जानता है। वास्तव में दूसरे की सेवा करके हम अपनी ही वेदना मिटाते हैं। दूसरों की सेवा हम कर ही नहीं सकते। दूसरे तो मात्र निमित्त बन सकते हैं। उन निमित्तों के सहारे अपने अंतरंग में उतरना यही सबसे बड़ी सेवा है। इस प्रकार आचार्यश्री सेवा का संदेश दे कर अपनी वेदना मिटाने की प्रेरणा देते हैं।

विनम्र बनने की प्रेरणा

विनय आत्मा का गुण है और ऋजुता का प्रतीक है। विनय का अर्थ है सम्मान, आदर पूजा आदि। विनय से हम आदर और पूजा तो प्राप्त करते ही है साथ ही सभी विरोधियों पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं। क्रोधी, कामी, मायावी, लोभी, सभी विनय के द्वारा वश में किये जा सकते हैं। विनयी दूसरें को भालिभांति समझ पाता है और उसकी चाह यही रहती है कि दूसरा भी अपना विकास करे। अविनय में शक्ति का विखराव है विनय में शक्ति का केन्द्रीकरण है। अपने विनय गुण का विकास करें। विनय गुण से असाध्य कार्य भी सहज साध्य बन जाते हैं। यह विनयगुण ग्राह्य है, उपास्य है, आराध्य है। विनय का अर्थ यह नहीं है कि आप भगवान के समक्ष तो विनय करें और पास-पड़ौस में अविनय का प्रदर्शन करें। अपने पड़ोसी की भी यथायोग्य विनय करें। कोई घर पर आ जाये तो उसका सम्मान करो। मानेन तृप्ति, न तु भोजनेन अर्थात् सम्मान से तृप्ति होती है, भोजन से नहीं अतः विनय करना सीखो। विनय गुण आपको सिद्धत्व प्राप्त करा देगा।

प्रदर्शन से बचने की प्रेरणा

आज खान-पान, रहन-सहन आदि सभी में प्रदर्शन बढ़ता जा रहा है। आपका श्रृंगार भी दूसरों पर आधारित है। दूसरा देखने वाला ना हो तो श्रृंगार व्यर्थ मालूम पड़ता है। आप दर्पण देखते हैं तो दृष्टिकोण यही रहता है कि दूसरे की दृष्टि में अच्छे दिखाई पड़ सके। इस तरह आपका जीवन अपने लिए नहीं दूसरों को दिखाने के लिए होता जा रहा है। सोचिए, अपने लिए आपका क्या है? आपकी कौन-सी क्रिया अपने लिए होती है ? आज सारी दुनिया प्रदर्शन में बहती जा रही है। प्रदर्शन जीवन में आकुलत। का कारण है। प्रदर्शन अनुभूति नहीं, कोरा ज्ञान है। कोरा ज्ञान कार्यकारी नहीं है। अतः प्रदर्शन से बचे।

अप्रमत्त रहने की प्रेरणा

हमारे जीवन से दूसरे के लिए तभी तक खतरा है जब तक हम प्रमादी हैं, असावधान है। अपमतो भव चौबीसो घण्टे अप्रमत्त की ओर बढ़े, अप्रमत्त रहना प्रारम्भ करें तभी कल्याण है। आचार्यश्री स्वयं प्रतिसमय अप्रमतत्त रह कर

मुनिचर्या का पालन कर रहे हैं और हमें सजग सावधान रहने हेतु प्रेरित करते हैं। इससे सूक्ष्म व स्थूल जीवों की रक्षा होती है। अहिंसा का पालन सहज ही हो जाता है।

आत्मा परिणामों अन्धविश्वास से विरत रहने की प्रेरणा

आचार्यश्री प्रवचन में अंधविश्वास से विरत होने का संदेश देते हैं। उनका कथन है लोकमत के पीछे मत दौड़ो, नहीं तो भेड़ों की तरह जीवन का अंत हो जायेगा। अंधविश्वास चारित्र निर्माण में बाधक है अतः विवेकपूर्वक सोच समझ कर कदम बढ़ाना चाहिए।

संयम की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा

संयम अर्थात् इन्द्रिय विषयों, मन पर नियंत्रण और जीवों की रक्षा। वर्तमान में भौतिक सुख-सुविधाओं की चकाचौंध में आज का मानव का रहन-सहन, खान-पान यहाँ तक कि पूरी दिनचर्या ही बदल गयी है। बदलती हुई जीवन शैली से उसका स्वास्थ्य डगमगा गया है। अल्पायु में ही संतान गंभीर बीमारियों से ग्रस्त हो रही है। **खुला मैदान, स्वास्थ्यवर्द्धक खेल आदि भूल कर मोबाइल, कम्प्यूटर पर खेलना पसंद करते हैं। हित-मित-ऋत के अनुसार भोजन छोड़ कर पिज्जा, पाश्ता, फास्टफूड, जंकफूड होटल के बने बनाये भोजन की ओर आकर्षण बढ़ रहा है। परिणामस्वरूप चारित्र का पतन हो रहा है। कहा भी है जैसा खाओ अन्न, वैसा होवे मन। जैसा पीओ पानी, वैसी होवे वाणी।** यदि मानव अपनी इन्द्रियों और मन पर नियंत्रण रखता है तो स्वास्थ्य अच्छा रहता है, अनेक प्रकार की बुराइयां जैसे बलात्कार, अपहरण, अनेक प्रकार की बीमारियों जैसे एड्स, कैंसर आदि से छुटकारा मिलता है और चारित्र उन्नत होता है।

अपव्यय से बचने की प्रेरणा

आज मानव में संग्रह की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वह आवश्यकता से अधिक संग्रह में ही व्यस्त रहता है। घर में चार सदस्यों के लिए चार गाड़ी की जरूरत है पर वह आठ गाड़ियाँ रखता है। यह अपव्यय है, यह अनर्थदण्ड है, निष्प्रयोजन कार्य करते हैं। यदि हमें चार गाड़ी की आवश्यकता है तो तीन रखे। इससे अपव्यय नहीं होगा। सरकार को विदेशों से कर्ज नहीं लेना पड़ेगा।देश कर्ज में नहीं डूबेगा। इसी प्रकार हम भोजन, जल, ऊर्जा आदि का अपव्यय न करें तो देशवासियों की आवश्यकता की पूर्ति होती रहेगी। भोजन, जल आदि की कमी न होगी, गरीबी दूर होगी। कुछ लोग गरीबी के कारण दुर्गुणों के शिकार हो जाते हैं जिससे चारित्र का पतन होता है। अतः हम अपव्यय न कर धन, समय की बचत कर अपना चरित्र उन्नत बना सकते हैं।

लक्ष्य निर्धारित कर सही दिशा में चलने की प्रेरणा

आचार्यश्री प्रवचन में संदेश देते हैं कि मानव को सर्वप्रथम अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए अनन्तर सही दिशा में चलना चाहिए। वे कहते हैं कि पश्चिम नहीं पूर्व की ओर देखो। सही दिशा में भी होशपूर्वक चलो। यदि कार अच्छी है और चालक मदहोश है तो गन्तव्य तक नहीं पहुँचेंगे। इसी प्रकार मोक्षमार्ग का पथिक होश में नहीं तो लक्ष्य की

सिद्धि नहीं होगी। अतः चरित्र निर्माण हेतु अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर सही दिशा में चलना आवश्यक है।

त्याग-दान की प्रेरणा

आरम्भ-परिग्रह के पूर्णरुपेण त्यागी आचार्यश्री समय-समय पर श्रावकों, जनसमुदाय को दान देने की प्रेरणा देते हैं। दान और त्याग दो शब्द आते हैं। दोनों में थोड़ा सा अन्तर है। राग-द्वेष से अपने को छुड़ाने का नाम त्याग है। वस्तुओं के प्रति राग-द्वेष के अभाव को त्याग कहा गया है। दान में भी रागभाव हटाया जाता है किन्तु जिस वस्तु का दान किया जाता है उसके साथ किसी दूसरे के लिए देने का भाव भी रहता है। दान पर के निमित्त को ले कर किया जाता है किन्तु त्याग में पर की कोई अपेक्षा नहीं रहती। किसी को देना नहीं है मात्र छोड़ देना है त्याग स्व को निमित्त बना कर किया जाता है। दान रूप त्याग के द्वारा जो सुख प्राप्त होता है वह अकेले स्व का नहीं, पर का भी होता है। स्व के ऊपर अनुग्रह और पर के ऊपर भी अनुग्रह जिसमें हो वही दान रूप त्याग धर्म है। दान और पूजा श्रावकों का प्रमुख कर्त्तव्य हैं। अतिथि सत्कार करना भी श्रावकों का प्रमुख कर्त्तव्य हैं। ये शुभ क्रियायें लोभ को शिथिल करने के लिए हैं। चार प्रकार के दान-आहार दान, औषधि दान, ज्ञान दान और आवास दान है। दान और त्याग शक्ति अनुसार, पात्र के अनुसार करना चाहिए। दान त्याग से लोभ कषाय मन्द होती है, परिणामों में विशुद्धि बढ़ती है और चारित्र निर्मल होता है।

भारतीय संस्कृति के संरक्षण की प्रेरणा

पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित और भौतिक सुख-सुविधाओं की चकाचौंध से आकर्षित मानव का आचार-विचार, खान-पान, रहन-सहन सभी बदल रहा है। वर्तमान के प्रदूषित वातावरण और बदलते परिवेश से चिंतित आचार्यश्री सुसंस्कारों से संस्कारित होने, बनने के लिए प्रेरित करते हैं। वेशभूषा धारण करने का प्रयोजन बतलाते हैं। वे कहते हैं नारी की शोभा साड़ी है। हम अपनी संस्कृति के अनुरूप शाकाहारी भोजन कर स्वस्थ रहे। धन, जल, बिजली आदि का सीमित प्रयोग करे। अनावश्यक व्यय से बचे। विश्व को गौरवान्वित करने वाली भारतीय संस्कृति का संरक्षण करें। सच्चारित्र ही संस्कृति का संरक्षण करने में समर्थ है।

हम आचार्यश्री संघ के दर्शनार्थ जाते हैं, तो संघ के कक्षों के बाहर लिखा रहता है चरण नहीं आचरण छुओ। इससे स्पष्ट है सदाचरण से ही चारित्र का निर्माण होता है। अतः आचार्यश्री दुर्गुणों से बचने-दूर रहने, सद्गुणों को ग्रहण कर जीवन में उतारने, सत्संगति करने की प्रेरणा देते हैं। जो चारित्र निर्माण में सहायक है। सच्चारित्र से प्राप्त आत्मबल के कारण ही मानव को विपरीत परिस्थितियों में भी न्याय नीति पर अडिग रहने, मर्यादापूर्वक संयमित जीवन जीने की शक्ति मिलती है। विश्वशान्ति की स्थापना में सच्चारित्र की महत्वपूर्ण भूमिका है। अतःहमारा कर्त्तव्य है कि आचार्यश्री द्वारा प्रवचन में प्रदत्त चारित्र निर्माण के सूत्रों पर अमल कर अपने और दूसरों के जीवन निर्माण में निमित्त बनें एवं निज की, समाज की तथा देश की प्रगति में सहायक बनें। ■

संयम स्वास्थ्य योग

स्वाद की हद सेहत तक

पेट में गया पदार्थ जब किसी कारणवश ठीक से नहीं पचता है तो दूषित तत्वों को उत्पन्न करने लगता है जिससे शारीरिक एवं मानसिक अस्वस्थता उत्पन्न होती हैं। शुरूआत में इस अवस्था को हम टालते हैं या कृत्रिम उपायों द्वारा रोग को दूर करना चाहते हैं। इस अवस्था में सर्वप्रथम यह देखना चाहिए कि हमने कब और क्या खाया है एवं उत्पन्न कष्ट उसी का परिणाम तो नहीं है। यदि हमने कारणों का पता लगा लिया तो इलाज हम स्वतः ही कर सकेंगे। परन्तु आजकल हम इन्द्रियों को नियंत्रित करने के बजाय कृत्रिम साधनों से विभिन्न दवाओं से भोजन को पचाना चाहते हैं, जिससे कि स्वास्थ्य लाभ कम तथा बीमारियां अधिक होती जाती हैं। अतः ऐसे समय जबकि शरीर ही स्वस्थ नहीं होगा तो उसका मन पर क्या प्रभाव होगा यह तो आप जानते ही हैं।

आज भौतिकता के परिवेश में आदृत होने से हमारा सदाचार हमसे कोसों दूर जा रहा है एवं हमारे खान-पान का स्तर भी गिर गया है।स्वाद ने हमारे स्वास्थ्य को भी तो चौपट कर दिया है, हमारे मन एवं मस्तिष्क को भी निष्क्रिय कर दिया है। नित नए आते उत्पादों से हमारी रसोईघर में सक्रियता कम होती जा रही है। गृहिणियां सोचने लगी है कि इतना काम करने से तो अच्छा है कि बाजार से खरीद लें। परन्तु उस वस्तु की मिलावट की तरफ यदि हमारा ध्यान जाए तो हम उसें खाना तो दूर उसे छूना भी पसंद न करें।

शरीर का निरोग रहना आहार पर ही निर्भर हैं।

पृथ्वी पर प्रत्येक प्राणी की शारीरिक क्रियाओं के संचालन के लिए आहार की आवश्यकता होती है। अतः आहार जीवन की सर्वप्रथम आवश्यकता बन गया है। आहार शरीर को तो हष्ठ पुष्ठ करता ही है साथ ही हमारे मन एवं मस्तिष्क को भी प्रभावित करता है। भक्ष-अभक्ष का ध्यान रखते हुए भोजन हमेशा भोजन शाला (रसोईघर) में बैठकर ही करें। यह अतिआवश्यक है कि हम जो भी खाये उसके गुण दोषों को अच्छी तरह देखकर ही खाये।

यह भी आवश्यक है कि भोजन करते समय मन प्रसन्न होना चाहिए एवं दोष निकालते हुए क्रोधपूर्वक भोजन न करें। सत्कार से किया हुआ अन्न बल और शक्ति देता है एवं तिरस्कार की भावना से खाया अन्न बल एवं शक्ति का नाश कर देता है ■

सल्लेखना -संथारा

• नेमीचंद जैन, इन्दौर •

धर्म निरपेक्ष है देश हमारा, इसमें हम खुशियों को बांटेंगे।
धर्म के जो भी अड़चन डाले, उसको हम सब डाटेंगे।
गीता पड़े कुरान यहाँ पर कोई पड़े अजान।
अपने ढंग से धर्म मनावे तू क्यों है हैरान ।।

अपनी-अपनी प्रथा अलग है, सबकी अलग-अलग पहचान।
जहाँ सब धर्मों का होता है आदर, वो है हिन्दूस्तान।
अलग धर्म का अलग पंथ है, अलग-अलग है संत।
सत्य अहिंसा के बल पर चलकर भारत हुआ स्वतंत्र।
जिसके संस्कारों पर चलने को गांधी ने स्वीकारा।
जिओ और जीने दो सबको ऐसा जैन धर्म सबसे न्यारा।
घर परिवार छोड़कर जिनने निज शरीर से मोह तजा।
धरती बिछौना-अम्बर औढ़े नगन दिगम्बर भैष धरा ।।

जिस दिन से दीक्षा लेते हैं बस शुरु हुआ संथारा।
बेला तेला मासौपवासी-फिर लेते नीरस आहारा ।।
त्याग तपस्या ही जीवन है, उन्हीं को कहते योगी।
अंतिम क्षण प्रभु ध्यान रहे संलेखना से ही मृत्यु होगी।
सरल स्वभावी निर्मलता से जो स्व शरीर को त्यागे।
बड़े-बड़े ज्ञान ध्यानी भी उनके पग को लागे।
नाम कमाने हेतु किसी ने संथारा गलत बताया।
क्या है धर्म मर्म न जाने सबने अज्ञानी उसे बताया।

तूने गुरुओं की निन्दा की है, कर्म नरक का बांधा।
क्षमा अवश्य करोगे गुरुजी, उनकी शरण में आजा ।।
लिखने में कोई भूल हुई हो या शब्द नहीं आया हो पसंद।
आप सभी से क्षमा मांगता है आपका नेमीचंद ।।

■

ओम

• पं. सचिन जैन,साहित्याचार्य •

जैसे नमक का स्वभाव खारापना है, इक्षु का स्वभाव मीठा है, नीम का स्वभाव कड़वा है, अग्नि का स्वभाव गर्म है, जल का स्वभाव शीतल है, कोयले का स्वभाव काला है, खड़िया का स्वभाव सफेद है वैसे ही आत्मा का स्वभाव जानना व देखना है अर्थात् ज्ञाता दृष्टापना है जीव अपने स्वभाव में रहकरा राग-द्वेष आदि विभाव को छोड़े व मैत्री, प्रमोद, कारुण्य, माध्यस्थ भाव को ग्रहण करे तो शीघ्र ही संसार परिभ्रमण से मुक्ति पाकर मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त कर सकता है। कुछ बालक पिकनिक पर गये, वह सभी अपने साथ खाने का टिफिन ले गये, भूख लगने पर सभी अपने-अपने टिफिन खोलकर खाने लगे, उन सब में एक बालक ललचाई दृष्टि से सबको खाते हुये देख रहा है और भोजन के लिये तरस रहा है लेकिन अपना टिफिन खोलकर भोजन नहीं करता। उनकी मनोदशा देखकर अन्य बालक कहते है भाई तुम भी अपना टिफिन खोलो और भोजन करो, किन्तु वह ऐसा नहीं करता है और दुखी होता हैं; ठीक इसी प्रकार से सिद्ध प्रभु अपना ज्ञान रूपी टिफिन खोलकर सुख रूपी भोजन कर तृप्त हो रहे हैं हम उन्हें ललचाई दृष्टि से देख रहे हैं कि हे प्रभु हमें भी आप सुखी कर दो तो सिद्ध भगवान उपदेश देते हैं कि तुम हमें क्यों ललचाई दृष्टि से देख रहे हो, देखने से तृप्ति नहीं होने वाली, तुम भी हमारे समान पुरुषार्थ करो, मैत्री, प्रमोद, कारुण्य, माध्यस्थ भाव रखो, रागद्वेष से परे रहो और आत्म ध्यान कर अपने केवलज्ञान रूपी टिफिन को खोलो और अनंत सुख रूपी भोजन का पान करो।

वह ज्ञान कोरा है जो आचरण की बैसाखी पर सवार न हो।

अमरसूक्ति संग्रह का श्रेष्ठ ग्रन्थ **कुरल काव्य** तमिल भाषियों में पंचम वेद के रूप में मान्य हैं प्रस्तुत ग्रन्थ रचियता परम पूज्य आचार्य श्री 108 तिरुवल्लुवर स्वामीजी है । नीति वाक्यामृत एक मात्र राजनीति का ग्रन्थ भी सोमदेव सूरि विरचित 'कुरल काव्य' से प्रभावित होकर सृजित किया है कुरल काव्य ग्रन्थ में राजनीति, धर्म दर्शन, मानवता दर्शन, समाज-विज्ञान, मनोविज्ञान, अर्थचिंतन, राष्ट्रभक्ति, नीति दर्शन जैसे सभी विषय इस ग्रन्थ में मिलते हैं। मानव के अंतरंग शत्रु काम,क्रोध, लोभ, मद, हर्ष, शोक के दुष्प्रभावों से सचेत किया गया है। ईर्ष्या, कपट, चोरो, चुगली, व्यर्थ भाषण, धूर्तता, व्यसनों के दुष्परिणाम व मैत्री, प्रमोद, करुणा आदि बताये गये हैं । ग्रन्थादि राज में मैत्री, प्रमोद, कारुण्य व माध्यस्थ भावों का बहुत सुन्दर वर्णन किया है।

जो मानव जीरन को सार्थक बनाने हेतु यह अन्यन्य आवश्यक है।

मैत्री- ग्रन्थ में वर्णित, मित्रता, मित्रता के लिये योग्यता की पर घनिष्ठता, मित्रता, विघातक मैत्री, कपट मैत्री आदि के माध्यम से मैत्री (मित्रता) का वर्णन किया गया है, बताया गया है कि जगत में कौन सी वस्तु हैं जिसको प्राप्त करना इतना कठिन है जितना की मित्रता को ?

और शत्रुओं से रक्षा करने के लिये मित्रता के समान अन्य कौन-सा कवच है ?

योग्य पुरुष की मित्रता बढ़ती हुई चन्द्रकला के समान हैं पर मूर्ख की मित्रता घटते हुए चन्द्रमा के सदृश हैं मित्रता का उद्देश्य हंसी विनोद करना नहीं है बल्कि जब कोई मित्र सन्मार्ग से च्युत होकर कुमार्ग में जाने लगे तो उसे रोकना व उसकी भर्त्सना करना ही मित्रता का लक्ष्य हैं मित्रों का बार-बार मिलना, साथ रहना आवश्यक नहीं हैं यह तो हृदयों की एकता ही है जो मित्रता के सम्बन्ध को स्थिर और सुदृढ़ बनाती हैं, हंसी मसखरी करने वाली मस्ती का नाम मित्रता नहीं हैं मित्रता तो वास्तव में वह प्रेम है जो हृदय में आह्लादित करता है, जो तुम्हें बुराई से बचाता है, सुमार्ग पर चलाता है और जो संकट के समय तुम्हारा साथ देता है बस वही मित्र हैं, उस आदमी का हाथ देखो, जिसके कपड़े हवा में उड़ गये हैं कितनी तेजी के साथ फिर से अपने अंग को ढंकने के लिये फुर्ती करता है ? यही सच्चे मित्र का आदर्श हैं जो विपत्ति में पड़े हुये मित्र की सहायता के लिये दौड़कर आता है मित्रता का दरबार वहीं पर लगता है जहाँ दो हृदयों के बीच में अनन्य प्रेम और पूर्ण एकता है तथा दोनों मिलकर हर प्रकार से एक दूसरे को उच्च और उन्नत बनाने की चेष्टा करे। जिसमें मित्रता का हिसाब लगाया जाता है उसमें एक प्रकार का कंगलापन होता है वे चाहें कितने ही गर्वपूर्वक कहे कि ''मैं उसको इतना प्यार करता हूँ और वह मुझे इतना चाहता है।''

मित्रता के लिये योग्यता की परख - इससे बढ़कर अप्रिय बात और कोई नहीं है कि बिना परीक्षा किये किसी के साथ मित्रता कर ली जाये क्योंकि एक बार मित्रता हो जाने पर सहृदय पुरुष फिर उसे छोड़ नहीं सकता। जो पुरुष पहले आदमियों की जाँच किये बिना ही उनको मित्र बना लेते हैं वह अपने सिर पर ऐसी आपत्तियों को बुलाता है जो केवल उसकी मृत्यु के साथ ही समाप्तहोगी, जिस पुरुष का जन्म उच्चकुल में हुआ हैं और जो अपयश से डरता है उसके साथ आवश्यकता पड़े तो मूल्य देकर भी मित्रता करनी चाहिये, जो लोग संकट के समय धोखा दे सकते हैं उनकी मित्रता की स्मृति मृत्यु के समय भी हृदय में दाह पैदा करती है ऐसे लोगों को खोजो और उनके साथ मित्रता करो जो सन्मार्ग को जानते हैं और तुम्हारे बहक जाने पर तुम्हें सन्मार्ग पर लगा सके।

घनिष्ठ मित्रता- सच्ची मित्रता वही है जिसमें मित्र आपस में स्वतंत्र रहे और एक दूसरे पर दबाव न डाले, वह मित्रता किस काम की जिसमें मित्रता के नाम पर किये गये गये किसी काम की

स्वतंत्रता सहमति न हो, जब दो व्यक्तियों में प्रगाढ़ मैत्री है और उनमें से एक दूसरे मित्र की अनुमति के बिना ही काम कर लेता है तो दूसरा मित्र आपस में प्रेम का ध्यान करके उससे प्रसन्न ही होगा। उन व्यक्तियों के लिये जो अपने अभिन्न मित्र के विरुद्ध किसी प्रकार का आरोप सुनने से इंकार कर देते हैं वह दिवस बड़ा आनन्दप्रद होता है जबकि उसका मित्र आरोप को हानि पहुँचाता है।

विघातक मैत्री- उन व्यक्तियों की मैत्री विघातक ही होती है जो दिखाने को तो यह दिखाते हैं कि वे न जाने कितना प्रेम करते हैं लेनिक उनके हृदय में प्रेम नहीं होता, जो लोग यह सोचते है कि ''हमें उस मित्र से कितना मिलेगा'' वे उस श्रेणी के लोग हैं जिसमें चोरों और बाजारू औरतों की गिनती होती है कुछ आदमी उस अक्खड घोड़े की तरह होते हैं जो युद्धक्षेत्र में अपने सवार को गिराकर भाग जाता है, ऐसे लोगों से मैत्री रखने की अपेक्षा तो अकेले रहना ही हजार गुना अच्छा है।

कपट मैत्री - जो शत्रु मित्रता दिखाता है वह केवल मायाचार है जिसके आश्रय से मौका मिलने पर वह तुम्हें लोहे के समान पीट देगा, जो लोग ऊपर से तो स्नेह दिखाते हैं परन्तु मन में बैर रखते हैं उनकी मित्रता कामिनी के हृदय के समान थोड़ी सी अवधि में बदल जायेगी, यदि शत्रु तुमसे मित्रता का ढोंग करता है तो तुम भी उससे खुला बैर नहीं कर सकते हो तो तुम भी उससे मित्रता का ढोंग रचो पर मन से उसे सदा दूर रखो।

तत्वार्थ सूत्र जी में आचार्य उमास्वामीजी ने भी उक्त विषय को व्रतधारी सम्यग्दृष्टि जीव की भावनायें बतायी हैं

संसार के समस्त जीवों पर मैत्रीभाव होना चाहिये
अधिक गुण वाले जीवों पर प्रमोद भाव होना चाहिये
करुणा के पात्र जीवों पर कारुण्यभाव होना चाहिये
अविनयी जीवों पर माध्यस्थभाव होना चाहिये

मैत्री- दूसरों के दुःख न हो ऐसी भावना रखना मैत्री है अथवा अनन्तकाल से मेरी आत्मा इस संसार में भ्रमण कर रही है इस संसार में सभी प्राणियों नें मेरे ऊपर अनेक बार महान उपकार किये है ऐसा मन में विचार करना मैत्री है अथवा त्रस और स्थावर किसी भी जीव की मेरे द्वारा विराधना न हो ऐसी महानता को प्राप्त हुई ऐसी समीचीन बुद्धि मैत्री भावना कही जाती है सब जीव कष्ट और आपदा से दूर रहे, सदा बैर, पाप, अपमान को छोड़कर सुख को प्राप्त होवे यही मैत्री भावना है।

प्रमोद - प्रमोद का तात्पर्य हर्ष एवं प्रेम से है मुनिजनों में व्रतधारी जीवों, सम्यग्दृष्टि जीवों में अपने से अधिक गुणों को धारण करने वालों में नम्रता, वैराग्य, निर्भयता, अभिमानरहितता, निर्दोषता और निर्लोभता ये गुण पाये जाते हैं इन गुणों का विचार करके उनके गुणों में हर्ष मानना प्रमोद भावना है, इसे मुदिता भी कहते हैं

बड़ों के प्रति दुर्व्यव्हारन करना प्रमोद है- जो अपनी भलाई चाहता है उसे सबसे अधिक सावधानी इस बात की रखनी चाहिये कि वह महान् पुरुषों का अपमान करने से अपने आपको बचाये, यदि कोई महात्माओं का निरादर करेगा तो उनकी शक्ति से उनके सिर पर अनन्त आपत्तियां टूटेगी, और तो और स्वयं देवेन्द्र भी

अपने स्थान से भ्रष्ट हो जाये और अपना प्रभुत्व गंवा बैठेंगे् यदि पवित्र प्रतिज्ञा वाले सन्त लोग क्रोधभरी दृष्टि से उनकी ओर देख ले, अतः अपने से गुणों, शक्ति में, तप में, ज्ञान में, आयु में, यश में, शासन में बड़ों के प्रति हर्ष रखना ही प्रमोद भावना है जो इह तथा परभव में जीव की हितकारी होती है।

करुणा - दीनों पर दया भाव अर्थात् अनुग्रह या उपकार का भाव रखना कारुण्य है अथवा सभी प्राणी कर्म के वश होकर दुख भोग रहे हैं ऐसा विचार करके उनके दुख से दुखित होना करुणा है अथवा सर्व प्राणियों के ऊपर उनका दुख देखकर द्रविभूत हो। दया का करुणा का लक्षण है करुण जीव का स्वभाव है करुणा धर्म का मूल है दशलक्षण धर्म जीव दया का प्रधान है और दया सम्यक्त्व का प्रतीक है ग्रन्थ में वर्णित दया, परोपकार, दान, करुणा के प्रतीक है जिन निम्न तत्व चर्चा अन्तन्य रोचक है - दया से लबालब भरा हुआ हृदय ही संसार में सबसे बड़ी सम्पत्ति है क्योंकि भौतिक विभूति तो नीच मनुष्यों के पास भी देखी जाती है ठीक पद्धति से सोच समझ के हृदय में दया धारण करो और यदि तुम सभी धर्मों व धर्मात्माओं से इसके बारे में पूछोगे तो तुम्हें मालूम होगा कि दया ही एक मात्र मुक्ति का साधन है, जिन लोगों के हृदय दया से ओतप्रोत है वे अंधकार पूर्ण नरक में प्रवेश नहीं करेंगे जो मनुष्य सब जीवों पर कृपा तथा दया दिखाता है उसे उन परिणामों को नहीं भोगना पड़ेगा जिन्हें देखकर आत्मा कांप उठती हो, जिस प्रकार यह लोक धनहीन के लिये नहीं हैं उसी प्रकार परलोक निर्दयी मनुष्य के लिये नहीं है। ऐहिक वैभव से शून्य गरीब लोग तो किसी दिन समृद्धशाली हो सकते हैं परन्तु जो लोग दया और ममता से रहित है वे कंगाल हैं और उनके दुर्दिन कभी नहीं फिरते हैं। विकास ग्रस्त मनुष्य के लिये सत्य को पा लेना जितना कठिन है कठोर हृदय वाले पुरुष। के लिये नीति के काम करना उतना ही कठिन है, सहृदय व्यक्ति का वैभव गांव के बीचों बीच लदे हुये फलों वाले वृक्ष के समान है अतः जीव को परोपकार करुणा, दान, दया से युक्त होना चाहिये।

मध्यस्थ भावना - रागद्वेष पूर्वक पक्षपात नहीं करना माध्यस्थ भाव है जो हमारी अविनय करती है जो हमसे ईर्ष्या के भाव रखते हुये हमारा अहित चिन्तक होता है। ऐसे पापी दुरात्मा जीवों द्वारा अहितकारी कार्य करने पर भी उसके प्रति मन में कलुषता को नहीं लाना ही माध्यस्थ भाव है। अथवा जिनमें जीवादि पदार्थ तत्वों आदि को सुनने ग्रहण करने का गुण नहीं है उनके प्रति माध्यस्थ भावना रखना चाहिये।

उपसंहार -

सत्वेषु मैत्री गुणोषु प्रमोदं
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वं।
माध्यस्थभाषम् विपरीत वृत्तौ
सदा ममास्ताम् विद्धान देवम् ।।

सम्यक्त्व से सहित जीव अन्य जीवों के प्रति मैत्री भाव व गुणवानों के प्रति हर्ष (प्रमोद) व दयापात्र जीवों करुणा भाव व अहितकारी व अविवेकी जीव के प्रति माध्यस्थ भाव को धारण कर मोक्ष मार्ग में लगे और मोक्षलक्ष्मी को वरण करे इसी सद्भावना के साथ... ■

वर्णी संस्था और वर्णी परम्परा

• डॉ. ज्योति जैन, खतौली (उ.प्र.) •

श्रमण संस्कृति के कीर्ति कलश आचार्य शिरोमणि विद्यासागजी महाराज ने आगम ग्रन्थों के पठन-पाठन की विलुप्त होती परम्परा को नव जीवन प्रदान किया। ज्ञानाराधना और जिनवाणी के प्रति उनकी पिपासा अद्भुत है। जैन आगम ग्रन्थ षट्खण्डागम के गूढ़तम रहस्यों को समझने के लिये सागर नगर में ग्रन्थ के वाचना की अनुमति प्रदान करते ही विद्वत् समाज क्या, जन-जन में हर्ष की लहर दौड़ गयी। डॉ. पंडित पन्नालालजी ने विचार विमर्श कर पंडित कैलाशचंदजी, पंडित फूलचंदजी, पंडित जगन्मोहनलाल जी, पंडित हीरालालजी, पंडित बंशीधरजी, पंडित दरबारीलालजी कोठिया, पंडित समुरेचंदजी दिवाकर जैसे लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानों को आमंत्रित किया। सभी विद्वानों ने बड़े मनोयोग से और वाचना से उस ग्रन्थ की श्रुत परम्परा को पुनः जीवित किया। जिसके दर्शन मात्र से ही श्रमण/श्रावक अपने को सौभाग्यशाली समझते थे। सभी विद्वान चर्चा परिचर्चा करते और आचार्यश्री कठिन से कठिन विषय को सरल बना देते थे। सच है कि आचार्यश्री की करूणा और वात्सल्य भावना का ही परिणाम है कि उनकी छत्र छाया में रहकर अशक्त और अल्पज्ञानी शिष्य भी अपना कल्याण कर सकता है।

इस महान ग्रन्थ के संबंध में आचार्यश्री ने कहा कि षट्खण्डागम ज्ञान का अक्षयकोष है। जैन दर्शन के सन्दर्भ में उत्पन्न शंकाओं और विरोधों को दूर करने के लिये औषधि है, अमृत है। संभवतः सन् 1980 या 1982 की बात है जब आचार्यश्री ने सभी विद्वानों के समक्ष कहा- वर्णी जी की परम्परा और वर्णी जी की संस्थाओं की परम्परा। आप लोग दोनों को एक मान रहे हैं और मैं दो मान रहा हूँ। वर्णी जी की संस्था चले यह आप लोग चाहेंगे पर मैं यह भी चाहूँगा की वर्णी परम्परा भी चले। जब मैं ब्रह्मचारी था, नाम माला पढ़ता उस समय मुनियों के नाम में वर्णी शब्द आया, वर्णी का अर्थ साधु होता है। अनगार होता है वर्णी जी पिच्छीधारक क्षुल्लक जी थे। मुनि बनने की उनकी तीव्र भावना थी। उनका त्याग, उनकी तपस्या, उनका समर्पण समाज के प्रति समर्पण नहीं किन्तु वीतराग मार्ग के लिये समर्पण था जैसा कि पंडित जी (पंडित कैलाशचंद शास्त्री बनारस) ने कहा कि उन्हें सारा का सारा समयसार कंठस्थ था लेकिन मैं समझता हूँ कंठस्थ क्या हृदयस्थ था क्योंकि उन्होंने सोच लिया था कि जीवन में यदि कोई मौलिक पदार्थ है तो वह रत्नत्रय है और रत्नत्रय मुझे धारण करना है।....

पंडित जी (डॉ. पन्नालालजी) ने अभी-अभी कहा था कि महाराज कभी अपील नहीं करते लेकिन अप्रत्यक्षरूप से कर दी। हमने किसी से कुछ नहीं कहा। लेकिन त्याग के बारे में जो अवश्य अपील करेंगे यह हमारा कार्य है। आप त्याग नहीं करेंगे, तो वीतरागता की प्राप्ति कैसे होगी ? किसी संस्था को चलाने की चिंता नहीं है किन्तु आत्मा जो संस्थान है उसकी

खबर आपको होनी चाहिये। बस हमें कोई चिन्ता नहीं.....

जिस व्यक्ति ने गुरुकुल की स्थापना की थी उस व्यक्ति का मूल्यांकन हम शब्दों से नहीं करते। इन गुरुकुलों में वह विद्या, वह कला, वह ज्ञान, वह बोध पाया जा सकता है जिसके द्वारा पर की शक्ति(शरण) छूट जाती है। दुनिया भर के स्कूल कॉलेजों में जीवन निर्वाह के लिये शिक्षा दी जाती है जीवन निर्माण के लिए नहीं। देश-विदेश यहां तक कि भारत में ऐसी कोई संस्था या स्कूल-कॉलेज नहीं है जिसमें आत्मा की क्षणभर चर्चा होती हो। ऐसी कोई शक्ति नहीं है जिससे वे किसी को उसके स्थायी अस्तित्व का परिचय करा सकें।

वर्णी संस्था और वर्णी परम्परा ये दो चीज है मुझे वर्णी संस्था की जितना चिंता नहीं हैं उतनी चिंता वर्णी परम्परा की है। त्याग तपस्या के बिना न आज तक समाज का उद्धार हुआ है, न आगे होगा..।

मैं यह कहना चाह रहा हूँ कि यदि आप वर्णी जी की परम्परा उनका नाम कायम रखना चाहते हैं तो दूसरे वर्णी की आवश्यकता है कोई इस सभा में (विद्वत् मंडली की ओर संकेत करते हुए) दमदार व्यक्ति है जो वर्णी जैसा बनने को तैयार हो....।

आप लोगों का जीवन अल्प बचा है, कम से कम इस अल्प समय में तो वर्णी जैसे जीवन की एक झलक आना चाहिये।(सागर वाचना के अवसर पर दिये प्रवचन के अंश) ■

संकट देवता

मैं एक सपना देख रहा था
मैंने देखा कि
मैं संकटों से जूझ रहा हूँ
एक संकट से मुक्ति मिलती
दूसरा काल की तरह विकराल
मुझसे जूझने को खड़ा होता
मैं बारी-बारी से जूझता गया
बारी बारी से उन्हें परास्त करता गया
परन्तु संकट देवता के तीर
कभी समाप्त न हुये
पर मेरे हौंसले भी परास्त न हुये
संकट के तीर झेलना अब मेरी आदत हो गई
तीर आते, चुभते, पर असर न करते
क्योंकि
मेरी दृष्टि अब आध्यात्मिक हो गई थी
सोच रहा था
जो कर्म किये हैं, भोगना तो पड़ेगा
जिसको निमंत्रण दिया है
स्वागत तो करना ही पड़ेगा
अब मैं मेहमानों का स्वागत
हँसी खुशी करता हूँ
देख रहा था यह सब मैं सपना
पर यह सपना मैंने अपना लिया था

• विनीतकुमार जैन, ललितपुर •

■

आचार्य विद्यासागर जी महाराज के प्रवचनों पर आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी का प्रभाव

• प्रो. विजयकुमार जैन, लखनऊ (उ.प्र.) •

आचार्य विद्यासागरजी महाराज आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी से पूर्णतः प्रभावित हैं। वे उनको स्मरण करते हैं -

कुन्दकुन्द को नित नमूं, हृदय कमल खिल जाय।
परम सुगन्धित महक में, जीवन मम घुल जाय॥''

आचार्य विद्यासागर ग्रन्थावली खण्ड-4, प्रवचनमाली पृ. 205

वे कहते हैं कि आचार्य कुन्दकुन्द हमारे लिए पिता तुल्य हैं और आचार्य समन्तभद्र करुणामयी माँ के समान है।

आचार्यश्री पर सभी कुन्दकुन्द साहित्य का प्रभाव परिलक्षित होता है उसमें भी समयसार का सर्वाधिक आचार्यश्री के शब्दों में -

देवशास्त्रगुरु के माध्यम से जिस व्यक्ति ने अपने आपके जीवन को वीतरागता की ओर मोड़ लिया, वीतराग केन्द्र की ओर मोड़ लिया वह अवश्य ही एक दिन आत्मा में रम जायेगा। किन्तु यदि देवशास्त्रगुरु के माध्यम से जो जीवन में बाहरी उपलब्धि की बांछा रखता हो तो उसे वही चीज मिल जायेगी आत्मोपलब्धि नहीं होगी। मुझे, एक बार एक व्यक्ति ने आकर कहा कि महाराज-हमने अपने जीवन में एक सौ बीस बार समयसार का अवलोकन कर लिया। कंठस्थ हो गया मुझे। अब उनसे क्या कहता, मन में विचार आया कहूँ आपने मात्र कंठस्थ कर लिया हैं और मैंने हृदयस्थ कर लिया है।

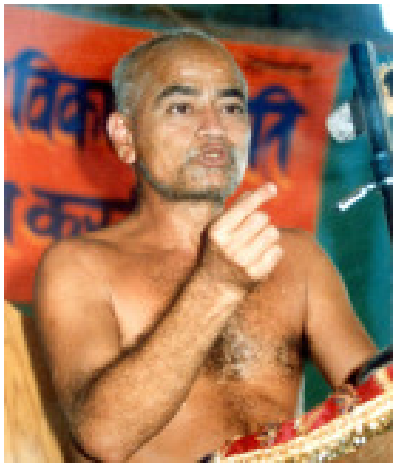

आपने उसे शिरोङ्गम करके अपने मस्तिष्क में स्थान दिया है। आपको आनंद आया या नहीं पर हमारे आनंद का पार नहीं है। बंधुओ! आत्मानुभूति ही समयसार है। मात्र जानना समयसार नहीं है।

समयसार का अर्थ है **समीचीन रूपेण अयति गच्छति व्याप्नोति जानाति परिणमति स्वकीयान् शुद्धगुणपर्यायान् यः सः समयः-** अर्थात् जो समीचीन रूप से अपने शुद्ध गुण पर्यायों की अनुभूति करता है उनको जानता है उनको पहचानता है उनमें व्याप्त रहता है उसी में जीवन बना लेता है वह 'समय' और उस समय का जो 'सार' है वह समयसार।`से समयसार के साथ व्याख्यान का कोई संबंध नहीं वहाँ तो मात्र एक रह जाता है। एक अहं खलु शुद्धात्मा-

एक मैं स्वयं शुद्धात्म ऐसा कुन्दकुन्दाचार्य ने लिखा है। ताश में बादशाह से अधिक महत्व इक्के का। एक अपने आप में महत्वपूर्ण है वह है शुद्धात्मा।

प्रवचनावली पृ. 335 पर आचार्य विद्यासागरजी ने उद्धृत किया है कि -

आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने समयसार का मंगलाचरण करते हुए कहा है

वंदित्तु सव्वसिद्धे धुवमचलमणोवमं गदिं पत्तो।
वोच्छामि समयपाहुडमिणमो सुदकेवली मणिदं॥

हे भव्यजीव ! मैं शाश्वत, अचल और समस्त उपमाओं से रहित ऐसे पंचमगति को प्राप्त सब सिद्धों को नमस्कार करके श्रुत-केवली भगवान के द्वारा कहे गये समयप्राभृत ग्रन्थ को कहूंगा। उपनिषदों में शुद्ध तत्व का वर्णन करते हुए जो बात नहीं लिखी गयी, वह आचार्य कुन्दकुन्द महाराज ने लिख दी कि एक सिद्ध भगवान को नहीं, सारे सिद्ध भगवानों को प्रणाम करके ग्रन्थ प्रारम्भ करता हूँ। सिद्ध एक ही नहीं है, अनन्त हैं। सभी मैं, प्रत्येक जीवात्मा में सिद्धत्व की शक्ति विद्यमान है। आचार्य महाराज ने भीतर बैठी इसी शुद्धात्मा की शक्ति को दिखाने का प्रयास किया है और कहा है कि यदि थोड़ा-थोड़ा भी, धीरे-धीरे भी लोभ का मन कम करके भीतर झांकने का प्रयास करोगे तो जैसे दूध में घृत के दर्शन होते हैं। सुगन्धी का पान करते हैं, रस का अनुभव हो जाता है, ऐसे ही शुद्धात्मा का दर्शन, पान और अनुभव सम्भव है।

समय की व्याख्या आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने की है लेकिन सभी को उसका बोध नहीं हो पा रहा है इसलिये 'समय' की व्याख्या आचार्य विद्यासागरजी करते है कि समीचीन रूप से जो अपनी निधि को प्राप्त कर रहा है, जो अपने आपको संभालने में लगा हुआ है तथा बहिर्मुखी दृष्टि को जिसने त्याग दिया है। ऐसी समय की व्याख्या प्रत्येक द्रव्य पर घटित हो जाती है किन्तु यहाँ पर विशेष रूप से मोक्षमार्ग में उपादेयभूत जो समय है वह स्व समय है। जो अपने गुण, अपनी पर्याय और अपनी सत्ता के साथ एकता धारण करते हुए बहिर्मुखी दृष्टि को हटाकर उत्पाद, व्यय और रहने रूप क्रिया में लीन है उसका नाम समय है। अपने को सही-सही जानना अपने में रहना और अपनी सुरक्षा करते रहना यही स्व-समय है। यही पंडाल में कभी-कभी देखता हूँ कि स्वयंसेवकों की संख्या जनता से भी अधिक हो जाती है और स्वयंसेवकों में ही अव्यवस्था फैल जाती है। स्वयंसेवक का अर्थ अगर आप गहराई से समझे तो स्वयंसेवक कहो कि स्व-समय-कहो एक ही बात है। अपने आपकी जो सेवा करता है वही वास्तविक स्वयंसेवक है।

आचार्य विद्यासागरजी के शब्दों में जिसे एक बार समय की अनुभूति हो गयी क्या वह अपने समय को दुनियादारी में व्यर्थ खर्च करेगा? वह समय का अपव्यय कभी नहीं करेगा। जिस व्यक्ति को आत्मनिधि मिल गयी, क्या वह दस बीस रूपये की चोरी करेगा ? यदि करता है तो समझना, अभी समयसार कंठस्थ नहीं हुआ है जीवन में नहीं आया है। एक वैद्य जी के पास

एक रोगी आया और शीघ्र रोग मुक्त हो जाऊं ऐसी दवा मांगी । वैद्य जी ने परचे पर दवाई लिख दी और कहा कि उसे दूध में मिलाकर पी लेना । रोगी घर गया और दूध में उस पर्चे को घोलकर पी गया। दूसरे दिन जबअ आराम नहीं लगा तो वैद्य जी से शिकायत की कि दवा का असर नहीं हुआ। वैद्य जी ने कहा ऐसा हो नहीं सकता औषधि एक दिन में ही रोग ठीक करने वाली थी, बताओ, कौन सी दुकान से दवा ले गये थे। रोगी ने कहा आपने जो कागज दिया था वहीं तो थी औषधि। हमने उसी को घोलकर पी लिया। ऐसा समय का अपव्यय नहीं करना चाहिए।

बन्ध के सन्दर्भ में आचार्य प्रवचन करते हैं कि आत्मा के अहित विषय कषाय है । हम लोगों के लिए उपदेश है। ये रागद्वेष और विषय-कषाय ही आत्मा को बन्धन में डालने वाले हैं, एक मात्र विरागता ही मुक्ति को प्रदान करने वाली है । समयसार में कुन्दकुन्द भगवान ने कहा भी है-

रत्तो बंधदि कम्मं, मुंचतिद जीवो विराग संपण्णो।
ऐसो जिणोवदेसो, तम्हा कम्मेसु मा रज्ज ।।157।।

राग से जीव बंधता है और वैराग्य से मुक्त होता है यही बंध तत्त्व का कथन संक्षेप में जिनेन्द्र देव ने कहा है इसलिए राग नहीं करना चाहिए। आप यह जो भी कार्यक्रम कर रहे हैं वह अपना कर्त्तव्य करें क्योंकि यही बालक आदिनाथ आगे जाकर तीर्थंकर बनेगा और हमें वीतरागता का सदुपदेश देगा। यह स्वयं भी परिपूर्ण होगा और हमें भी सही रास्ता दिखायेगा । आगम में उल्लेख है कि दो चारण ऋद्धिधारी मुनि महाराज आकाश मार्ग से गमन कर रहे थे, तब नीचे खेलते हुए भावी तीर्थंकर बालक को देखकर उनकी धर्म शंकायें दूर हो गयी थीं उन्हें समाधान मिल गया था पर एक बात और थी कि उन मुनिराजों ने उस भावी तीर्थंकर बालक को नमोस्तु नहीं किया । सोचिये शंकाओं का निवारण हो गया, यह बालक तीर्थंकर होने वाला है । मुनि स्वयं भी मनःपर्ययज्ञान के द्वारा जान रहे होंगे परन्तु वे मुनिराज-राग का समर्थन नहीं करते।

आगे कुन्दकुन्द स्वामी ने कहा कि **अबद्धः अस्पृष्टः आत्मा**, यह आत्मा अबद्ध है अस्पृष्ट है लेकिन संसार दशा में विवक्षा भेद से कथंचित् बद्ध भी है और स्पृष्ट भी है । जो जीव भावना भाता है वह उस भावना के माध्यम से अबद्ध/शुद्ध बन सकता है यदि हम बद्ध ही नहीं हैं ऐसे एकान्त से मान लें तो फिर भावनाओं की क्या आवश्यकता है। इसीलिए आचार्यों ने कहा कि अबद्ध बनने के लिऐ, मैं अबद्ध हूँ- 'ऐसी भावना यदि जीव भायेगा तो वह अबद्ध बनने की ओर अग्रसर होगा, अन्यथा नहीं ।'

इसी प्रकार ग्रन्थराज समयसार में निर्जरा तत्व की कीमत है। ग्रन्थराज समयसार आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने सभी के हाथ में नहीं दिया। वे ही हाथ लगा सकते हैं जो मुनि हैं या मुनि बनना चाहते हैं । वे ही इसकी सही कीमत कर सकते हैं वे ही इसका चिन्तन, मनन और पाचन कर सकते हैं। यह कोई सामान्य ग्रन्थ थोड़े ही है।

जीवन समर्पित किया जाता है । उस समय यह निर्जरा तत्त्व प्राप्त होता है। विषय भोगों को ठुकरा दिया जाता है तब यह हीरा गले में शोभा पाता है ऐसे थोड़े ही भइया, बड़ी कीमती चीज है, इस कीमती चीज को आप किसी के हाथ में यू ही दे दो तो उसका मूल्यांकन नहीं कर पायेगा । जो भूखा है, प्यासा है, वह कहेगा यह कोई चमकीली चीज है इसको ले लो और मुझे मुट्ठी भर चना दे दो और आज यही हो रहा है। आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी कहते हैं कि तुम्हारी दृष्टि में यदि अभी भोग आ रहे हैं तो तुमने पहचाना नहीं है निर्जरा तत्व को । एकमात्र अपने आत्मा में रम जा तू वही निर्जरा तत्त्व है। तेरी ज्ञानधारा यदि ज्ञेय तत्त्व में अटकती है तो निर्जरा तत्त्व टूट जाएगा, वह हार बिखर जायेगा ।इस निर्जरा तत्त्व के उपरान्त और कोई पुरुषार्थ शेष नहीं रह जाता है। मोक्ष तो मंजिल है, वह मार्ग नहीं है। मार्ग यदि कोई है तो वह संवर और निर्जरा है । मार्ग में यदि स्खलन होता है तो मोक्ष रूपी मंजिल नहीं मिलेगी । हमें मोह से बचकर मोक्ष के प्रति प्रयत्नशील होना चाहिये । निर्जरा तत्त्व को अपनाना चाहिये।

आचार्यश्री कहते हैं कि कोई क्रिया करें तो वह सावधानीपूर्वक करें । आचार्य कुन्दकुन्द देव ने समयसार में कहा है कि **'सद्दो णाणं ण हवदि जम्हा सद्दो ण याणदे किंचि , तम्हा अण्णं णाणं अण्णं सद्दं जिणा विंति।'** अर्थात् शब्द ज्ञान नहीं हैं क्योंकि शब्द कुछ भी नहीं जनता इसलिए ज्ञान भिन्न है। ऐसा जिनेन्द्र भगवान का कथन है। यहां आशय यही है कि शब्द मात्र साधन है। उसके माध्यम से हम भीतरी ज्ञान को पहचान ले यही उसकी उपयोगिता है। अन्यथा यह मात्र कागज है । जैसे भारतीय मुद्रा है वह कागज की होकर भी भारत में मूल्यवान है दूसरे स्थान पर कार्यकारी नहीं है वहाँ उसको कागज ही माना जायेगा। इसी प्रकार यदि हम श्रुत का उपयोग भिन्न क्षेत्र में लेते हैं तो उसका कोई मूल्य नहीं है। यदि स्वक्षेत्र में काम लेते हैं तो केवलज्ञान की उत्पत्ति में देर नहीं लगती। अर्थात् कोई भी क्रिया करो विधि के अनुसार करो। दान इत्यादि क्रिया दाता और पात्र की विशेषता द्रव्य और विधि की विशेषता से विशिष्ट हो जाती है । फलवती हो जाती है। औषधि सेवन में जैसे वैद्य के अनुसार खुराक और अनुपान का ध्यान रखा जाता है ऐसा ही प्रत्येक क्रिया के साथ सावधानी आवश्यक है।

विषयों में सुख मानकर यह जीव अपनी आत्मा की उपासना को भूल रहा है। आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने प्रवचनसार में कहा है कि-

कुलिसाउहचक्कधरा सुहोवओगप्पगेहि भोगेहिं।
देहादीणं विद्धिं करेति सुहिदा इवाभिरदा ।।

अर्थात् इन्द्र और चक्रवर्ती पुण्य के फलरूप भोगों के द्वारा देहादि की पुष्टि करते हैं और भोगों में लीन रहते हुए सुखी जान पड़ते हैं, लेकिन वास्तविक सुख वह नहीं हैं।

एक बार यदि आप अपने भीतरी आत्म-वैभव का दर्शन कर लें तो आपको ज्ञात हो जायेगा कि अविनश्वर सुख शांति का वैभव तो हमारे भीतर ही है। अनन्तगुणों का भंडार हमारे भीतर ही है और हम बाहर हाथ पसार रहे हैं।

कम से कम आज ऐसा संकल्प अवश्य लेकर जाइये कि हम अनन्त-काल से चले आ रहे इस अनन्तानुबन्धी सम्बन्धी अनन्त लोभ का विमोचन अवश्य करेंगे और अपने पवित्र स्वरूप की ओर दृष्टिपात करेंगे। आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने आत्मा के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा है कि-

अरसमरुवमगंधं अव्वत्त चेदणागुणमसददं।
आण आलिंग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं॥

जो रस रहित है, जो रूप रहित है, जिसका कोई गंध नहीं हैं, जो इन्द्रिय गोचर नहीं हैं, चेतन-गुण से युक्त है , शब्द रहित है, किसी बाहरी चिन्ह या इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण नहीं होता और जिसका आकार बताया नहीं जा सकता, ऐसा यह जीव है आत्मतत्त्व है।

तप की महिमा अपरम्परा है । दूध को तपाकर मलाई के द्वारा घी बनाते हैं । तब उसका महत्व और अधिक हो जाता है । घी के द्वारा प्रकाश और सुगन्धी दोनों ही प्राप्त किये जा सकते हैं। वह पौष्टिक भी होता है जब कोई परम योगी, जीव रूपी लौह-तत्व को सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्र रूपी औषधि लगाकर तप रूपी धौंकनी से धौंककर तपाते हैं, तब वह जीव रूपी लौह तत्व- स्वर्ण बन जाता है। संसारी-प्राणी अनन्तकाल से इसी तप से विमुख हो रहा है और तप से डर रहा है कि कहीं जल न जायें। पर वैचित्र्य यह है कि आत्मा के अहित करने वाले विषय-कषायों में निरन्तर जलते हुए भी सुख मान रहा है। **आतम हित हेतु विराग ज्ञान। ते लखे आपको कष्ट दान।** जो आत्मा के हितकारी ज्ञान और वैराग्य है उन्हें कष्टकर मान रहा है। बन्धुओ ! जब भी कल्याण होगा ज्ञान, वैराग्य और तप के माध्यम से ही होगा।

अशुद्ध परिणमन का प्रभाव पूरे द्रव्य के ऊपर पड़ा है । आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने प्रवचनसार में स्पष्ट लिखा है कि **परिणमदि जेण दव्वं तक्कालं तग्मयत्ति पण्णतं**- अर्थात् द्रव्य जिस समय जिस भाव से परिणमन करता है उस समय उसी रूप होता है। दूसरी बात यदि वर्तमान में माना द्रव्य भीतर से शुद्ध ही है तो समझो मुक्त ही है और मुक्त है मुक्ति का अनुभव, केवलज्ञान का अनुभव भी होना चाहिए लेकिन अभी तो अपने पास एक अक्षर का भी ज्ञान नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि सारा का सारा द्रव्य ही बिगड़ा हुआ है, स्वभावात् अन्यथा भवनं विभावः स्वभाव से विलोप स्थिति हो चुकी है।

जिस मय स्वभाव पर्याय की अभिव्यक्ति होगी उसी मय विभाव पर्याय की वहाँ पर अभिव्यक्ति नहीं रहेगी, तब जिज्ञासा होती है कि जीव को शुद्ध जीवत्व की प्राप्ति कैसे हो? आचार्यों ने इसके लिए मोक्षमार्ग के अन्तर्गत तत्त्वों का उल्लेख किया। इन तत्त्वों को जो व्यक्ति अपने जीवन में सम्यक् प्रकार से शान्ति के साथ जान लेता है और अपने भीतर होने वाली वैभाविक प्रक्रिया के बार में निकटता से अध्ययन करता है वह व्यक्ति स्वभाव को प्राप्त करने का जिज्ञासु कहलाता है । (प्रवचनसार,113)

आत्मा की शक्ति अनन्त है। इस श्रद्धान के

साथ जो व्यक्ति अपने इस जीवन को अविनश्वव सुख की खोज में लगा देता उसका जीवन सार्थक हो जाता है आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने कहा है कि -

अज किव तिरणयणसुद्धा, अप्प झाएवि लहदि इंदत्त।
लोयंतिय देवत्तं तत्थं चुदा णिव्वुदिं जंति ॥

आज भी रत्नत्रय की आराधना करके आत्म-ध्यान में लीन होकर इन्द्रत्व को प्राप्त कर सकते हैं, लौकान्तिक देव बन सकते हैं। इतना ही नहीं, वहाँ से नीचे आकर मनुष्य होकर नियम से मुक्ति पा सकते हैं।

ज्ञानी वह है, जो वर्तमान में मिलने वाली विषय भोगों की सामग्री (धन-सम्पदा आदि) के प्रति हेय-बुद्धि रखता है। आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने समयसारजी ने कहा है कि-

उप्पण्णोदयभोग वियोगबुद्धिए तस्स सो णिच्चं।
कंखामणागदस्स व उदयस्स ण कुव्वदे णाणी ॥

ज्ञानी के सदा ही वर्तमान काल के कर्मोदय के भोग, वियोग बुद्धि अर्थात् हेय बुद्धि से होता है और ज्ञानी भाव भोगों की आकांक्षा भी नहीं करता। वही सच्चा सुख पाता है और ऐसी अनुभूति करता है यथा-

अहमिक्को खलु सुद्धा दंसण्णाणमइओ सदा रुवी।
णवि अत्थि मज्झ किंचि वि अण्णं परमाणुमित्तं पं॥
समयसार

अर्थात् मैं अकेला हूँ। आत्म रूप हूँ। मैं ज्ञानवान और दर्शनवान हूँ। मैं रूप, रस, गन्ध और स्पर्श रूप नहीं हूँ। सदा अरूपी हूँ। कोई भी अन्य परद्रव्य परमाणु मात्र भी मेरा नहीं है। इस प्रकार की भावना जिसके हृदय घर में हमेशा भरी रहती है, ध्यान रखना उसका संसार का तट बिल्कुल निकट जा चुका है। इसमें कोई सन्देह नहीं है। (पृ. 383)

नियमसार में आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने कहा है कि -

सम्मत्तस्स णिमित्तं जिणसुत्तं तस्स जाणया पुरिसा।
अंतरहेऊ भणिया दंसणमोहस्स खयपहुदी ॥

अर्थात् सम्यग्दर्शन का अन्तरंग हेतु तो दर्शन मोहनीय कर्म का क्षय, उपशम या क्षयोशम होता है लेकिन उसके लिए बहिरंग हेतु तो जिनेन्द्र भगवान के द्वारा कहे सूत्र-वचन और उन सूत्रों के जानकार ज्ञाता-पुरुषों का उपदेश श्रवण हैं। इसके सिवाय और कोई ऐसा उपाय नहीं है जिसके माध्यम से हम दर्शन मोहनीय या चारित्र मोहनीय को समाप्त कर सकें और अपने आत्म-स्वरूप को प्रकट कर सकें (पृ.385)

आचार्य विद्यासागरगजी आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी से पूर्णतः प्रभावित हैं उन्होंने समयसार का पूरा का पूरा अनुवाद ही किया है।

आचार्य विद्यासागरजी ने आचार्य कुन्दकुन्द की मूल गाथाओं का अनुगम, चिन्तन और अनुभूति के आधार पर पद्यानुवाद किया हैं उदाहरण के लिए जीवाधिकारान्तर्गत निम्न गाथा के भाषानुवाद एवं पद्यानुवाद अवलोकनीय हैं ।

जो पस्सादि अपणं अबद्धपुट्ठं अणण्णयं णियदं।
अविसेवमसंजुत्तं तं सुद्धणयं विवापीहि ।

समयसार गाथा -16

आत्मा अबद्ध नित शून्य उपाधियो,
अत्यन्त भिन्न पर से विधि-बन्धनों से।

ऐसा मुनीश्वर निजातम को निहारें,
वे ही विशुद्धनय हैं, जिन यों पुकारें ।।

अर्थात -जो शुद्धात्मा को जानता है किस प्रकार ? अबद्धपुट्ठे जल में रहकर भी उससे अस्पृष्ट रहने वाले कमलपत्र के समान, द्रव्यकर्म और नौ कर्म से रहित अणण्णार्य जैसे स्थान, कोश, कुशल और घटादि पर्यायों में मृतिका बनी ही रहती है, वैसे ही नर नारकादि पर्यायों में द्रव्यरूप से आत्मा ही बनी ही रहती है। णियदं- निस्तरंग और उत्तरंग अवस्थाा में परिणामता हुआ समुद्र-समुद्र ही रहता है, इसी प्रकार आत्मा सब अवस्थाओं में अवस्थित रहने वाला है, अभिलेख जैसे गुरुवा, स्निग्धता और पीतादि धर्मों को स्वीकार किए हुए होकर भी स्वर्ण अभिन्न है, उसी प्रकार आत्मा ज्ञान दर्शन गुणों से अभिन्न है । असंजुत्तं-जैसे जल वास्तविकता में उष्णता रहित होता है, उसी प्रकार आत्मा रागादि विकल्प वाले भावकर्मों से भी रहित हैं इस प्रकार जो आत्मा को जानता हैं तो शुद्ध णयं वियाणेहि-अभेदनय के द्वारा शुद्धनय का विषय होने से वह शुद्धात्मा का साधक हो से और शुद्ध अभिप्राय में परिणत होने से उस पुरुष को ही शुद्धनय समझना चाहिए।

समयसार का तलस्पर्शी अनुभव हुए बिना उक्त भाव की सृष्टि नहीं हो सकती, जिसमें आचार्य विद्यासागर आत्मा अबद्ध, **ऐसा मुनिश्वर निजातम को निहारें वे ही विशुद्ध नय हैं जिन यों पुकारें।** इस पद्य रचना में मुनीश्वर पद न तो गाथा में है और न टीका में, फिर भी चूंकि कवि रचनाकार में बन्धनमुक्त होता है और भावों की अभिव्यक्ति शब्दों द्वारा निःसृत हो जाती है अतः मूल गाथा के भाव में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

इसी प्रकार अजीवाधिकार की निम्न गाथा अवलोकनीय है-

एदे सव्वे भावा पुग्गलदव्व परिणाम णिप्पण्णा।
केवलिजिणेहिं भणिया किह से जीवो ति वुच्चंति।

समयसार-44

''ये पूर्व के कथिथ भाव विभाव सारे हैं
मूर्त से उचित हैं जड़ के पिटारे।
आश्चर्य जीव फिर रे बन जाये कैसे ?
हैं केवली वचन ये गज-मोती जैसे ।।''

अर्थात् - ये सभी देहरागादि रूप कर्म जनित अवस्थायें पौदगलिक द्रव्य कर्म के उदय रूप से परिणाम से उत्पन्न हुई है। इसलिए सर्वज्ञ भगवान ने इन्हें कर्म जनित बताया है, अतः निश्चय नय से उन्हें जीव कैसे कहा जा सकता है- कभी नहीं कहा जा सकता । अंगारे से काले पन के समान जीव भी रागादि से भिन्न नहीं है । वह पक्ष हुआ क्योंकि परम समाधि में स्थित पुरुषों के द्वारा शरीर और रागादि से सर्वथा भिन्न ऐसा चिदानंद एक स्वभाव वाले शुद्ध जीव की उपलब्धि देखी जाती है- यह हेतु हुआ। कीट-कालिमादि से भिन्न स्वर्ण के समान, यह दृष्टान्त हुआ। किं च पूर्वपक्षकार ने जो अंगार का दृष्टान्त दिया है, यहाँ घटित नहीं होता, क्योंकि जैसे

स्वर्ण का पीलापन और अग्नि का उष्णपना स्वभाव है, वैसे अंगारे का भी कृष्णापना स्वभाव है, उसे पृथक नहीं कर सकते।

किन्तु रागादिक तो डांक के द्वारा स्फटिक में आई हुई उपाधि केसमान जीवके विभाव-भाव हैं, इसलिए उनको निर्विकार शुद्धानुभूति के बल से जीव से पृथक् किया जा सकता है। इसी प्रकार जो यह कहा गया है कि आठ काठों के प्रयोग से खाट नाम की वस्तु बन जाती है, उसी प्रकार आठ कर्मों के सहयोग से जीव उत्पन्न हो जाता है, वह ठीक नहीं है। इसबात को सिद्ध करने के लिए अनुमान देते हैं। देखो, शुद्ध जीव आठ कर्मों के संयोग से भिन्न वस्तु है - यह पक्ष हुआ। क्योंकि परम समाधि में स्थित रहने वाले महापुरुषों के द्वारा आठ कर्मों के संयोग से पृथगभूत शुद्ध-बुद्ध एक स्वभाव वाले जीव की उपलब्धि हुई देखी जाती है -यह हेतु हुआ। जैसे कि आठ काठ के संयोग से बनी हुई खटिया पर सोने वाला पुरुष उससे भिन्न होता है - यह दृष्टान्त हुआ और सुनो देह और आत्मा में परस्पर अत्यन्त भेद है- यह पक्ष हुआ। क्योंकि इन दोनों का लक्षण भिन्न-भिन्न है जिससे वे दोनों भिन्न-भिन्न पहचाने जा सकते हैं, यह हेतु हुआ; जैसे अग्नि और पानी यह दृष्टान्त हुआ।

भाषानुवाद पूर्णतः तात्पर्य वृति का अनुकरण करता है परन्तु यह भाषानुवाद सहज बोधगम्य है। अनुकरण होने के बावजूद उसमें शब्दानुवाद की सरणि के साथ ही भाषा गत साहित्य और प्रसाद गुण से परिपूर्ण है। दूसरी और पद्यानुवाद 'गागर में सागर'की उक्ति को चरितार्थ करता है। आचार्य विद्यासागर ने कविगत के भावों के साथ-साथ मूल गाथाकार के भावों के अक्षुण्ण ही नहीं रखा है, वरन् दार्शनिक तत्व का भी उद्घाटन किया है। मूर्त से उदित है जड़ के पिटारे-स्पर्शरसगन्धवर्णन्तः पुदगलः रागादिभाव पुद्गल हैं, क्योंकि वे वैभाविक भाव है अतः वे जीव के कैसे हो सकते हैं ?

इसी तरह समयसार के कर्तृ कर्माधिकार की यह गाथा दृष्टव्य है, जिसमें **निमित्त-नैमित्तिक भाव** को अलग से स्वीकृत करते हुए भी कर्तृकर्मभाव का वर्णन उपादानोपादेय भाव से किया गया है।

जीवपरिणामहेदुं कम्मतं पुग्गला परिणमंति।
पुग्गल कम्मणिमित्तं तहेव जीवो वि परिणमदि।।
ण वि कुव्वदि कम्मगुणे जीवो कम्मं तहेव जीवगुणे।
अण्णोण्णणिमित्तेण दु परिणमं जाणं दोण्हं पि।
एदेण कारणेण दु कत्ता आदासण भावेण।
पुग्गलकम्मदाणं न दु कत्ता सव्व भावाणं।।

समयसार-86-88

है जीव में विकृत रागमयी,
दशायें तो कर्म रूप ढलती विधिवर्गणाये।
मोहादि का उदय पाकर जीव होता,
रागादिमान फलतः निज होश खोता।।86।।
कर्ता न जीव यह हो विधि के गुणों का
कर्ता कभी न विधि चेतन के गुणों का।
तो भी परस्परनिमित्त नहीं बनेंगे,
तो 'रागभाव' विधिभाव न जन्म लेंगे।।87।।

भाई अतः समझ ले मन में सुचारा,
कर्ता निजात्म, निज भाव द्वारा ।

अर्थात् - जैसे कुम्भकार का निज निमित्त से मिट्टी घड़े रूप में परिणमन करती है, उसी प्रकार जीव सम्बन्धी मिथ्यात्व व रागादि परिणामों का निमित्त पाकर कर्मवर्गणा योग्य पुद्गल द्रव्य भी कर्म रूप में परिणमन करता है। जिस प्रकार घट का निमित्त पाकर 'कुम्हार मैं घड़े को बनाता हूँ' इस प्रकार भाव परिणमन करता है, वैसे ही उदय में आये हुए द्रव्य कर्मों का निमित्त पाकर अपने विकार रहित चेतनमात्र परिणति को प्राप्त नहीं हुआ जीव भी मिथ्यात्व और रागादि रूप विभव-परिणाम रूप परिणमन करता है। यद्यपि परस्पर एक दूसरे के निमित्त से इन दोनों का परिणमन होता है तो भी निश्चय नय से जीव पुद्गल कर्म के वर्णादि गुणों को पैदा नहीं करता है। वैसे कर्म भी जीव के अनन्तज्ञानादि गुणों को उत्पन्न नहीं करता है। यद्यपि उपादान रूप से नहीं करता फिर भी घट और कुम्हार की भांति इन दोनों जीव और पुद्गलों का परस्पर में एक-दूसरे के निमित्त से परिणमन होता है। इस प्रकार उस रूप जीव जब निर्मल आत्मा की अनुभूति है। लक्षण जिसका ऐसा शुद्ध उपादान है कारणभूत जिसमें अथवा शुद्ध उपादान का कारणभूत जो परिणाम उससे यह जीव अव्याबाध और अनन्त सुखादिरूप शुद्धभावों का कर्ता होता है और इससे विलक्षण एक अशुद्ध उपादान ही है कारण जिसमें या अशुद्ध उपादान का कारणभूत ऐसे विकारी परिणमन के द्वारा रागादि अशुद्धभावों का कर्ता होता है जैसे मिट्टी का कलश का कर्ता। किन्तु पुद्गल कर्म के लिए हुए ज्ञानावरणादि पुद्गल कर्म पर्याय रूप जो सब भाव हैं, उन सबका कर्ता आत्मा नहीं है। भावार्थ यह है कि पुद्गल में जो ज्ञानावरणादि कर्म हैं, उनका कर्ता पुद्गल है और जीव में जो रागादि भाव हैं, उनका कर्ता जीव है।

आचार्य कुन्दुकुन्द स्वामी का आचार्य विद्यासागर जी के प्रवचन मात्र पर नहीं, उनके समग्र साहित्य पर पड़ा है जिसमें समयसार का सर्वाधिक। समयसार को लक्ष्य कर आचार्य श्रमणशतकम् में कहते हैं कि

''सारं तु समयसारं मुक्तिर्यल्लभ्यते सारऽम्।''

अर्थात्- संसार में जो क्षणभंगुर सारधन है वह सब प्रकार से असार है। सार तो समयसार शुद्धात्म-परिणति है जिससे मुक्ति शीघ्र प्राप्त होती है।

आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने अपने साहित्य में निश्चय और व्यवहार नय का सम्यक् प्रतिपादन किया है जिसे आचार्य विद्यासागरजी निरंजनशतकम् में दोनों नयों को दो नयनों को समान कहते हैं-

नयनयुग्मनिभेन नयद्वयम्, यमसनिश्ययेतु न यद्वयम्।

निरंजनशतकम् -6

आचार्य विद्यासागर जी महाराज के प्रवचनों पर ही नहीं समग्र साहित्य पर आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी के प्रभाव हैं। इतना ही नहीं एवं उनके पूरे संघ की चर्या की कुन्दकुन्द प्रभावित है। वस्तुतः यह विषय एक शोध का विषय है इस पर एक शोधप्रबन्ध लिखा जा सकता है। ■

जैन तीर्थ नैनागिरि और आचार्य विद्यासागर

• सुरेश जैन (आई.ए.एस.) भोपाल •

मध्यप्रदेश में स्थित सतपुड़ा और विंध्याचल पर्वत श्रेणियां हिमालय से भी पुरानी है। विन्ध्याचल की पर्वत श्रेणियों में प्राचीनतम जैन तीर्थ क्षेत्र नैनागिरि(ऋषीन्द्रगिरि-रेशिन्दीगिरि) स्थित है। यह भारत की आरण्यक संस्कृति का महत्वपूर्ण केन्द है। नैनागिरि के प्राचीन मंदिर तक स्थापत्य कला के श्रेष्ठ उदाहरण है। नैनागिरि तीर्थ पर पांच मुनिवरों ने शुक्ल ध्यान पूर्वक साधना करते हुए मोक्ष प्राप्त कियाहै। अतः यह सिद्धक्षेत्र है। भगवान पार्श्वनाथ ने इस तीर्थ की यात्रा कर यहां समवसरण आयोजित कर अपनी चरण रज से इसके कण-कण को पवित्र किया है। अतः यह समवसरण क्षेत्र है। इस तीर्थ के दर्शन करने से स्वर्ग के वैभव एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है। समवसरण की स्मृति चिरस्थायी स्वरूप देने के लिए यहां आचार्य विद्यासागर की प्रेरणा से विशाल समवसरण मंदिर का निर्माण किया गया है। गत सत्तर और अस्सी के दशक में आचार्य विद्यासागर जी अपने सतत् संवर्द्धमान संघ के साथ इस तीर्थ पर सात बार चातुर्मास, शीत और ग्रीष्म प्रवास के लिए पधारे।

2. आचार्य विद्यासागर के 50 वें दीक्षा दिवस 28 जून, 2017 के अवसर पर संयम स्वर्ण महोत्सव मनाया जा रहा है। इस महोत्सव के गौरव अध्यक्ष श्री अशोक जी पाटनी, किशनगढ़, अध्यक्ष श्री प्रभात जैन, मुम्बई एवं

महामंत्री श्री पंकज जैन, दिल्ली है। इस महोत्सव के जैन विद्यापीठ, भाग्योदय तीर्थ, करीला, सागर, म.प्र. के द्वारा संयोजित किया जा रहा है। इसके लिए राष्ट्रीय पदाधिकारियों और संयोजकों को हार्दिक बधाई। यह उल्लेखनीय है कि इस महोत्सव के पदाधिकारियों द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि नैनागिरि तीर्थ की महिमा, प्राचीनता और इस तीर्थ को मिले आचार्य विद्यासागरजी जी के लंबे सानिध्य को देखते हुए इस तीर्थ पर विशालतम एवं सर्वोच्च कीर्ति स्तम्भ का निर्माण किया जावे। तदनुसार 7 मई, 2017, को नैनागिरि जैन तीर्थ की पहाड़ी पर स्थित चौबसी मंदिर के सामने बाई ओर स्थित विशाल प्रांगण में आर्यिका पूज्य तपोमूर्तिजी के सानिध्य में सयम कीर्ति स्तम्भ का भूमि पूजन सम्पन्न हो चुका है। यह स्तम्भ गुरुदेव की मुक्त हँसी, खुशी और यादों की खुशबू पूरे देश में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में सहस्रों वर्षों तक फैलाता रहेगा।

3. मध्यप्रदेश में विहार के प्रारम्भिक वर्षों में आचार्य विद्यासागर जी वर्ष 1972 में 22 फरवरी को अपने संघस्थ तीन क्षुल्लकों - समयसागर, नियमसागर और योगसागर जी के साथ नैनागिरि पधारें थे। उन्होंने नैनागिरि में तीन चातुर्मास (1978, 1981, 1983) और चार शीत और ग्रीष्मकालीन (1977, 1979, 1986,1987) वाचनाऐं की। आचार्यश्री ने अपनी आध्यात्मिक शक्तियों से बुन्देलखण्ड के सहस्रों युवक/युवतियों को आकर्षित किया और नैनागिरि में शताधिक साधुओं को दीक्षित और प्रशिक्षित किया। पूरे प्रदेश में ही नहीं, अपितु पूरे देश में आध्यात्मिक क्रांति के जनक बने गुरुदेव द्वारा नैनागिरि में दीक्षित आचार्य पुष्पदंत सागर, उपाध्याय गुप्तिसागर, मुनिवर समयसागर एवं सुधासागर आदि अनेक मुनिवर एवं गुरुमतिजी, दृढ़मति जी, मृदुमतिजी आदि अनेक आर्यिकाएं पूरे राष्ट्र में अपने कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं।

4. नैनागिरि में गुरुदेव ने सुदूर अतीत के ने नेमिनाथकालीन आचार्य वरदत्तादि पांच मुनिवरों, जो नैनागिरि से मोक्ष गए हैं, की गूंजती प्रतिध्वनियों को सुनकर अनेक दिव्य अनुभव किये है। पवित्र पवन की भांति सर्वत्र सरसराती और गूंजायमान भगवान पार्श्वनाथ की जीवंत दिव्यध्वनि को सुनकर अपने व्यक्तित्व में आत्मसात किया है। भगवान पार्श्वनाथ की दिव्य देशना के शब्दों को ग्रहण कर आध्यात्मिक संदेश और संकेत प्राप्त किए हैं। उनके ऐसे अनुभव और संदेश मूकमाटी में अनेक स्थलों पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिध्वनित होते हैं। उनके प्रवचनों में गूंजते हैं। आचार्य विद्यासागरजी ने नैनागिरि में अपने आचार्यत्व को सार्थकता प्रदान की है। अपने आचार्यत्व को असाधारण आयाम दिए हैं।

5. आचार्यश्री ने नैनागिरि पर्व त के पीछे सर्वत्र फैली हरियाली, सौम्यता, स्निग्धता और असीम शांति का पूरा आनन्द लिया है। सिद्धशिला पर बैठकर नैनागिरि से सिद्धत्व प्राप्त कर मोक्ष गए आचार्य वरदत्तादि मुनिवरों एवं भगवान पार्श्वनाथ के सानिध्य का अनुभव किया है। समीपस्थ जलकुण्ड की पवित्र मूकमाटी के साथ अर्थपूर्ण मौन संवाद स्थापित किया है। सर्वोच्च चारित्रिक ऊंचाई प्राप्त कर यहां के पावन रजकणों को पूरे देश में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में विकीर्ण किया है। इसी तपोवन में अपनी बंदूके नीचे रखकर दूर्दान्त डाकुओं ने गुरुवर को साष्टान्ग प्रणाम किया है। नीलगाय और हिरण जैसे वनजीवों ने उनके समक्ष घंटों बैठकर ज्ञान पाप्त किया है। कुछ सर्पों और कुत्तों ने उनके आगे-पीछे चलकर उनसे धर्मलाभ प्राप्त किया है। आचार्यश्री द्वारा 5 साधु-संतों के प्रदत्त समाधि के कारण नैनागिरि तीर्थ तपोभूमि के साथ-साथ समाधिस्थल के रूप में प्रसिद्ध हो गया। यहाँ तक कि उन्होंने एक मरणासन्न कुत्ते को णमोकार मंत्र का पाठ सुनाकर समाधि प्रदान की।

6. आचार्यश्री के नैनागिरि प्रवास के अवसर पर श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस.) के

विशेष प्रयासों से तीर्थंकर के तत्कालीन संपादक डॉ. नेमीचंद जैन के द्वारा दिसम्बर 1978 में 'श्री नैनागिरि तीर्थ एवं आचार्य विद्यासागर' विशेषांक (130 पृष्ठ) प्रकाशित किया गया था। आचार्यश्री पर केन्द्रित यह इतिहास में प्रथम उच्चस्तरीय विशेषांक है। इस विशेषांक के मुखपृष्ठ पर युवा आचार्य का चित्र (दादा नीरज जैन,सतना) जिसमें आचार्य श्री की आध्यात्मिक मस्ती में आग में विदग्ध स्वर्णिम, छकाछक, खड़-खड़ काया, भोलापन निरीह निष्काम मुद्रा और अभय की जीवंत प्रतिमा दिखाई देती है, प्रकाशित किया गया है। इसी प्रकार प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन के दो चित्र प्रकशित किए गए हैं, पृष्ठ 50 पर बालक विद्याधर का चित्र, जिसमें उसका गोल चेहरा, झब्बर केश, तंग निकर, अंग्रेजी काट की कमीज, कंधों के आर-पार टंगा बस्ता, पांव में जूते तथा हर कदम में दृढ़ता और गम्भीरता दिखाई दे रही है, मुद्रित किया गया है। पृष्ठ 52 पर बालक विद्याधर के घर का चित्र प्रकाशित किया गया है। जिसके द्वार पर खड़े हैं बालक विद्याधर के बड़े भाई श्री महावीर जी एवं पिता मलप्पाजी (मुनि मल्लिसागरजी) यह उल्लेखनीय है कि वर्ष 1978 में इस अंक की 5000 से अधिक प्रतियाँ पूरे देश में विद्वानों, श्रेष्ठियों और जन प्रतिनिधियों को प्रेषित की गई और उनके द्वारा इस विशेषांक की अत्यधिक सराहना की गई। इस विशेषांक के अनेक लेखों और चित्रों को देश की सुप्रसिद्ध पत्रिकाओं द्वारा पुनः पुनः प्रकाशित किया गया।

7. नैनागिरि में गत शताब्दि के अस्सी के दशक में आचार्यश्री के आशीर्वाद और प्रेरणा से उनकी प्रथम परियोजना के रूप में समवसरण मंदिर का निर्माण किया गया है। महावीर सरोवरके दक्षिणी तट पर 100 बाई 100 वर्गफीट के चबूतरे पर 70 बाई 70 वर्गफीट के क्षेत्र में 50 फीट ऊंचे इस समवसरण मंदिर के आकल्पन, भूमि पूजन, शिलान्यास, निर्माण एवं मूर्तियों के प्राण प्रतिष्ठा जैसे प्रत्येक अवसर पर आचार्यश्री का नैनागिरि तीर्थ को लाभ मिला है। नैनागिरि तीर्थ के तत्कालीन अध्यक्ष श्री नंदकिशोर लोहिया एवं मंत्री श्री सेठ शिखरचन्द्र जी के आमंत्रण पर इस मंदिर का झंडारोहण और शिलान्यास 1 नवम्बर 1981 को श्री निर्मल कुमार जैन सेठी, अध्यक्ष भारतवर्षी य दिगम्बर जैन महासभा द्वारा किया गया। नैनागिरि तीर्थ को वर्ष 1987 में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर आचार्यश्री का मंगल सानिध्य प्राप्त हुआ।

8. पार्श्वनाथ समवसरण मंदिर की 12 फरवरी 1987 को प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। इस मंदिर के लिए श्रीमती सरस्वतीबाई धर्मपत्नी सेठ शिखरचन्द्र जैन बण्डा, श्रीमती खिलौनाबाई धर्मपत्नी सेठ खेमचन्द्रजी ढोलक बीड़ी सागर, श्री दिगम्बर जैन महिला समाज बण्डा, श्री रमेश जेजानी, प्रोपराइटर बनवारी लाल गिरधारी लाल जेजानी नागपुर द्वारा मूर्तियाँ प्रदान की गई। सिंघई फूलचन्द्र जैन, महूना वाले बण्डा, श्रीमती क्षमाबाई जी

थांदला, श्री अजितकुमार जी दिल्ली, श्री मोतीलाल डालचन्द्रजी पंचरत्न, बुढार द्वारा मानस्तम्भ प्रदान किए गए। आचार्यश्री से नैनागिरि में वर्ष 1978 में नीचे के मंदिरों के सामने विशाल प्रवचन मण्डप (108 बाई 30 फीट) का निर्माण किया गया।

9. यह सुखद एवं सत्य है कि जैसे-जैसे मंदिर का निर्माण अपनी प्रगति पर आगे बढ़ा, वैसे ही वैसे आचार्यश्री अपनी आध्यात्मिक प्रगति पर बढ़ते रहे। जैसे ही मंदिर के शिखर पर ध्वजा स्थापित की गई, वैसे ही आचार्यश्री की कीर्ति पताका पूरे देश में नहीं, अपितु पूरे विश्व में फैल गई। आचार्यश्री का आशीर्वाद प्राप्त कर श्री अशोक पाटनी, किशनगढ़ जैसे अनेक छोटे व्यापारी और श्री सुरेश जैन, श्रीमती विमला जैन नैनागिरि जैसे अनेक छोटे प्रशासनिक और न्यायिक अधिकारी अपनी चतुर्मुखी प्रगति के पथ पर तीव्र गति से आगे बढ़े हैं। नैनागिरि तीर्थ के तत्कालीन मंत्री और समवसरण मंदिर के प्रमुख शिल्पी स्व. श्री सेठ शिखरचन्द्र जैन प्रबन्ध समिति के सभी साथियों के साथ उन्नति के शिखर पर पहुँचे हैं। इस पवित्र भूमि पर श्री सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्थापित किया गया। जिससे अभी तक गरीब से गरीब परिवारों के 1150 से अधिक छात्र बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण कर विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त कर अपना सफल जीवन यापन कर रहेहैं।

10. नैनागिरि में बैठकर आचार्यश्री ने पूरी विनम्रता पूर्वक समाज के मूर्धन्य विद्वान श्रीमान पंडित कैलाशचन्द्र जी साहब, श्रीमान पं. दरबारीलाल जी कोठिया बनारस, श्रीमान पं. पन्नालाल जी साहित्याचार्य सागर और श्रीमान पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प प्रतिष्ठाचार्य प्रभृति वरिष्ठ विद्वानों से आध्यात्मिक दृष्टि का अन्वय, अर्थ, भावार्थ और मर्म को समझा। समाज के प्रमुख उद्योगपति श्रीमान् सेठ खेमचन्द्र मोतीलाल जी सागर एवं श्रीमान् संतोषकुमार जयकुमार जैन बैटरी वाले सागर के सहयोग से अपनी वाणी का प्रचार प्रसार किया। पर्वत पर स्थित भगवान पार्श्वनाथ के मंदिर में आचार्यश्री ने 5 घंटों तक अनेक मास लगातार खड़े रहकर घोर तपस्या की। नैनागिरि तीर्थ के स्थाई निवासी श्री सिंघई सतीशचन्द्र जैन, उनकी पत्नी श्रीमती केशरदेवी जैन, वरिष्ठ प्रबंधक पं. माणिकचन्द्र जी जैन और उनके तत्कालीन साथी और नैनागिरि परिचय पुस्तिकाओं के लेखक श्री कन्छेदीलाल जी इन घटनाओं के साक्षी रहे हैं।

11. यह सुखद संयोग है कि गत शताब्दि के सत्तर से अस्सी के दशक में नैनागिरि की सिद्ध और समवसरण भूमि पर चलते-फिरते हमें चौथे काल के आचार्य वरदत्तादि पाँच सिद्धों और तीर्थंकर पार्श्वनाथ की कृपा, नैनागिरि पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव में एक हजार वर्ष पूर्व प्रतिष्ठित पाषाण की मूर्तियों के दर्शन तथा पंचमकाल के युवा आचार्य विद्यासागरजी का आशीर्वाद हम सबको प्राप्त हुआ और नैनागिरि के प्रत्येक दर्शक के जीवन में फलीभूत हुआ। ■

चलो देखें यात्रा

तीर्थयात्रा चाँदखेड़ी व जहाजपुर

सभी को ज्ञात है कि चांदखेड़ी व जहाजपुर (राजस्थान) दोनों ही अतिशय क्षेत्र है। प्रत्येक धर्मप्रेमी श्रावक का मन/भाव इन अतिशय क्षेत्रों के दर्शन हेतु किसी न किसी समय अवश्य आता है। मुझे भी पिछले दो वर्षों से निरन्तर तीर्थक्षेत्रों के दर्शन हेतु भाव आता रहा। परन्तु किन्हीं कारणों से कार्यक्रम नहीं बन पाया। मेरा मानना है कि जब तक पुण्योदय नहीं होता है, तीर्थक्षेत्र पहुँचने का कार्यक्रम बन ही नहीं पाता है। हर्ष के साथ लिख रहा हूँ कि पुण्योदय आया और दिनांक 25 मार्च 2017 को सायं 4:15 बजे टैक्सी (इनोवा) से मेरे मित्र श्री राजेन्द्र जैन के साथ इन्दौर से प्रस्थान किया। मार्ग में आगर मालवा, सुसनेर, सोयतकला, झालरापाटन होते हुए लगभग 350 किमी. की दूरी कर हर्ष की अनुभूति हुई, जिसे शब्दों में वर्णन करना मुश्किल है। अति सुंदर व व्यवस्थित पुण्य स्थान है। सुबह 6 बजे उठकर वृत्त होकर मंदिरजी में प्रवेश किया। मंदिरजी की भव्यता देखकर हृदय आनंदित, प्रफुल्लित हो गया। सभी वेदियों में विराजित भगवान के दर्शन कर असीम प्रसन्नता हुई एवं उत्साह के साथ तलघर में पहुँचते ही 1008 श्री आदिनाथजी भगवान के दर्शन कर विशेष आत्मिक सुख की अनुभूति हुई। पहुँचने पर देखा कि भगवान जी के प्रथम कलश व शांतिधारा की बोली चल रही थी। मैंने एवं साथी श्री राजेन्द्रजी ने मिलकर बोली में भाग लिया एवं पुण्य से सौधर्म इन्द्र/प्रथम कलशकर्ता एवं शांतिधारा का सौभाग्य हम दोनों को संयुक्त रूप से प्राप्त हुआ। भगवान 1008 श्री आदिनाथ जी के कलश एवं शांतिधारा करते हुए आत्मिक आनंद /सुख की अनुभूति असीम थी, जिसे शब्दों द्वारा वर्णन नहीं कर सकते हैं। अभिषेक/शांतिधारा के पश्चात् नित्य पूजा/पाठ किया। इस तीर्थक्षेत्र पर पूर्ण व्यवस्थाएं अनुकूल हैं। भोजनशाला में भोजन कर अतिशय क्षेत्र जहाजपुर हेतु रवाना हुए। चांदखेड़ी से दोपहर 12:15 बजे रवाना होकर कोटा में एक घण्टे का विश्राम कर संध्या 5:15 बजे जहाजपुर पहुँच गये। अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी में सम्पर्क सूत्र श्री अवनेश जैन, प्रबंधक मोबाइल नम्बर 9784895777, श्री राजेन्द्र जैन (राजू) अकाउण्ट्स मैनेजर मो. 9214629719, विस्तृत जानकारी पेज नम्बर 198 दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र निर्देशिका से भी प्राप्त की जा सकती है।

अतिशयक्षेत्र जहाजपुर (भीलवाड़ा (राज.) - यहाँ 1008 भगवान श्री मुनिसुव्रतनाथ जी की मनोहारी/अतिशयकारी प्रतिमा विराजित है। प्रथम दृष्टि से ऐसा लगा जैसे कि हम वास्तव में भगवान के समक्ष उपस्थित हैं। ऐसी चमत्कारी/अतिशयपूर्ण प्रतिमा के दर्शन कर असीम आत्मिक आनंद की अनुभूति हुई, जिसका कि वर्णन शब्दों में करना संभव नहीं है। ■

आगम दर्शन

सप्त भंग तरंगणी और विषय वस्तु

न्याय प्रचर साहित्य में श्री विमलदास आचार्य की रचना सप्तभंग तरंगणी एक महत्वपूर्ण कृति है। इस ग्रन्थ में स्याद्वाद न्याय के आधार भूत सप्तभंगों का विस्तृत विवेचन किया गया है। आचार्य अनंतदेव स्वामी के शिष्य वीरनामक ग्राम के रहने वाले आचार्य विमलदास दिगम्बर जैन के अनुयायी थे। उन्होंने तंजा नगर में इस ग्रन्थ की रचना सम्पन्न की थी। प्रस्तुत ग्रन्थ का सृजन प्लवंग संवतसर में पुष्य नक्षत्र रविवार वैसाख सुदी अष्टमी को किया था किन्तु यह पता नहीं लग पा रहा है कि वह कौन-सा सन्-संवत् था एवं विद्वान आचार्य विमलदासजी किस कुल के थे तथा उनके माता-पिता कौन थे। इन सभी तथ्यों का ज्ञात करना किसी भी शोधार्थी की अपेक्षा रखता है। कार्य श्रमसाध्य ही है।

इस ग्रन्थ में जैनों के प्राणभूत स्याद्वाद के आधार सप्तभंगों का प्रधानता से वर्णन किया गया है। सप्तभंगों की प्रवृत्ति का हेतु तत्त्वार्थ अधिगम का उपाय प्रमाण रूप और नय आत्मक वाक्यों का सप्त रूप होना ही है। जब यह प्रश्न जन्म लेता है कि इनकी संख्या सात ही क्यों है तब आचार्य कहते हैं कि प्रश्न सात प्रकार से ही उत्पन्न होते है। समस्त जगत् के इह लोक और परलोक में संशय भी सात ही प्रकार से उत्पन्न होते हैं अतः सप्तभंग से कम और अधिक भंग नहीं हो सकते हैं। सत्ता असत्ता क्रम से उभय रूप और वक्तव्य सत्ता विशिष्ट अवक्तव्य असत्ता विशिष्ट अवक्तव्य से सात प्रश्न जब कथंचित् शब्द से युक्त हो जाते हैं तब सर्वथा और एकान्तवाद को समाप्त करके अनेकान्तवाद को जन्म देते हैं और समस्त विवादों का अंत हो जाता है।

1. स्याद अस्ति, 2. स्यात् नास्ति, 3. स्यात् अस्ति नास्ति, 4. स्यात अव्यक्तव्य, 5. स्यात् अस्ति अव्यक्तव्य, 6. स्यात् नास्ति अव्यक्तव्य, 7. स्यात् अस्ति नास्ति अव्यक्तव्य

इस तरह से सात भंगों के समूह या समाहार का नाम सप्तभंगी होता है। इन सप्तभंगी की तरंगणी अर्थात् नदी प्रवाह जैसा यह ग्रन्थ सप्तभंग तरंगणी के नाम से प्रसिद्ध है।

प्रथम भंग स्यात् अस्ति योग घटा अर्थात् कथंचित् घट है। इस प्रथम भंग से लेकर अंतिम भंग की पूर्ण रूप से अनेक तर्क वितर्कों द्वारा जिस प्रकार अर्थ बोध होता है। वह दिखाया गया है। प्रमाण सप्तभंगी और नय सप्तभंगी इन भेदों से सप्तभंगी के दो भेद प्रस्तुत किये गये हैं। सम्पूर्ण रूप से पदार्थों का ज्ञापन प्रमाण वाक्य होता है और विकल्प रूप से अर्थात् एक देश विकलादेश पदार्थ स्वरूप का बोधन नय वाक्य होता है। इस प्रकार सकलादेश प्रमाण वाक्य और विकलादेश नय वाक्य आदि विकल्पों को लिखकर सिद्धांत प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम भंग में (स्यात् अस्ति एवं घटः) कथन चित् घट है। इस प्रकार द्रव्य वाचन मानकर घट को विशेष्य और गुणवाचक मानकर अस्ति को विशेषण रूप वर्णन किया है। जैन सिद्धांत में अनेकांत अर्थ है। कि प्रत्यक्ष अनुमान और आगम से अविरुद्ध रूप एक वस्तु में अस्तित्व नास्तित्व रूप अनेक धर्मों के निरूपण करने में जो तत्पर हो वही जैन धर्म का अनेकांतवाद है।

इस प्रकार के अनेकान्तवाद में स्वकीय रूप द्रव्यक्षेत्रादि से तो घट का अस्तित्व है न कि अनिष्ट असत्वादिकः इस बात को शोतन करने के लिये स्यादास्त्येव घट इस प्रथमभङ्ग में एव इस निश्रय बोधक निपात का प्रयोग किया है। इस प्रकार से एवकार का प्रयोग भङ्गों में करना उचित है या नहीं इस विषय में ग्रन्थकार ने बहुत खंडन मंडन किया हैं और अन्त में यह सिद्धांत किया है कि स्याद्वाद न्याय में अकुशल शिष्यों के अर्थ एवकार शब्द का प्रयोग उचित है और स्याद्वाद में जो कुशल है उनको आवश्यकता नहीं है तथा जो बौद्धमतावलम्बी अनेकान्त पक्ष को छोड़ के अन्य व्यावृत्ति ही शब्द शक्ति मानते हैं उनका खंडन भी किया है।अर्थात् अन्य के निषेध से अतिरित सर्वत्र शब्द जन्य ज्ञान घटादि पद से विधिमुख से होता है न कि व्यावृत्ति रूप से इस हेतु तथा प्रकारान्तर से भी बौद्धमत की असंगति दर्शाई है।

स्याद्वाद को स्पष्ट करने का सबसे बड़ा प्रयास इस कृति में किया गया है। स्याद्वाद संशयवाद नहीं है तथा इसे शायदवाद भी नहीं कहा जा सकता है निरपेक्ष बिना सापेक्ष की सिद्धि नहीं मानने वाले विद्वानों के समक्ष जैन दर्शन के इस ग्रन्थ में अनेकान्त में भी अनेकान्त की सिद्धि करते हुए स्याद्वाद को अमोघ रूप निर्दोष सिद्ध किया गया है। ■

दीवाना

इक नाम का दीवाना
इक रूप का दीवाना
विद्यासागर जो हैं
मैं उनका दीवाना
जो काव्य सृजेता हैं
आध्यात्म की गीता
आगमचर्या जिनकी
मैं उनका दीवाना

जो मूकमाटी लिखकर
गागर में सागर भर
जो मधुर वचन कहते
उनकी वाणी क़ा दीवाना
पलकों में बसो गुरुवर
वस चरण शरण गुरुवर
जो भेष दिगम्बर है
मैं उसका भेष का दीवाना

■

आचार्य विद्यासागर जी के प्रवचनों में नीतिवाक्य

• डॉ. श्रीमती राका जैन, लखनऊ •

नीयन्ते संलभ्यन्ते उपायादयः ऐहिका-मुष्मिकार्था वा अनया इति नीतिः । नीति का अर्थ है पथ-प्रदर्शन, युक्ति, उपाय अथवा राज्य की रक्षा के लिए काम में लायी जाने वाली युक्ति अथवा लोक या समाज के कल्याण के लिए निर्दिष्ट किया हुआ आचार-व्यवहार अर्थात् आचार पद्धति। और ये वाक्य जिनमें देश, काल और पात्र के अनुरूप व्यवहार करने के नियमों का निरूपण किया गया हो, वह नीतिवाक्य है। सूक्ति, सुभाषित, नीतिवाक्य सम्पदा समाज के हित में रहती है।

मानव-जीवन बड़ा सरल है, पर मनुष्य जटिल बना देता है। वस्तुतः वह जीवन के धर्म और जीवन के मर्म को समझता नहीं है। इसी से उसे मंजिल दिखाई नहीं देती और भटकते-भटकते किसी तरह अपनी जीवन-यात्रा पूर्ण करता है। यह भूल जाता है कि उसमें अपार शक्ति है। अपने अज्ञान से वह प्रभु के दिये वरदान का लाभ नहीं ले पाता।

आचार्यश्री के नीतिवाक्य मानव की सुप्त चेतना को झकझोरते हैं, कहते हैं कि इस धरा पर मानव जीवन दुर्लभ है। उसे समझो और उसके एक-एक क्षण का आत्मोन्नति और पर-सेवा के लिए उपयोग करो।

संत की वाणी में संत का जीवन बोलता है। उसकी अनुभूतियाँ बड़ी गहन-गहरी होती हैं, उसका आधार/कारण ज्ञान नहीं होता, साधना होती है, तप कर जिस प्रकार सोना कंचन बन जाता है उसी प्रकार संत की कठोर साधना भी उसके जीवन को आलोकित कर देती है और उसे जग के अन्धकार को दूर करने की क्षमता प्रदान करती है।

संतुलित सधे हुये जीवन की तरह महापुरूषों के वचन भी संक्षिप्त, सारगर्भित और सधे हुये रहते हैं। चेतना में गहरा असर डालने वाले उनके ये वचन एकदम सार्थक और प्रयोजन की सिद्धि करने वाले होते हैं। संक्षिप्त सारगर्भित यही वचनावलि सूक्तियाँ मानी जाती है। जो बात पृष्ठों-पृष्ठों के लेख और विस्तृत व्याख्यान-वार्ताओं में भी नहीं कही जा सकती, वह बात एक सूक्ति कह देती है।

बूंद में सागर समान समायी उसकी अर्थात्मा बहुत ही विशाल होती है। भारतीय साहित्य ऐसी सूक्तियों का भण्डार है। यह साहित्य सिर्फ वचन विलास और मनोरंजन कल्पना-लोक पर ही नहीं टिका बल्कि इसमें वह तथ्य निहित है जो दुविधाग्रस्त जीवन की अंधेरी राहों में सम्यक् ज्योति प्रदान करता है। यह ज्योति गुरु के द्वारा प्रदत्त है।

गुरु महिमा-

• गुरुवचन आपत्तियों में भी पथ प्रदर्शित करते हैं।

• गुरुवचन जिनशासन में उपकरण माने गए हैं।

• गुरु के अभाव में गुरु के पदचिन्ह ही हमारे लिए दर्पण का काम करते हैं।

• जिसे गुरुओं द्वारा राह मिल जाती है फिर उसके लिए किसी तरह की परवाह नहीं होती है।

• वास्तव में गुरु वही है जो अन्तरंग में छाए हुए अंधकार को दूरकर प्रकाश प्रदान करते हैं।

• हमारे गुरु आशावान नहीं बल्कि आशा पर नियंत्रण रखने वाले होते हैं।

• सच्चा शिष्य गुरु आज्ञा मिलने पर अहोभाग्य की अनुभूति करता है।

• मन को गुरुचरणों में चढ़ा दो, अपने आप कल्याण होगा, बहिरंग से नहीं, अंतरंग से।

- हाइकू

सृजनधर्मी आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व से आज कौन परिचित नहीं है। उनका जीवन सहज है, सरल है, आडम्बर और प्रदर्शन से उनका दूर-दूर तक का सम्बन्ध नहीं है और यही वजह है कि सादगी के सौन्दर्य से सुशोभित साधनमुक्त उनकी साधना अमिट छाप छोड़ रही है। प्रशस्त अतिशयवती उनकी यथाजात स्वाधीन चर्या अनगिन जन भावनाओं क़ी आदर और आस्था का केन्द्र बनी हुईहै यदि उनके अन्तःकरण में जिजीविषा कुछ है तो वह सिर्फ इतनी ही कि आगम और अध्यात्म का मार्ग यथावत रहे। श्रमण संस्कृति निरन्तर वृद्धिंगत हो। हर क्षण हर पल उनका चिन्तन संघ, समाज, साधना, साहित्य और संस्कृति के पंच सकारों की धूरी पर घूमता रहता है। सार्वभौमिक चिन्तना के इस व्यक्तित्व ने जहाँ एक और आत्मा साधना की ऊँचाइयां के स्वर्ण शिखरों को छुआ है तो वहीं सारस्वत साहित्य के महासागर में भी कम अवगाहन नहीं किया।

निरीह, निर्भीक, निरालम्बऔर निष्पक्ष उनका जीवन ध्रुवतारे की तरह प्रकाशमान है। अप्रतिम आदर्श है। उनकी वाणी में ओज है, माधुर्य है, प्रवाह है, एकात्मता है और है चुम्बकीय आकर्षण। सूत्र के रूप में संक्षिप्त सारगर्भित बात करना उनकी अपनी मौलिक विशेषता है। उनके प्रवचनों में शंका-समाधान, स्वाध्याय कक्षाओं में, या व्याख्यानों में इस तरह की सूत्र सम्पदा का बाहुल्य रहता है और यही कारण है कि उनके आदेश/निर्देश त्वरित असरदार होते हैं। उनके विचारों में सुलझाव है, दूरदर्शिता है, बिखरी हुई शक्तियों को एक सूत्र में पिरोपकर कुछ रचनात्मक करने की उनकी स्पॉहा अद्भुत है। मंगलवर्धिनी उनकी मानस-मनीषा में उपजा करुणा-कृपा का भाव नई पीढ़ी में विरक्ति और विज्ञान का सघन संस्कार डाल रहा है। यह सच ही है कि उनकी आभा वलय में जो भी पहुंचता है वह वहीं का हो जाता है। उनका कण भर आशा और क्षण भर की आत्मीयता ही समूचे जीवन को रूपान्तरित कर देती है। भ्रम और निराशा को दूर कर नूतन उत्साह, आशा, साहस और समाधान का आलोक फैलाती है। कर्त्तव्य, संयम, स्वाध्याय, साधना, सदाचार और

सद्भाव आदि का बुनियादी पथ दर्शाने वाले उनके विचार कहीं बल और बलिदान की भावना जगाते हैं तो कहीं अभय और आनन्द की अनुभूति कराते हैं। सचमुच ही उनके विचारों में नैराश्य और उदासी को उत्सव में बदल देने की क्षमता है। आचार्यश्री के नीति वाक्यों का हम इन दृष्टियों से अध्ययन कर सकते हैं -

1. सुखद व्यावहारिक जीवन के स्वर
2. आध्यात्मिक विकास के स्वर
3. धर्म गगन में करें विहार
4. सामाजिक चेतना के स्वर
5. शैक्षिक विकास के स्वर
6. राष्ट्रीय एकता के स्वर

1. सुखद व्यावहारिक जीवन के स्वर -

आचार्यश्री के साहित्य में सुखद जीवन के व्यावहारिक सूत्र मिलते हैं यथा - विनय जब अंतरंग में प्रादुर्भूत हो जाती है तो उसकी ज्योति सब ओर प्रकाशित होती है। वह मुख पर प्रकाशित होती है, आंखों में से फूटती है, शब्दों में उद्भूत होती है और व्यवहार में प्रदर्शित होती है।

-महाकवि डॉ. विद्यासागर ग्रन्थावली खण्ड-4

• जो व्यक्ति कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान होता है, प्रतिष्ठा उसके पीछे भागती है।

- अनमोल वचन

• वक्ता को निर्भीक होने के साथ-साथ निरीह भी होना चाहिए।

- अनमोल वचन

• अर्थात् - मधुरवाणी अवश्य हो लेकिन सार्थक होना चाहिए मात्र गप्प नहीं। जगत के सभी जीव सुख-शान्ति का अनुभव करें। जैनधर्म में **'परस्परोपरग्रहो जीवानाम्'** की बात आती है। अहं वृत्ति नहीं, सेवावृत्ति को फैलाना चाहिए।

• दूसरों की सुख-सुविधा को देखकर जलने वाला व्यक्ति कभी भी सुख-शान्ति का अनुभव नहीं कर सकता।

• आज का व्यक्ति अपने दुःख से दुःखी कम है किन्तु दूसरों को प्राप्त सुख से दुःखी ज्यादा है।

- सागर बूंद समाय पृ. 166

• जीवन भले ही चार दिन का क्यों न हो, लेकिन अहिंसामय हो, तो मूल्यवान है। जो जैनधर्म के साथ जीता है वह धन्य है।

-महाकवि डॉ. विद्यासागर ग्रन्थावली (प्रवचन-प्रदीप -मानवता)

धन की सार्थकता दान से है।

धनिकजनों से धन की इच्छा सभी निर्धनी करते हैं।
धनी बनाकर किन्तु, तृप्त भी उन्हें धनी कब करते हैं॥
याचक कीना प्यास बुझाया, धनिकपना क्या काम रहा,
धनिकपना से निर्धनपन मय, मुनिपन वर अभिराम रहा॥

-महाकवि डॉ. विद्यासागर ग्रन्थावली (प्रवचन-प्रदीप -मानवता)

• सन्मार्ग के प्रति जिसे अगाध आस्था होती है, उसका पतन नहीं उत्थान होता है।

- विद्यावाणी 63

• तर्क-वितर्क ही नहीं, सतर्क भी रहना चाहिए। - अनमोल वचन

• वचनों में अद्भुत शक्ति है। इसलिए कभी वह कर्णफूल बन जाते हैं तो कभी कर्ण शूल।

• व्यक्ति की परख उसके कुल से नहीं, कर्म से होती है।

इसीलिए व्यावहारिक दृष्टि से आचार्यश्री के सुभाषित वचनों के लिये हम कह सकते हैं कि -

2. आध्यात्मिक विकास के स्वर-

आचार्यश्री के साहित्य में आध्यात्मिक विकास के स्वर गूंजायमान होते हैं यथा-

• 'ही' देखता है हीन दृष्टि से सबको और 'भी' देखता है समीचीन दृष्टि से सबको

- अनमोल वचन

• वस्तु से न तो हेय है न उपादये, राग द्वेष के कारण हम वस्तु को हेय-उपादेय रूप मानते हैं।

- विद्यावाणी, 405

• वही पढ़ो, वही सीखो वही करो जिसके उपसंहार में अपनी आत्मा सुख-शान्ति का अनुभव कर सके। - अनमोल वचन

• पहले 'दासोऽहं' फिर 'उदासोऽहं' बाद में 'सोऽहं' और अंत में 'अहं' भक्त से भगवान बनने का यही क्रम है। - अनमोल वचन

• दूसरों को द्वेष की दृष्टि से देखने वाला व्यक्ति अनेकान्त का उपासक नहीं, उपहासक है। - अनमोल वचन

• अतः नयों में मत उलझो, नय तो मार्ग है, मार्ग में सुख की अनुभूति नहीं। - अनमोल वचन

3.धर्म गगन में करे विहार-

• धर्म प्रदर्शन की बात नहीं, किन्तु दर्शन, अन्तर्दर्शन की बात है।

• धर्म वही है जो हमें अनुभूति कराता है, मात्र चर्चा ही नहीं, चर्या भी सिखाता है।

• धर्म की प्रभावना परमत का खण्डन करते हुए नहीं किन्तु स्वमत का मण्डन करते हुए करना चाहिए।

• धर्मात्मा वही है जो किसी दूसरे धार्मिक व्यक्ति के धर्मभावों को ठेस न पहुँचाएं।

• धर्मात्मा अधर्मात्मा को भी अपने जैसा बनाने का भाव रखता है।

• धर्मात्मा को धर्मप्रिय होना चाहिए स्थानप्रिय नहीं।

• यदि जीवन में धर्म है तो बाह्य वैभव सम्पदा से क्या प्रयोजन और यदि धर्म नहीं है तो भी अन्य वैभव सम्पदा से क्या प्रयोजन।

• जैन शासन में किसी व्यक्ति विशेष की पूजा नहीं है क्योंकि यहाँ पर नाम की नहीं, गुणों की पूजा होती है।

• संस्कार के बिना संस्कार में कोई भी आत्म पतित से पावन नहीं बन सकती।

• धार्मिक व्यक्तियों में संस्कृति के प्रति निष्ठा एवं राष्ट्र प्रेम स्वाभाविक होता है।

• अहिंसा धर्म के सद्भाव से सब धर्म अपने आप पल जाते हैं।

4. सामाजिक चेतना के स्वर-

• अपरिग्रहवाद इस सिद्धांत समाजवाद का व्यवहारिक रूप है। यह सिद्धांत समाजवाद को जीवित रखने के लिए संजीवनी का काम करता है।

• विनय-वात्सल्य, एकता-तीनों रत्नत्रय के समान है। समाज की संरचना में इनका बहुमूल्य योगदान है।

• विवेक के साथ प्रत्येक घड़ी बिताने का नाम ही जीवन है।

• समता के साथ सुख का गठबंधन है।

• महापुरुषों ने अनुभवों के आधार पर जैसा प्रतिपादन किया है हमें वैसा ही अपना जीवन बनाना चाहिए।

• कृति और कर्म की उतनी कीमत नहीं, जितनी संस्कृति की।

• भारतीय संस्कृति एवं मानवता को आज सिंहों से नहीं, नरसिंहों से ज्यादा खतरा है।

• हमारे बीच आपस में मतभेद भले ही हो जाये, पर मनभेद नहीं होना चाहिए।

• जो व्यक्ति कर्तव्य के प्रति निष्ठावान है, प्रतिष्ठा उसके पीछे भागती है।

• परोपकार की वेदी पर चढ़ाया गया फल कभी निष्फल नहीं ज़ाता।

• सर्वोदयी समाज निर्माण में आचार्यों का विशिष्ट महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

• किसी कार्य में समय देना तन, मन, धन से भी अधिक मूल्यवान है।

• सफलता उसके चरण चूमती है, जो निरन्तर परिश्रम करता है।

• उत्साह जीवन की वह सम्पदा है जो संसार की किसी भी वस्तु को खरीद सकता है।

• हमें दूसरों के गुणों की प्रशंसा करनी चाहिए, निन्दा बुराई करके हम व्यर्थ ही अपने मुख को खराब करते हैं।

• गुणवान गुणियोंको आदर देते हैं, क्योंकि उन्हें गुणों की महत्ता मालूम है।

• अहंकारी का ही अधोगमन होता है, विनयी हमेशा ऊर्ध्वगामी होता है।

• बड़प्पन वही है जो सही को स्वीकार करे।

• आज दूरदर्शन की उतनी आवश्यकता नही है जितनी दूरदृष्टि रखने की।

• जो अतिथि सत्कार को बेचैन रहता है उससे कई गुना बेचैन होकर पुण्य उसकी खोज करता है।

• समाज में सेवा का असीम महत्व है। आचार्यश्री कहते हैं कि -

• वास्तव में दूसरे की सेवा करने में हम अपनी ही वेदना मिटाते हैं। दूसरों की सेवा में निमित्त बनकर अपने अन्तरंग में उतरना ही सबसे बड़ी सेवा है। - महाकवि आ. विद्यासागर ग्रन्थावली, खण्ड 4

• धर्मवृक्ष से गुजरी हुई सद्भावना की हवा सभी को स्वस्थ एवंसुन्दर बनाती है।

- अनमोल वचन

• स्वतन्त्रता यदि हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, तो प्राणी रक्षा हमारा धार्मिक अधिकार है।

- विद्यावाणी -18

5. शैक्षिक विकास के स्वर -

• अपने लोचनों को इतना विशाल बनाओ कि विश्वलोचन बन जाएं। - विद्यावाणी -34

• शब्द अर्थ नहीं है, वह तो अर्थ की ओर ले जाने वाला संकेत है। - अनमोल वचन

• शब्दों के माध्यम से मन जितना-जितना अर्थ की ओर जाता है उसकी एकाग्रता उतनी ही बढ़ती है।

• शब्द छोटे-छोटे हो सकते हैं लेकिन अर्थ कभी भी छोटा नहीं होता। - अनमोल वचन

• दूसरे के जीवन से हमें अपने हित के लिए सारभूत बात को ग्रहण कर लेना चाहिए।

• भाषा की परिभाषा बनायी जा सकती है, भावों की नहीं। - अनमोल वचन

जीवन में शिक्षा गुरु का बड़ा महत्व है।

• जैसे माँ अपने बच्चे को बड़े प्रेम से दूध पिलाती है, वैसी ही मनोदशा होती है। बहुश्रुतवान् उपाध्याय महाराज की। अपने पास आने वाले को वे बताते हैं कि संसार की प्रक्रिया से दूर रहने बचने का ढंग और उनका प्रभाव भी पड़ता है क्योंकि वे स्वयं उस प्रक्रिया की साक्षात प्रतिमूर्ति होते हैं।

- महाकवि आ. विद्यासागर ग्रन्थावली खण्ड-4

• स्वच्छन्दता आने पर राजनीति, समाजनीति सारी की सारी बिगड़ जाती है।

- विद्यावाणी 408

• शब्द अर्थ नहीं है वह तो अर्थ की ओर ले जाने वाला संकेतमात्र है।

• निर्भीकता, गम्भीरता व मधुरता से बोला गया शब्द ही प्रभावक होता है।

• आज श्रोता की स्थिति उस माइक के समान है जो सुनता तो सबसे पहले है किन्तु उस सुने हुए को अपने पास नहीं रखता, तुरन्त ही दूसरों तक पहुँचा देता है। - सागर बूंद समाय

• बहुत नहीं बार-बार पढ़ने से ज्ञान का विकास होता है।

• वही पढ़ों, वही सीखो, वही करो, जिसमें उपसंकार में आत्मा सुख-शांति का अनुभव कर सके।

• कैंची नहीं सुई बनो, क्योंकि कैंची का काम है काटना और सुई का काम है जोड़ना।

• अच्छे कार्य करने से ही अच्छे पद मिला करते हैं, बुरे कार्य करने से कभी भी अच्छे पद नहीं मिलते।

6. राष्ट्रीय एकता के स्वर-

• कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति ही देश और धर्म की सुरक्षा कर सकता है।

• देश के प्रति गौरव, बहुमान एवं अपनत्व के द्वारा ही लोकतन्त्र की नींव सुरक्षित रहेगी।

• जो व्यक्ति न्याय का पक्ष लेता है वह अन्याय को ही नहीं, वरन् समस्त विश्व को झुका सकता है अपने चरणों में।

• देश में एकता, शांति और संस्कृति के संरक्षणार्थ जो कदम उठाए जाएं वे सब स्वाग्त योग्य हैं।

• जिस प्रकार दानवीर भामाशाह ने अपनी न्यायोपार्जित संपत्ति को न्यौछावर कर राष्ट्र सुरक्षा संवृद्धि के लिए योगदान दिया उसी प्रकार आज भी प्रत्येक राष्ट्रभक्त श्रावक के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देश की रक्षा करनी चाहिए।

• देश के काले धन को विदेशी बैंकों में जमा करना और व्यक्तिगत पूंजी बना लेना राष्ट्र की नींव को कमजोर करना है।

• पारस्परिक सौहार्द्र एवं समन्वय से ही देश की एकता और अखंडता कायम रह सकती है।

• देश के प्रति वफादार होना ही राष्ट्र के प्रति सच्ची कृतज्ञता है।

• धर्माराधन के लिए शासकीय अनुकूलताएं होना भी जरूरी हैं प्रशासक यदि धर्म का पक्षधर हो तो राजा को राज्य में रहने वाले तपस्वियों के तप का छठवां भाग सहज ही मिल जाता है। ■

बुज़ुर्गो की सीख

बचपन में बताते थे पिताजी गुरुधाम सत्य है।
यौवन में बताते हैं पिताजी अर्थकाम सत्य है।
जब तन की अयोध्या से निकल जाते है राम
तब सब लोग बताते है जिनराज नाम सत्य है। राम-राम सत्य है।
तब सब लोग बताते है जिनराज नाम सत्य है। राम-राम सत्य है।
भगवान की मुसीबत
अल्लाह जो बताते सही काम
मुसलमान घेर अड़ते
राम बतलाते सही काम
हिन्दू घेर अड़ते
पानी बरसाते हो तो
महाजन सुनाते खरी
नहीं ब़रसाते तो
किसान घेर अड़ते
अच्छा करते हो मोक्षनगरी में विराजें हो नाथ
धरती पर होते तो बड़ी उलझन में पड़ते।

• **वीरेन्द्र भूपत** कंठाली बाजार, सिरोंज •

मडावरा में उत्साहपूर्वक मनाया गया रक्षाबन्धन पर्व

मडावरा (ललितपुर)। वर्णीनगर मडावरा में संत शिरोमणि आचार्य श्रेष्ठ 108विद्यासागरजी महाराज की परम प्रभावक शिष्या आर्यिका रत्न 105 ऋजुमति माताजी ससंघ के पावन सान्निध्य में नगर की हृदय स्थली श्री महावीर विद्याविहार के परिसर में वात्सल्य व मुनियों की रक्षा का महापर्व रक्षाबंधन का पर्व बड़े ही हर्ष व उत्साह के साथ मनाया गया। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आर्यिकाश्री ने कहा कि रक्षाबंधन पर्व वात्सल्य व सात सौ मुनियों की रक्षा का पर्व है। इसी दिन विष्णुकुमार मुनि द्वारा 700 मुनियों का उपसर्ग दूर किया गया था मुनियों की रक्षा हुई इस कारण से जैन धर्मावलंबियों ने रक्षाबंधन का पर्व मनाना शुरु किया। जैन धर्म का सबसे बड़ा ही वात्सल्य का पर्व है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
अगस्त 2017
भगवान बनेंगे ऐसे

प्रथम-

विद्या गुरु का हाथ लगा जब
पाषाण पूज्य बन जाता है तब
बने अचेतन चेतन जैसे
देखो भगवान बनेंगे ऐसे

- श्रीमती इन्द्रा जैन, इन्दौर

द्वितीय -

पंच कल्याण का है उत्सव
भगवान बनाने का है महोत्सव
सोचे सब भगवान बने अब कैसे
शरु करते हैं भगवान बनेंगे ऐसे

-श्रीमती रश्मि जैन, सागर

तृतीय -

सम्यक् दर्शन का है साधन
जिन बिम्ब बने हैं मुक्ति साधन
नमन करेगा जो भी जैसे
एक दिन भगवान बनेंगे ऐसे

-श्रीमती कांता जैन, इन्दौर

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
जुलाई 2017

प्रथम : श्रीमती कान्ता जैन, मदनगंज-किशनगढ़(राज.)
द्वितीय : शांतिदेवी पाटनी, नागपुर (महा.)
तृतीय :श्रीमती रजनी सेठ, सागर(म.प्र.)

वर्ग पहेली क्र. 219
ज़ुलाई 2017 के विजेता

प्रथम : श्रीमती कुसुम जैन, खनियाधाना (म.प्र.)
द्वितीय : चित्रा जैन, रेवाड़ी (हरियाणा)
तृतीय : श्रीमती रूचि जैन, दिल्ली

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : अगस्त 2017 का हल

1. डॉ. मीना जैन
2. पंचबालयति मंदिर इन्दौर
3. विद्या की तड़पन
4. वाहन का त्याग
5. आचार्य ज्ञानसागर
6. मदनगंज किशनगढ़
7. सातप्रतिमाधारी
8. श्री मूलचंद लुहाड़िया
9. कजौडीमल लुहाड़िया
10. दो दिन के
11. 8 भाषा
12. चार शतक
13. सात शतक
14. रयण मंजूषा
15. गुणोदय
16. निजामृतपान
17. समन्तभद्र की भद्रता
18. छः ग्रन्थों
19. ज्वर आत्मा में नहीं
20. श्रीमती श्रीमतीजी
21. अपने समय से जाती
22. दो बार
23.
4. तीर्थंकर प्रकृति
5. छठेंअध्याय के 24 वें सूत्र
6. ब्र. जिनेश मलैया
27. 23 मई 1977
28. 18 जून जून 1977
29. 4 आचार्यों की
30. सन् 1971 में
31. सन् 1971 में
32. सन् 1971में
33. सन् 1973 में
34. 9 वर्ष की उम्र में
35. आचार्यदेशभूषण महाराज
36. श्री मलप्पाजी अष्टगे
37. श्रीमती श्रीमतीजी
38. मुनिश्री मल्लिसागरजी
39. आर्यिका समयमतिजी
40. महावीर भैया
41. दो सगे भाइयों ने
42. तीन आत्माओं का
43.
44. डॉ. माया जैन
45. डॉ. सुनीता दुबे(विदिशा)
46. डॉ. रमाशंकर दीक्षित,
47. डॉ. भागचंद भास्कर, नागपुर
48. डॉ. सुधीर जैन, सागर
49. डॉ. किरण जैन, सागर
50. डॉ. रश्मि जैन, बीना

पुराण प्रेरणा

कुल दीपिका

पतिं समातृकं हत्वा संप्राप्ता नरकक्षितिम्।
तथा ते कथमुत्पन्ना कुबुद्धि पापपाकतः ।।
माता सहित पति को मारकर वह नरक गई। वे पाप के परिणाम कैसे उत्पन्न हुए ? नीति है पाप के फल से कुबुद्धि होती है।

सुखी दुःखी कुरूपी च निर्धनो धनवानपि।
पिता दत्तो वरो योऽसौ स सेव्यः कुल योषिताम्।।
सुखी दुखी कुरूपी निर्धन और धनवान जिस वर को पिता ने दिया है, कुल स्त्रियों को उसी का सेवन करना चाहिये।

भर्ता ते भूपति मान्द्यो रूपादिगुण संचयैः।
तस्य किम् क्रियते देवि वञ्चनं पापकारणम्।।
तुम्हारा पति राजा हो, रूपादि गुणों के समूह से मान्य है, पाप के कारण स्वरूप उसकी वञ्चना क्यों करती हो।

भद्रं न चिन्तितम् भद्रे त्वयेदं कर्म निन्दितम्।
तस्मात्स्व कुल रक्षार्थं स्वचित्तम त्वम् वशीकुरु ।।
भद्र जीव चिन्ता नहीं करते हैं आपका यह कथन है कि कर्म की निन्दा करते हैं इसलिये स्वकुल की रक्षा के लिये अपने मन को वश में करें।

तथा त्वम स्मर भो पुत्रि सुशीला सार योषितः।
तीर्थेशां जननी सीता चन्दना द्रौपति मुखाः ।।
इसी प्रकार हे पुत्री ! सुशीला सार रूप सीता चन्द्रना तथा द्रोपति प्रमुख स्त्रियों का स्मरण करो।

नीली प्रभावती कन्या दिव्यानन्तमती मुखाः।
यः स्वशील प्रभावेन पूजिता नृसुरादिभिः ।।
नीली प्रभावती तथा अनन्तमती प्रमुख कन्याओं का स्मरण करो जो अपने शील के प्रभाव से मनुष्य और देवों आदि के द्वारा पूजित हुई।

■

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. म आ स आ ग अ र ज्ञ क्ष
2. ज र् अ स आ ग अ र अ अ व आ
3. द र् अ ग अ स आ र अ व अ मा
4. प् त इ ग अ स आ र अ गु
5. ख अ सा र अ आ ग अ सु

परिणाम : अगस्त 2017: (1) विद्याधर से विद्यासागर (2) समयोपदेश (3) समयोपदेश (4) चेतना के गहराव मे (5) तोता क्यों रोता

कैरियर

पानी की परख में उजली संभावनाएं

वॉटर साइंस यानी जल विज्ञान अपने आप में साइंस की एक बड़ी शाखा है। इसमें न सिर्फ वॉटर साइकिल का अध्ययन किया जाता है बल्कि रिसर्च करके अलग-अलग जगहों पर पानी से जुड़ी समस्याओं को दूर करने के विकल्प तलाशे जाते हैं आज दुनिया का शायद ही ऐसा कोई देश हो जो पानी से जुड़ी किसी समस्या से ग्रस्त न हो। ऐसे मेंएक वॉटर साइंटिस्ट के लिये हर जगह संभावनाएं है। यह एक ऐसी फील्ड है जो आपके करियर में चार चांद लगा सकती है। अगर आपको रिसर्च बेस्ड केरियर में रूचि है तो आप इस फील्ड में करियर बना सकते हैं आपको जितना अनुभव होगा,आगे बढ़ने के उतने ही अवसर मिलेंगे।

क्या है वॉटर साइंस ? -वॉटर साइंस पानी की जमीन और भूमिगत प्रोसेस से संबद्ध विज्ञान है। इसमें धरती पर मौजूद पहाड़ों और खनिजों के साथ पानी की भौतिक रासायनिक और जैविक क्रिया तथा विभिन्न जीवों के साथ इसकी एनालिसिस शामिलहै। वॉटर साइंस का अध्ययन करने वाले विशेषज्ञ ही वॉटर साइंटिस्ट कहलाते हैं। वॉटर साइंस के क्षेत्र में हाइड्रोमिटयोरोलाजी , भूतल वॉटर साइंस, हाइड्रो जियोलॉजी,ड्रेनेज बेसिन, मैनेजमेन्ट और जल गुणवत्ता से जुड़े विषय आते हैं। इसकी कई शाखाएं हैं। जैसे केमिकल वॉटर साइंस इकोलॉजिकल वॉटर साइंस हाइड्रो फारमेटिक्स वॉटर साइंस।

भविष्य की संभावनायें -वॉटर साइंटिस्ट बनकर आप विभिन्न प्रकार के संस्थानों के लिये काम करके अच्छी सैलेरी पा सकते हैं। सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं में वॉटर साइंटिस्ट को अच्छे पैकेज पर नियुक्त किया जा सकता है। इसके अलावा आप काउंसलर के रूप में भी काम कर सकते हैं। जैसे सिविल इंजीनियरिंग, एन्वायरमेन्टल मैनेजमेन्ट और इवैल्युएशन में सेवायें उपलब्ध कराना। इसके अलावा आप नई एनालिटिकल टेक्नीक्स के जरिए टीचिंग और रिचर्स भी कर सकते हैं। यूटिलिटि कंपनियों और कंपनियों और सार्वजनिक प्राधिकरणों के साथ जुड़कर जलापूर्ति और सीवरेज संबंधी सेवायें प्रदान कर सकते हैं।

जरूरी स्किल्स - वॉटर रिसोसेंज डेवल्पमेन्ट और मैनेजमेन्ट में करियर बनाने के लिये आप में धैर्य, दृढ़ निश्चय, विस्तृत और अच्छी एनालिटिकल स्किल होना बहुत जरूरी है। इसके साथ ही टीम वर्क की भावना और प्रभावी कम्युनिकेशन इस फील्ड में रहने के लिये जरूरी है।

कौन-से कोर्स - देश भर में कई यूनिवर्सिटीज वॉटर साइंस और रिर्सोसेज जैसे विषयों में ग्रेजुएशन कोर्स कराती है।वॉटर साइंस में करियर बनाने के लिये आप इस विषय से बीएससी करने के बाद एमएससी करने के बाद, एमसी और पी.एच.डी या एमफिल कर सकते हैं।

सैलेरी - वॉटर साइंटिस्ट के रूप में अपने करियर की शुरुआत में आप 18 से 20 हजार रुपये तक कमा सकते हैं। इस फील्ड में अनुभव काफी मायने रखता है।

■

दुनिया भर की बातें

जुलाई 2017

■ 1 जुलाई

- श्रीनगर : दक्षिण कश्मीर में ब्रेंठी दियालग्राम में सुरक्षा बलों ने 9 घंटे की मुठभेड़ में अ़च्छाबल हमले के मास्टर माइंट बशीर लश्करी उर्फ उकाशा और उसके पाकिस्तानी अबू माज को मार गिराया।

- पाकिस्तान पर अन्तर्राष्ट्रीय दबाव काअसर हुआ हाफिज सईद के संगठन तहरीक ए आजादी जम्मू और कश्मीर पर प्रतिबंध लगा।

- अमेरिका के एक अस्पताल में गोलीबारी में एक महिला डॉक्टर की मौत हुई 6 घायल हुए।

■ 2 जुलाई

- दुनिया का सबसे पतला लेजर वैज्ञानिकों ने विकसित किया।

- पाकिस्तान ने भारतीय नागरिक कुलभूषण जाधव तक राजनयिक पहुँच की भारत की माँग को ठुकराया।

- भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने पाकिस्तान को 95 रन से हरा दिया।

■ 3 जुलाई

- जम्मू कश्मीर के पुलवामा जिले में सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ मे ंदो आतंकवादी ढेर हुए।

- नये चुनाव आयोग के मुख्य चुनाव आयुक्त कुमार ज्योति होंगे।

- हिजबुल मुजाहिदिन चीफ सैयद सलाहुद्दीन ने कहा कि भारत में कहीं भी हमला करवा सकता हूँ।

■ 4 जुलाई

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 70 वर्ष बाद पहले प्रधानमंत्री है जिन्होंने पहली बार इजरायल यात्रा की।

- भोपाल-जोधपुर एक्सप्रेस फास्ट पैसेन्जर बनी।

- पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाजशरीफ के बडे बेटे हुसैन नवाज पनामा पेपर मामले में जेआईटी के समक्ष उपस्थित हुए।

■ 5 जुलाई

- भारत इजरायल के बीच 7 अहं समझौते हुए गंगासफाई से अंतरिक्ष में योगदान मुख्य है।

- चीन ने भारत को धमकी दी कि, यदि भारत ने सेना नहीं हटाई तो खदेड़ देंगे।

- चंडीगढ़ : पंजाब एण्ड हरियाणा हाईकोर्ट ने आशुतोष महाराज के शरीर को सुरक्षित रखने का आदेश दिया।

■ 6 जुलाई

- सबरीमाला के मंदिर में रखी दान पेटी में 20 रूपये का पाकिस्तानी नोट निकला।

- जोधपुर के बालेसर में मिग-23 गिरा दोनों पायलट सुरक्षित रहें।

- वेनेजुएला में विपक्षी नेताओं के साथ संसद पिटाई हुई सिर में चोट लगने से एक सांसद बेहोश हुए।

■ 7 जुलाई

- हैम्बर्ग : ब्रिक्स बैठक में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चीन के राष्ट्रपति शीजिन पिंग की अनौपचारिक मुलाकात हुई गर्मजोशी से हाथ मिलाया और एक दूजे की तारीफ की।

- दिल्ली-वाशिंगटन डीसी के बीच एयर

इंडिया की पहली उड़ान अमेरिका पहुँची।

सऊदी अरब के पूर्वी प्रांत में आतंकी हमला हुआ गश्ती दल पर हमले में 1 जवान की मौत हुई 6 घायल हुए।

■ 8 जुलाई

- भारतवंशी श्याम गोलाकोटा समेत वॉशिंगटन यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने बैटरी रहित सेलफोन बनाया।

- गोवा कांग्रेस के अधिकारिक वाट्सएप मीडिया ग्रुप पर एक पोर्न क्लिप गलती से पोस्ट हुई।

हिजबुल मुजाहीदिन कमांडर आतंकी बुरहान वानी की बरसी पर कश्मीर के 3 शहरों में कर्फ्यू लागू हुआ। अमरनाथ यात्रा स्थगित रही।

■ 9 जुलाई

- गोरखालैंड के समर्थकों ने दार्जिलिंग हिल्स के पोकरीबोंग में पुलिस कैम्प में आग लगा दी। चार पुलिसवाले जख्मी हो गए।

- डोकलाम क्षेत्र में जारी तनाव के बीच चीन के आक्रमण रूख को नकारते हुए भारतीय सैनिकों ने वहाँ तम्बू गाड़ लिए है।

- तेहरान, ईरान में सेंसरशिप के बावजूद किताबों का गार्डन खुला है।

■ 10 जुलाई

- क़श्मीर के अनंतनाग में आतंकियों ने अमरनाथ यात्रियों की बस हमला किया। 4 श्रद्धालुओं की मौत हुई 12 गम्भीर घायल हुये।

- नागपुरः वेना बांध में पिकनिक मनाने गये युवकों की सेल्फी के चक्कर में नाव पलटी 4 युवक डूबे।

- मुजफ्फरनगर : जम्मू कश्मीर पुलिस ने लश्कर आतंकी संदीप शर्मा उर्फ आदिल और मुनीष शाह को गिरफ्तार किया।

■ 11 मई

वारेन बफेट ने एक दिन में 20400 करोड़ रुपये का दान देकर सबसे बड़े दानी बने।

- नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने चीनी मांझे एवं सिंथेटिक मांझे पर रोक देशभर में लगाई।

- अरुणाचल प्रदेश के पापुम जिले में भूस्खलन होने से 14 लोग मरे।

- मिसिसिमी के पास एक कार्गो प्लेन क्रेश हो जाने से 16 लोग मरे ये सभी लोग मरीन है।

■ 12 जुलाई

- शहला मसूद हत्याकांड में जमानत मिलने के 6 दिन बाद जाहिदा जेल से बाहर आई।

- भारतीय कप्तान मिताली राज वन-डे में सबसे ज्यादा रन बनाने वाली महिला क्रिकेटर बनी उन्होंने इंग्लैंड की चार्लोट एडवर्ड्स को पीछे छोड़ा।

■ 13 जुलाई

- झारखंड के आयकर आयुक्त तापसकुमार दत्ता को सीबीआई ने भ्रष्टाचार मामले में गिरफ्तार किया।

- केन्द्र सरकार ने फैसला किया कि छोटे हथियारों की खरीद सीधे सेना करेगी।

- ब्राजील के पूर्व राष्ट्रपति लुईज इनीसियो लुला डीसिल्वा को भ्रष्टाचार के मामले में साढ़े नौ साल की सजा हुई।

■ 14 जुलाई

- महाराष्ट्र के मराठावाड़ क्षेत्र के किसानों ने मौसम विभाग पर गलत जानकारी देने के आरोपमें पुलिस शिकायत दर्ज करायी।

- साइबर सेल ने दो माह से फरार ऑनलाइन सेक्स रैकेट का सरगना सुभाष ऊर्फ वीरे उर्फ वीरा द्विवेदी को गिरफ्तार किया वह 700 लड़कियों में धंध में धकेल चुका है।

- उत्तरप्रदेश की विधानसभा में 150 ग्राम आरडीएक्स विस्फोटक मिला।

■ 15 जुलाई

- जम्मू कश्मीर के महबूबा मुफ्ती मुख्यमंत्री ने कहा चीन कश्मीर में दखल दे रहा है।

- अमेरिका की संसद ने भारत से संबंध बढ़ाने संबंधी संशोधन विधेयक पेश किया।

- अंकारा (तुर्की) पिछले साल सैन्य तख्ता पलट में शामिल 7000 सरकारी कर्मचारी बर्खास्त किये।

■ 16 जुलाई

- जम्मू कश्मीर के बनिहाल के पास रामवन में अमरनाथ यात्रियों की बस 100 फुट गहरी खाई में गिर गई। 17 यात्री मरे 35 घायल हुए।

- जम्मू कश्मीर में हिजबुल का साथ देने वाले 7 आतंकियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

- पाकसेना ने राजौरी और पूंछ सेक्टर में गोला दागे जिससे सेना नायक मुदस्सर अहमद शहीद हुए तथा एक बच्ची की मौत हुई।

■ 17 जुलाई

- जम्मू कश्मीर के बनिहाल के पास रामवन में अमरनाथ यात्रियों की बस 100 फुट गहरी खाई में गिर गई। 17 यात्री मरे 35 घायल हुए।

- जम्मू कश्मीर में हिजबुल का साथ देने वाले 7 आतंकियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

- पाकसेना ने राजौरी और पूंछ सेक्टर में गोला दागे जिससे सेना नायक मुदस्सर अहमद शहीद हुए तथा एक बच्ची की मौत हुई।

■ 18 जुलाई

- टीम इंडिया के मुख्य कोच रवि शास्त्री ने भरत अरुण को अधिकारिक तौर पर गेंदबाजी का कोच बनाया।

- बसपा सुप्रीमो मायावती को राज्य सभा सदन में बोलने का समय नहीं तो उन्होंने अपना इस्तीफा दिया।

- स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक के परपोते रोहित तिलक के खिलाफ दुष्कर्म का मामला दर्ज हुआ

■ 19 जुलाई

- चीन की सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने सदस्यों से कहा कि धर्म छोड़ों या फिर सजा भुगतने तैय्यार रहो देश भर में पार्टी के 9 करोड़ सदस्य है।

- लंदन : भगौड़ा विजय माल्या के खिलाफ सबूत देने ईडी और सीबीआई की संयुक्त टीम लंदन पहुँची।

- सऊदी अरब में मिनी स्कर्ट टाप पहनने पर युवती को गिरफ्तार कर लिया गया।

■ 20 जुलाई

- रामनाथ कोविन्द ने 65.65 मत प्राप्त करके राष्ट्रपति पद का चुनाव जीता मीराकुमार को 3435 मत मिले।

-मिशिगन में एक महिला ग्लेन्ना की तोते की गवाही के आधार पर अदालत ने पति की हत्या का दोषी माना गया।

- नाथूराम गोडसे से महात्मा गांधी को बचाने वाले भीकू दाजी भिलारे गुरुजी का निधन हुआ वे 95 वर्ष के थे।

■ 21 जुलाई

- गुजरात पूर्व मुख्यमंत्री शंकरसिंह बघेला ने कांग्रेस छोड़ी।

- जम्मू कश्मी के पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला ने कश्मीर विवाद को हवा दी कहा कि कश्मीर पर भारत, चीन, अमेरिका की मदद ले।

- तुर्की-यूनान में 6.7 तीव्रता से भूकम्प के झटका आये दो मरे 450 घायल हुए।

■ 22 जुलाई

- करम ज्योति दलाल ने विश्व पैरा एथलेटिक्स में कांस्य पदक जीता।

- दुष्कर्म के आरोपी केरल के कांग्रेसी विधायक एम.विसेन्ट गिरफ्तार हुए।

■ 23 जुलाई

- राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी का आज आखिरी दिन भावभीनी विदाई दी गई।

- विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत सरकार की पहल पर 20 लाख लोगों ने तम्बाकू छोड़ी।

- इंडोनेशिया में नशे के कारोबारियों को गोली मारने का आदेश दिया गया।

■ 24 मई

- स्पीकर के सामने कागज फाड़कर उछालने वाले कांग्रेस के 6 सांसदों को निलंबित किया गया।

- टेरर फंडिंग मामले में राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने गिलानी के दामाद सहित 7 हुर्रियत अलगाववादियों को गिरफ्तार किया।

- निठारी कांड (दुष्कर्म हत्या अपहरण मामले में मनिंदर सिंह पेंढर, सुरेन्द्र कोली को स्पेशल कोर्ट ने फांसी की सजा सुनाई।

■ 25 जुलाई

- मुम्बई : घाटकोपर इलाके में सांई दर्शन अपार्टमेन्ट नाम की बिल्डिंग गिरी 8 लोग मरे 16 को सही सलामत निकाला।

- यूजीसी के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. यशपाल का निधान हुआ वे 90 वर्ष के थे।

- रामनाथ कोविंद देश के 14 वें राष्ट्रपति बने। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस जे एस खेहर ने उन्हें शपथ दिलाई।

■ 26 जुलाई

- बिहार के मुख्यमंत्री नीतिशकुमार ने इस्तीफा दिया दो घंटे बाद नीतिशकुमार को भाजपा ने समर्थन दिया।

- दिल्ली हाईकोर्ट ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल पर अरुण जेटली के मानहानि मामले में जवाब न देने पर 10000 रुपया जुर्माना हुए।

- मुरैना : व्यापमं मामले में आरोपी बनाये गये प्रवीण यादव को फांसी लगाई। वह 30 वर्ष का था। अगले दिन उसकी पेशी हाईकोर्ट में थी।

■ 27 जुलाई

- भारत ने श्रीलंका के खिलाफ क्रिकेट टेस्ट मैच की पहली पारी में 600 रन बनाये।

- गुजरात विधानसभा के कांग्रेस पार्टी के मुख्य सचेतक बलवंत सिंह राजपूत सहित तीन विधायकों ने पद से इस्तीफा दिया और भाजपा में शामिल हुए।

- कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री एवं 7 बार विधायक बने एन धरमसिंह का निधन हुआ वे 80 वर्ष के थे।

■ 28 जुलाई

- इस्लामाबाद : प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को सुप्रीम कोर्ट ने पनामा पेपर्स मामले में बेईमान घोषित करते हुए पद से हटाया उनके छोटे भाई शाहबाज शरीफ प्रधानमंत्री बने।

- भोपाल /नई दिल्ली :म.प्र. के जन सम्पर्क मंत्री नरोनत्तम मिश्रा को पेड न्यूज मामले में सुप्रीम कोर्ट से राहत मिली।

- फिल्मी अभिनेता इंद्रकुमार का हार्ट अटैक से निधन हुआ वे 45 वर्ष के थे।

■ 29 जुलाई

- भारत ने श्रीलंका को 304 रन से मैच हराया।

- श्रीलंका ने हबन टोटा बंदरगाह चीन को 72अरब रुपये में बेचा।

- लखनऊ : सपा बसपा के चार एम.एल.सी. भाजपा में शामिल हुए।

■ 30 जुलाई

- पोरबंदर : समुद्री इलाके कच्छ में कोस्टगार्ड ने चलाये गये स्पेशल अभियान में 1500 किलोग्राम हेरोइन बरामद की गई। 3500 करोड रुपये मूल्य आंका गया।

- तिरुवंतपुरम् : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता ई. राजेश की हत्या कर दी। 6 आरोपी गिरफ्तार हुए।

■ 31 जुलाई

- पुणे : प्रख्यात ध्रपद गायक उस्ताद सईदुद्दीन डागर का निधन हुआ व 78 वर्ष के थे।

- मुंबई : मोबाइल गेम का ब्लू व्हेल गेम के 50 वें लेवल पूरा करने के लिए मनप्रीत ने 6 मंजिल से कूद गया। रुस में गेम मेकर फिलिप को जेल भेजा गया।

- बर्लिन : 22 केवल कार 40 मीटर ऊंचाई पर अटकी, 5 घंटे के रेस्कयू के बाद सौ लोगों को सुरक्षित निकाला। ■

डाक टिकटों का जैन इतिहास

आचार्य श्री आनंदऋषिजी महाराज

• सुरेश जैन, लुधियाना •

पूज्य श्री आनंदऋषिजी महाराज का जन्म महाराष्ट्र प्रान्त में अहमदनगर के समीप चिंचौड़ी ग्राम में 26 जुलाई सन् 1900 को हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमती हुलासाबाई तथा पिता का नाम श्री देवीचंदजी गुगलिया था। बचपन में इनका नाम नेमीचन्द रखा गया, पिता के देहावसान का कारुण्य दृश्य जो इन्होंने अपनी आंखों से खुद देखा था तथा माताजी की धर्ममयी शिक्षाएं नेमीचंद को संसार से विरक्ति के मुख्य कारण बने। जिस उम्र में खेलना, कूदना, मस्ती करना होता है उसी शैशवकाल में नेमीचंद संत समागम में भजन कीर्तन में, अध्यात्म की ओर लीन रहने लगे। उम्र के केवल 13 वें साल में माता ने केवल एक लाईन लिख कर दीक्षित होने की आज्ञा दे दी तथा पूज्य श्री रत्नऋषि जी म. के सान्निध्य में मिरी ग्राम में दीक्षा ग्रहण करने के बाद नेमीचंद से आनंदऋषि बन गए। दीक्षा ग्रहण कर संत जीवन में प्रवेश करते ही इन्होंने जैन तथा जैनेत्तर आगमों व धर्म ग्रन्थों का गहन अध्ययन शुरु किया, जैन धर्मग्रन्थों के साथ-साथ संस्कृत प्राचीन दार्शनिक ग्रन्थों पर भी सुविज्ञता हासिल की। इन्होंने मराठी और हिन्दी में व्यापक रूप से लेखन कार्य किया। कठोरतम अनुशासन में रहने तथा शास्त्रों का गहन अध्ययन करने के कारण इनके धार्मिक जीवन में बड़ा निखार आया। सारी उम्र के लिए इन्होंने ब्रह्मचर्य का व्रत लिया। अध्यात्म की खोज व मानवता की सेवा में जीवन बिताने के अपने दृढ़ संकल्प को औपचारिक रूप दिया।

सन् 1927 से 1931 तक इनकी अनेक बड़े-बड़े संतों से धार्मिक विषयों पर वार्ता होती रहती थी तथा सब इनकी बुद्धि के कायल हो जाते थे। इन की तीक्ष्ण बुद्धि को देख कर इन्हें ऋषि सम्प्रदाय ने सन् 1936 में युवाचार्य तथा सन् 1942 में आचार्य नियुक्त किया। वे जीवन की जिस ऊंचाई पर पहुँचे, सहज में ही नहीं पहुंचे थे, दीर्घकाल तक तपस्या तथा यथार्थ की कठोर असिधारा पर चलकर इन्होंने जीवन का निर्माण किया। छोटा कद, सादा जीवन, खादी के वस्त्र, ऊंची सोच, गहरा अध्ययन, समन्वयात्मक प्रकृति, दीर्घ दृष्टा, धीरता, वीरता तथा गम्भीरता के संगम थे वे।

आचार्य श्री आनंदऋषि जी ने समाज-संगठन की लक्ष्य में रख कर अपने सम्प्रदाय के मोह को छोड़कर, संघ को, साधु समाज को एक सूत्र में पिरोने के लिए, संगठित करने

के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी। वह जहाँ भी जाते साथी मुनिराजों के साथ संघ को, समाज को संगठन का पाठ पढ़ाने लगते। संगठन का शंखनाद समाज में असर लाया, परिणामस्वरूप कई सम्मेलन व गोष्ठियाँ हुई, विचार-विमर्श दीर्घकाल तक चलता रहा, अंत में युगान्तकारी घटना हुई।

श्रमण संघ का जन्म हुआ। साधु समाज के इतिहास में यह एक महान घटना थी। विघटन और साम्प्रदायिकता के युग में श्रमण संघ का जन्म होना, अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि थी। इसके फलस्वरूप सन् 1952 में सादड़ी (राजस्थान) में साधु सम्मेलन हुआ, जिसमें करीब-करीब समाज के समस्त सम्प्रदायों के प्रमुख संतों ने भाग लिया और फैसला हुआ कि किसी एक संत को प्रधानाचार्य चुना जाए। सबसे पहले श्रमण संघ के गठन के लिए समुदाय का आचार्य पद त्यागने वाले श्री आनंदऋषि जी थे। इसके बाद एक-एक सम्प्रदाय के आचार्य ने भी अपने पद का विसर्जन कर दिया और सब ने मिलकर इस विशाल संघ के प्रथम आचार्य पद का भार आगम दिवाकर, समता योगी आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज को सर्वानुमति से सौंपा, इसी साधु सम्मेलन में श्री आनंदऋषि जी महाराज को उनकी योग्यता के कारण वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त किया गया। आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज के देवलोक गमन के उपरान्त समस्त समाज तथा संतों ने एक स्वर से प्रधान आचार्य पद के लिए श्री श्री आनंदऋषि जी के नाम का अनुमोदन किया तथा 13 मई 1964 को इन्हें आचार्य सम्राट पद की चादर अमजेर में देकर द्वितीय पट्टधर आचार्य पद से विभूषित किया गया। आचार्यश्री जी ने अपनी दूरदर्शिता, कार्य कुशलता से श्रमण संघ को एकता सूत्र में आबद्ध किया।

आचार्य बनने के बाद इन्होंने महाराष्ट्र से लेकर जम्मू-कश्मीर तक भ्रमण किया तथा जगह-जगह चातुर्मास किये। आचार्य श्रीजी को अपनी मातृभाषा या मराठी सहित 9 भाषाओं का ज्ञान था, जिसमें उर्दू भाषा का ज्ञान 83 वर्ष की आयु में धरती पर बैठकर एक मौलवी से प्राप्त किया। इनके पांव के मध्य में पद्म का चिन्ह था, वह सिर्फ अपने उन अनुयायियों को दिखाते थे जो अपनी कोई भी बुरी आदत को छोड़ दे या जीवन भर के लिए कोई भी प्रण ले लें।

आनंदऋषिजी महाराज ने अपने जीवन काल में 15 संस्थाओं की स्थापना की, जिनमें श्री रत्न जैन पुस्तकालय, श्री त्रिलोक जैन विद्यालय और श्री अमोल सिद्धांतशाला, पाथर्डी (अहमदनगर) के इलावा पूना अस्पताल में ब्लड बैंक और पुणे में आनंद प्रतिष्ठान नामक एक मानवीय संस्था शामिल हैं। समाज के कमजोर गरीब वर्गों के लिए हाईस्कूल, कालेज और छात्रालय प्रारंभ

किए। प्राकृत भाषा को महत्त्व देकर प्राकृत विद्यापीठ की स्थापना तथा बदहाली झेल रही कई संस्थाओं को नया जीवन दिया। 13 फरवरी 1975 को पूना पधारने पर आचार्यश्री आनंदऋषिजी महाराज का भव्य स्वागत किया गया तथा महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री वसन्तराज नायक ने इन्हें राष्ट्रसंत की उपाधि से सम्मानित किया, यह उनके जन्म का 75 वां वर्ष था। सन् 1987 में इनकी दीक्षा की हीरक जयंती मनाई गई, जिस समारोह में पूज्य श्री शंकराचार्य जी तथा उस समय महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री शंकरराव चव्हाण ने विशेष तौर पर भाग लिया।

आचार्य श्री जी की वाणई आनंद प्रवचन 13 भागों में उपलब्ध हैं। मराठी भाषा में इनके 8 ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। इन्होंने जीवन काल में कुल 78 चातुर्मास किए तथा प्रधान आचार्य पद पर 30 वर्ष रहे। आचार्यश्री आनंदऋषि जी महाराज का 28 मार्च 1992 को अहमदनगर में महाप्रयाण हो गया, मृत्यु को समीप देखते हुए इन्होंने संथारा ले लिया। हर वर्ष उनकी पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में 21 मार्च से 28 मार्च तक बड़े-बड़े विद्वानों के भाषण तथा संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है।

आचार्यश्री आनंदऋषि पर डाक टिकट -

स्थानकवासी श्वेताम्बर श्रमण संघ के द्वितीय आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनंदऋषिजी महाराज के चित्रवाली एक डाक टिकट भारत सरकार ने 1 अगस्त 2002 को इनकी 10 वीं पुण्यतिथि पर इनके सम्मान में जारी की थी 400 पैसे मूल्य वाली यह डाक टिकट 4 रंगों में छापी गई थी, जिसे 4 लाख संख्या में कलकत्ता सिक्यूरिटी प्रिन्टर्स लि. से छपवाया गया था। इस डाक टिकट के ऊपर आचार्यश्री का चित्र मल्टीकलर में छापा गया है। पृष्ठभूमि में हलके ग्रे रंग के ऊपर सफेद चक्र दर्शाया गया है जिसमें 24 आरे हैं जो 24 तीर्थंकरों के द्योतक हैं, इन आरों के ठीक बीच में अहिंसा शब्द छपा है। डाक टिकट के नीचे हिन्दी तथा इंग्लिश में आनंदऋषि जी महाराज लिखा है, सबसे नीचे जारी करने का वर्ष 2002 लिखा है, चक्र के ठीक ऊपर भारत व India लिखा है। इस डाक टिकट का विवरण इंग्लैण्ड से छपने वाले स्टेनले गिब्णस केटालाग में नम्बर 1914 पर तथा अमेरिका से छपने वाले स्काट केटालाग में नम्बर 1963 तथा कामनवेल्थ देशों के स्टेम्प केटालाग में नम्बर 1581 पर दिया गया है।

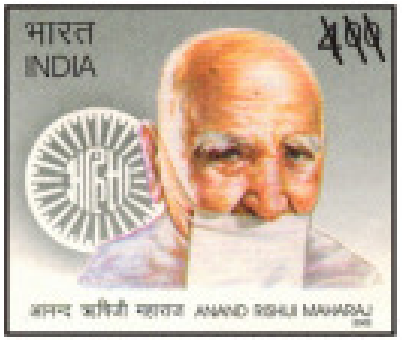

■

प्रयत्न करो

• इन्द्रकुमार जैन 'शशीन्द्र' बाकलवाले इन्दौर •

कहते हैं सपने सच नहीं होतेहैं,
मैं कहता हूँ कभी कभी होते हैं,
आप सभी को उदाहरण बताऊँगा
सपने सच होने की गाथा सुनाऊँगा।
कहते हैं पान की बेल को भी
अंगूर की तरह ही चढ़ाते हैं,
जैसे पालक बच्चों को पढ़ाते हैं,
लेकिन वो बच्चा अभागा था,
घर के लोगों ने उसे नहीं पढ़ाया,
समझ आने पर घर छोड़कर भागा था,
अबोध बालक कैसा होता है,
बिना पैसे के वह भी खूब रोता है,
गलत संगत में भी पड़ता है
घरवालों से, अपने आपसे भी लड़ता
वही बालक आज किराना दुकान तो,
कल बस पर क्लीनरी तो परसो,
किसी का भी बनवाता है मकान,
भविष्य में उसे भी खुद बनाना था,
अपनी रूठी हुई तकदीर को मनाना था,
फिर कपड़े सिलना सीखा टेलर से
भाग्य मिलाया मलेरिया इंस्पेक्टर से,
बेचारे दयालु थे हौंसला बढ़ाया,
बी.ए. पास के पायदान पर चढ़ाया ।
अभी आगे और पढ़ा था
गाँव, शहर, जिला भी छोड़ दिया
अभी आगे और भी बढ़ना था
अतीत के चलचित्रों को छोड़
भविष्य की तस्वीर गढ़ना था
कुछ कर बैठूँ कि 'बाबा' याद आ गए
ग्वालियर 'रेल्वे स्टेशन' पढ़ा
जीजी,जीजा का ध्यान आया
होश तब आया जब जीजा ने
इन्दौर का टिकिट कटा बस में बिठाया
किस्मत ने पल्टी खाई जो
2-4 चिढ़ी लिखीं, काम आई
इन्दौर आकर जम गया, रम गया
दिन रात मेहनत की बुरा वक्त थम गया
एक से दो हुए नौकरी मिली
म.प्र. रा. परि. नि. ने गोद लिया
इन्दौर से जबलपुर जा एम.ए. किया
जो सोचा भी न था बाबा ने दिया
वहीं बालक आज पालक बन
उन सभी भाग्य 'भरोसे वालों' को
कहते हैं 'भाग्य' पर क्यों रोते हैं ?
प्रयत्न करो मेरे दोस्तो
सपने भी सच होते हैं

■

आओ सीखें : जैन न्याय

प्रमाण लक्षण : इन्द्रिय व्यापार की समीक्षा

सांख्य दर्शन में प्रमाण के लक्षण की सिद्धि के लिए इन्द्रिय व्यापार को प्राथमिकता दी गयी है। उनका कहना है कि सन्निकर्ष और कारक साकल्य से भले ही प्रमाण सिद्ध न हो और न ही इसे प्रमाण का लक्षण माना जाये किन्तु अर्थ की जानकारी में इन्द्रिय व्यापार ही साधकतम होता है। अतः उसे प्रमाण माना जाना चाहिये। सांख्य दर्शन के इस संदर्भ में कुछ तर्क हैं जो निम्न हैः–

1-इन्द्रियाँ जब विषय के आकार में परिणमन करती हैं तभी वे अपने प्रतिनियत शब्द का ज्ञान कराती है।

2- पदार्थ का सपंर्क होने से पहले इन्द्रियों का विषयाकार होना इन्द्रिय वृत्ति/व्यापार कहलाता है।

निष्कर्ष – अतः सांख्य दर्शन के अनुसार यह इन्द्रिय व्यापार अथवा वृत्ति ही प्रमाण का लक्षण माना जा सकता है।

भारतीय दर्शन के मनीषियों ने इन्द्रिय वृत्ति को प्रमाण मानने में अनेक बाधाओं को सामने देखा और उन्होंने इन्द्रिय वृत्ति प्रमाण का लक्षण मानने के लिये अपने आपको सहमत नहीं किया और उन्होंने इस प्रमाण की गहरी आलोचना की। उन आलोचना करने वाले विद्वानों के तर्क ठोस तौर पर रहे जिनमें जैन दर्शन के आचार्य बहुत मुखर हुए। उन आचार्यो ने अपने तर्क इतने सटीक दिये हैं कि उन्हें बिना किसी हिचक के स्वीकार किया जा सकता है जो तर्क निम्न है :–

1. इन्द्रिय वृत्ति अचेतन है – इन्द्रिय वृत्ति अचेतन होने के कारण वह पदार्थ का ज्ञान कराने में साधकतम नहीं हो सकती हैः–

2. इन्द्रिय वृत्ति क्या है – इसे स्पष्ट करने के लिये तीन तर्क सामने आते हैं या तो इन्द्रिय का पदार्थ के पास जाना होगा अथवा पदार्थ की ओर अभिमुख होना होगा या फिर पदार्थ के आकार इन्द्रियों को होना पड़ेगा। इनमें पहले पक्ष का खण्डन करते हुए यह कहा जा सकता है कि इन्द्रियाँ पदार्थ के पास नहीं जाती है यह प्रत्यक्ष रूप से देखा जाता है। दूसरे पक्ष का खण्डन करते हुए यह कहते है कि इन्द्रियां पदार्थ के अभिमुख नहीं होती हैं क्योंकि इन्द्रियाँ ज्ञान की उत्पत्ति में कारण ही हो सकती हैं और वह कारण भी उपचार रूप से होगा, मुख्य रूप से नहीं ऐसी स्थिति में इन्द्रिय व्यापार को प्रमाण मान लेने में जैन दर्शन को भी कोई आपत्ति नहीं है किन्तु इन्द्रिय व्यापार को मुख्य कारण नहीं माना जा सकता है

तीसरे पक्ष का खण्डन भी अपने आप हो जाता है, क्योंकि इन्द्रियों का पदार्थ के आकार होना प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा जाता है, ऐसी स्थिति में इन्द्रिय व्यापार तीनों परिस्थितियों में सिद्ध नहीं हो पाता है। तब फिर यह कहा जा सकता है कि इन्द्रिय व्यापार मुख्य प्रमाण नहीं होगा, मात्र उपचार से प्रमाण माना जा सकता है।

3. इन्द्रिय वृत्ति/व्यापार को लेकर सबसे बड़ा प्रश्न यह पैदा होता है कि इन्द्रिय वृत्ति भिन्न है अथवा अभिन्न। यदि इन्द्रिय वृत्ति को अभिन्न माना जाये तो सोते हुए व्यक्ति को भी ज्ञान होना चाहिए। कारण कि इन्द्रिय वृत्ति इन्द्रिय और वृत्ति दोनों एक ही होगी, अलग–अलग नहीं होगी ऐसी स्थिति में व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में ज्ञान के व्यापार को नहीं रोक सकता है चाहे वह स्वप्न में हो, सोता हो, उसे ज्ञान होता ही रहेगा।

अब यदि इन्द्रिय और वृत्ति को भिन्न माना जाता है तो यह प्रश्न होता है कि इन्द्रिय और वृत्ति दोनों संबद्ध है अथवा असंबद्ध। यदि उन्हें संबद्ध माना जाये तो समवाय रूप में माना जाये या फिर संयोग रूप में अथवा विशेषण विशेष्य रूप मे माना जाये। यदि संयोग रूप में माना जायेगा तो वृत्ति और इन्द्रिय दोनों पृथक–पृथक द्रव्य होना चाहिये क्योंकि संयोग दो द्रव्यों में ही होता है,एक द्रव्य में नहीं और संयोग मानने पर जब वृत्ति इन्द्रिय दोनों पृथक द्रव्य हो जायेंगे तो फिर वृत्ति को इन्द्रिय का धर्म नहीं माना जा सकता है। इन्द्रिय और वृत्ति में समवाय सिद्ध नहीं होता है तथा इन्द्रिय और वृत्ति में विशेषण विशेष्य संबंध भी सिद्ध नहीं होता है क्योंकि संबंधांतर संबद्ध वस्तु में विशेषण विशेष संबंध बनता है।

निष्कर्ष – इस तरह इन्द्रिय व्यापार प्रमाण का लक्षण समीचीन रूप से सिद्ध नहीं होता है। क्योंकि इन्द्रिय व्यापार ज्ञान के प्रति साधकतम नहीं सिद्ध हो रहा है। ■

प्यास

'पर' पर फूल रहा था
बार-बार
तन-रंजन में
व्यस्त रहा था
चिर से भूल रहा था
लोकेषणा की प्यास-आस
मेरे आस-पास ही
घूमती थी,
जन-रंजन में
व्यस्त रहा था
क्या तो
इसका मूल रहा था
कारण-अकारण
मन-रंजन में
मस्त रहा था
काल प्रतिकूल रहा था
भ्रम-विभ्रम से
भटकता-भटकता
मोह-प्रभंजन में
त्रस्त रहा था,
किन्तु आज
शूल भी फूल रहा है
सुगंधित महक रहा है,
निराग-निरंजन में
चिर से पला
कंदर्प -दर्प
ध्वस्त रहा है
यह सब आपकी कृपा है
हे प्रभो !

• प. पू. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज •

■

आचार्यश्री108विद्यासागरजी महाराज का 50 वाँ स्वर्णदीक्षा महा महोत्सव सम्पूर्ण देश में हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जा रहा

• डॉ. सुनील जैन 'संचय' ललितपुर •

ललितपुर (उ.प्र.)। हमारी यह भूमि पवित्र और पावन है। भारत एक ऐसा देश है जहां हमोशा एक से बढ़कर तपोनिष्ठ साधु संत-ऋषि एवं महापुरुष हुए हैं। जिन्होंने भारतीय सांस्कृतिक एवं आचारणात्मक नैतिक मूल्यों की अजस्र धारा निरंतर प्रवाहित की है। जिनमें अवगाहन कर अनेकों जीवों ने अपने को सफल बनाया। ऐसे ही संत मुनियों में एक हैं आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागरजी महाराज दिगम्बर जैन परम्परा के ऐसे महान संत है जो सही मायने में साधना, ज्ञान, ध्यान व तपस्या होकर आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर हैं। वे पंचमकाल में चतुर्थकाल सम संत है। महाप्रज्ञ आचार्यश्री की तपस्तेज सम्पन्न एवं प्रसन्न मुख मुद्रा प्रायः सभी का मन मोह लेती है। आचार्यश्री के कंठ में भी अपने गुरु के समान ही सरस्वती का निवास है।

आचार्यश्री की पावन वाणी सत्यं, शिवं, सुन्दरं की विराट अभिव्यक्ति तथा मुक्तिद्वार खोलने में सर्वथा सक्षम है। उन्होंने अपनी अनवरत साधना से जीवन की कलात्मकता को भारतीय संस्कृति के अनुरूप अभिव्यक्त किया है। परम्परागत धार्मिक व सांस्कृतिक धारणाओं में व्याप्त कुरीतियों एवं विघटन को समझकर वे उन्हें हटा देने को व्याकुल हैं। इसीलिये धर्म की वैज्ञानिक, सहज, सरल व्याख्या आचार्यश्री ने उपलब्ध कराई है। जैन धर्म के आचार्य श्रेष्ठ व कुंडलपुर के छोटे बाबा आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की 50 वीं मुनि दीक्षा महोत्सव को संयम स्वर्ण महोत्सव वर्ष के रुप में सम्पर्ण भारत में मनाया जा रहा है। यह एक ऐतिहासिक वर्ष के रूप में भारत देश की जैन समाज मनाने जा रही है। वर्तमान युग के आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागरजी महाराज के संयम स्वर्ण महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में देश के कई शहरों में आचार्यश्री के कीर्ति स्तम्भ भी स्थापित किये जा रहे हैं। आचार्यश्री के संयममय पचास वर्ष की चर्या जहां विशिष्टता लिए हुए हैं वहीं पर श्रुत अभ्यास के साथ बिताये हुये तत्व रसिकों के लिए नई-नई चिंतन की धारा प्राप्त हुई है। आचार्यश्री ने श्रुत की आराधना, ज्ञान व परमात्मा

की आराधना इस प्रकार की है कि जिस प्रकार ज्ञान, आत्मा का स्वभाव है। उनका संयमोत्सव वर्ष मनाने के लिए सम्पूर्ण भारत वर्ष का जैन समुदाय उत्साहित है।

युवा अवस्था में लिया ब्रह्मचर्यव्रत - आचार्यश्री का जन्म 10 अक्टूबर 1946 को शरद पूर्णिमा के दिन कर्नाटक प्रांत के बेलगांव जिले के सदलगा ग्राम में हुआ था। उनके पिता मल्लपा व माँ श्रीमंती ने उनका नाम विद्याधर रखा था। व उनके बचपन का नाम पीलू था। उन्होंने कन्नड़ भाषा में हाईस्कूल तक अध्ययन करने के पश्चात विद्याधर ने सन् 1967 में आचार्य देशभूषण जी महाराज से ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया। इसके बाद जो कठिन साधना का दौर शुरु हुआ तो आचार्यश्री ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा उनके तपोबल की आभा में हर वस्तु उनके चरणों में समर्पित होती चली गई।

विद्याधर ऐसे बने विद्या के सागर - आचार्यश्री ने महज 22 वर्ष की आयु में 30 जून 1968 को राजस्थान के अजमेर में आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज से मुनिदीक्षा ली, गुरुवर ने उन्हें विद्याधर से विद्यासागर बनाया। 22 नवम्बर 1972 को अजमेर में ही गुरुवर ने उन्हें आचार्य पद की उपाधि देकर उन्हें विद्यासागर आचार्य विद्यासागर बना दिया।

कई भाषाओं में हैं पारंगत - आचार्य पद की उपाधि मिलने के बाद आचार्यश्री ने देशभर में पदयात्रा की। चातुर्मास, गजरथ महोत्सव के माध्यम से अहिंसा व सद् भाव का संदेश लोगों को दिया। समाज को नई दिशा दी। आचार्यश्री संस्कृत, प्राकृत भाषा के साथ हिन्दी, मराठी, कन्नड़ भाषा का भी विशेष ज्ञान रखते हैं। उन्होंने हिन्दी व संस्कृत में कई रचनाएं भी लिखी हैं, इतना ही नहीं पीएचडी व मास्टर डिग्री के कई शोधकर्ताओं ने उनके कार्य में निरंजना शतक, भावना शतक, परीषह जय शतक, सुनीति शतक आदि महान रचनाओं पर शोधकर्ताओं ने शोध कार्य किये हैं। आचार्यश्री की मूकमाटी महाकाव्य पर 50 से अधिक लोग पीएचडी कर चुके हैं, जो कि एक रिकार्ड है।

आचार्यश्री को बुन्देलखण्ड लगता है सबसे अच्छा - आचार्यश्री को बुन्देलखण्ड सबसे अच्छा लगता है, उनके सबसे ज्यादा चातुर्मास व शीतकालीन व ग्रीष्मकालीन वाचनाएं बुन्देलखण्ड में ही हुई हैं, उन्हें यहां का सोला या शोधन विधि (आहार चर्या) की सबसे अच्छी शुद्धि लगी है इस कारण आचार्यश्री को बुन्देलखण्ज सबसे ज्यादा अच्छा लगा है।

पंचमकाल का आश्चर्य - वर्तमान समय में आचार्यश्री का संघ सम्पूर्ण देश का सबसे बड़ा दिगम्बर जैन साधु संघ है, जो अपने आप में एक रिकार्ड है। सबसे बड़ी बात है संघ में नाम का कोई वाहन आदि नजर नहीं आता। टेलीविजन, मोबाइल, लेपटॉप आदि आधुनिक समान किसी साधु के कमरे में नहीं दिखते। संघ में सभी संत साधु शिक्षित, संस्कारी और विवेकशील हैं तथा सभी बाल ब्रह्मचारी है। विहार के समय भक्तगण बड़ी संख्या में मार्ग में

चौका लगाकर आहारदान देते हैं और पुण्यलाभ लेकर साथ चलते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि इनके संघ में संघपति की तो बात दूर है कोई भी निजी चौका लेकर साथ नहीं चलता है। सभी समय से सारी क्रियाएं संपादित करते हैं चाहे कितनी ही तेज गर्मी होयया कितनी की कड़कड़ाती ठंड, संघ के किसी साधु के कमरे में कूलर, ऐसी हीटर देखने को नहीं मिलते। पूरा संघ आचार्यश्री के अनुशासन में चलता है।

युगो-युगों तक करें हमारा मार्गदर्शन : आचार्यश्री जी के त्याग व तपोबल के कारण सारी दुनियां उनके आगे नतमस्तक हैं। तपोमार्ग पर उनके पचासवें वर्ष पर प्रवेश का साक्षी बनने के लिए हर कोई आतुर है। वह स्वर्णिम अवसर कब आये इसकी आकांक्षा सम्पूर्ण भारतवर्ष का जैन समुदाय कर रहा है।

पूज्य आचार्यश्री के संदेश युगों-युगों तक सम्पूर्ण मानवता का मार्गदर्शन करें, हमारी प्रमाद-मूर्छा को तोड़े, हम अंधकार से दूर प्रकाश के उत्स के बीच जाने का मार्ग बताते रहें, हमारी जड़ता की इति कर हमें गतिशील बनाएं, सभ्य, शालीन एवं सुसंस्कृत बनाते रहें, यही हमारे मंगलभाव हैं, हमारी प्रार्थना है कि आचार्यश्री और उनका संघ इस युग में अद् भुत है, अकल्पनीय है और अविस्मरणीय तथा अविश्वसनीय है। ऐसे महान संत के पावन चरणों में कोटिशः प्रणाम। ■

श्री 1008 शान्तिनाथ महामंडल विधान सम्पन्न

इन्दौर (म.प्र.)। दिनांक 20 अगस्त से 07 सितम्बर 2017 तक आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद से श्री 1008 शान्तिनाथ महामंडल का सोलह दिवसीय आयोजन श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विजयनगर इन्दौर में किया गया। जिसमें प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जिनेश मलैया एवं निर्देशक इन्दौर रत्न पं. रतनलालजी शास्त्री थे। ध्वजारोहणकर्ता -आर.के.-मैना जैन, कलश स्थापितकर्ता- मनोज-कल्पना बाकलीवाल, आजाद-मणि मोदी, धर्मेन्द्र शिखा जैन, भरत रितु जैन, विद्या प्रेमचन्द्र जैन,श्रीमती शोभा डॉ. नरेन्द्र सिंघई , मुख्य विधानकर्ता- वीरेन्द्र-सुनीता जैन, धर्मेन्द्र-संध्या जैन (सागर), कलश स्थापितकर्ता- हर्ष-तृप्ति जैन, सुनील-पूजा जैन, एम.सी.. प्रभा जैन (पेराडाइज), मुख्य विधानकर्ता एवं पात्र डॉ. प्रेमचंद कमलाकुमा री, राजेन्द्र-सुधा जैन (पुष्पक) मनोज-सुनीता जैन, प्रदीप-प्रगति जैन (टडा), स्वदेशीलाल-राखी जैन, अवधेश-अनिता जैन, प्रवीण अभिलाषा जैन, डॉ. सनत सुधा जैन, विनोद-मंजू जैन (पथरिया वाले, के.सी. सरोज जैन, विमल-मीना गंगवाल, सूरजमल-पदम जैन, अमित-आशी (खुरई वाले), प्रफुल्ल जैन, कमलेश सीमा जैन, अशोक जैन (सी.ए,) अजित पाटनी, मीनल सुभाष जैन (जयपुर), शैलेन्द्र अशिता जैन, अनिल- सुनीता चौधरी ने पुण्य लाभ प्राप्त किया।

कैंची नहीं, सुई बन

चिर से बिछुड़े
दो सज्जन मिलते हैं
वृद्धावस्था में
परस्पर प्रेम वार्ता होती है
गले से गले मिलते हैं
गद् गद् कण्ठ से
एक ने पूछा एक से
तुमने क्या साधना की है
पर के लिए और अपने लिए ?
उत्तर मिलता है
द्वैत से अद्वैत की ओर बढ़ा हो
टूटे दो टुकड़ों को
एक रूप देना हो
तो सुनो !
सुई होना सीखा है
फिर दूसरे ने भी पूछा
इस दीर्घ जीवन में ऐसी
कौन सी साधना की तुमने
फलस्वरूप सबके स्नेह-भाजन हो,
उत्तर मिलता है
कि
कर्म के उदय में
जो कुछ होना सो होना है
सो धरा-सा
जरा होना सीखा है
दूसरों के सम्मुख
अपनी वेदना पर
रोना ना सीखा है,
हाँ
दूसरा आ अपना
व्यथा-कथा
सुनाता हो, रोता हो
यह मन भी व्यथित हो रोता है
और तत्काल
उसके आँसू
जरा धोना सीखा है।

• परम पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी •

इसे भी जानिये

चिकित्सा विज्ञान सम्बन्धी अविष्कार

एफ बैटिंग 1932	इन्सुलिन डायबिटिज के उपचार के लिये
यू.एन. ब्रह्मचारी	कालाजार बुखार की चिकित्सा
जी डोमाग	सल्फा ड्रग्स
राबर्ट कोच (1884)	हैजे का टीका
डॉ. पाल मूलर (1939)	डी.डी.टी.
ओइजक मेन	वेरी वेरी की चिकित्सा
आथर वर्ग तथा जेम्स वाटसन	आर.एन.ए.
जेम्स वाटसन तथा क्रिक	डी.एन.ए.
ड्रेसर	एस्प्रिन
रेबी	क्लोरीक्वीन (कुनैन)
हरगोविन्द खुराना	जेनेटिक कोड
फिनले	टेरामाइसिन
ल्यूवेनहॉक	बैक्टिरिया
रो वर्थ	टाइफाइड के जीवाणु
रीड	पीले बुखार की चिकित्सा
पॉल एरिक	सिलफि की चिकित्सा
फिन्सेन	अल्ट्रा वायलेट रेन्ज द्वारा चिकित्सा
सर अलेक्जेन्डर फ्लेमिंग एण्ड फ्लोरे	पेन्सिलिन
विलियम हार्वे (1628)	रक्त परिवहन (संचरण)
कार्ल लैडस्टीनर	रक्त परिवहन
हैनी मैन	होम्योपैथी की स्थापना
फंक	विटामिन
मैकुलन	विटामिन ए
मैकुलन	विटामिन बी
यूजोन्ट होल्कट	विटामिन सी
एफ.जी. हॉपकिन्स (1922)	विटामिन डी की खोज
एडवर्ड जेनर (1796)	चेचक का टीका
रॉबर्ट कोच (1882)	टी.वी. की चिकित्सा
लेनेक (1816)	स्टेथेस्कोप

■

दिशाबोध

व्यर्थ भाषण

1. निरर्थक शब्दों से जो अपने श्रोताओं में उद्वेग पैदा करता है, वह सबके तिरस्कार का पात्र होता है।
2. अपने मित्रों को दुःख देने की अपेक्षा अनेक लोगों के आगे व्यर्थकी बकवास करना बहुत बुरा है।
3. जो निरर्थक शब्दों का आडम्बर फैलाता है, वहअपनी अयोग्यता को ऊँचे स्वर से घोषित करता है।
4. सभा में जो व्यर्थ की बकवास करता है, उस मनुष्य को देखो; उसे और कुछ लाभ होने का नहीं , पर जो कुछ उसके पास अच्छी बातें होंगी, वे भी छोड़कर चली जावेंगी।
5. यदि व्यर्थ की बकवास अच्छे लोग भी करने लगें, तो वे भी अपने सम्मान और आदर को खो बैठेंगे।
6. जिसे निरर्थक बातों को करने की अभिरूचि है, उसे मनुष्य ही नहीं मानना चाहिए। कदाचित् उससे भी कोई काम आ पड़े, तो समझदार आदमी उससे कचरे के समान ही काम लेवें ।
7. यदि समझदार को योग्य मालूम पड़े, तो मुख से कठोर शब्द (बोल ले)कर ले; क्योंकि यह निरर्थक भाषण से कहीं अच्छा है।
8. जिनके विचार बड़े-बड़े प्रश्नों को हल करने में लगे रहते हैं, ऐसे लोग विकथा के शब्द अपने मुख से निकालते ही नहीं।
9. जिनकी दृष्टि विस्तृत है, वे भूलकर भी निरर्थक शब्दों का उच्चारण नहीं करते।
10. मुख से निकालने-योग्य शब्दों का ही तू उच्चारण कर, परन्तु निरर्थक शब्द मुख से मत निकाल।

उत्कृष्ट ज्ञान और चारित्र के धनी :

पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी

• निर्मल जैन, सतना •

दिनांक 19 मार्च 1976 शुक्रवार को सायंकाल का समय सतना निवासी कभी भूल नहीं सकेंगे। अत्यन्त सुहावना मौसम शीतल वायु, सारे नगर में आनंद और शांति का मृदु वातावरण। हो भी क्यों न, आज नगर में उन तपस्वी मुनिराज का आगमन हुआ है। जिन्होंने मात्र 29 वर्ष की आयु में अपनी लगन, निष्ठा और साधना के द्वारा अपने जीवन को सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र से ओतप्रोत कर लिया है। व जब प्रवचन देते हैं तो नई सरल और सटीक परिभाषाओं के साथ गूढ़ आगम ज्ञान की बातें श्रोताओं को हृदय की गहराई तक पहुंचकर उसे झकझोर देती हैं, उसे कुछ सोचने-समझने और करने की प्रेरणा देती है। ध्यान या अध्ययन के समय भी आचार्य श्री विद्यासागरजी की भव्य तेजयुक्त तपस्वी मुखमुद्रा और उस पर सदैव विराजने वाली अभयदायिनी मंद मुस्कुराहट मानों मौन स्वरों में ही मोक्षमार्ग का उपदेश देती रहती है। उन्हें देखकर याद आ जाती है आचार्य समन्तभद्र द्वारा विहित दिगम्बर साधु को परखने की वह कसौटी -

विषयाशावशातीतो, निरारम्भो परिग्रहः। ज्ञानध्यानतपोरक्तः तपस्वौ सः प्रकीर्त्यते॥

प्रथम दर्शन :-

अगस्त 1974 में सपरिवार पूज्य आचार्य कल्प श्रुतसागरजी महाराज के दर्शनार्थ रैनवाल जाने का मुझे संयोग मिला था, वहीं ज्ञात हुआ कि अजमेर में आचार्य विद्यासागरजी महाराज का चातुर्मास हो रहा है। उनके विषय मे जो कुछ सुना उससे उनके दर्शनों की इच्छा बलवती हो गयी। एक दिन के लिये हम लोग अजमेर चले गये। सुबह सोनीजी की नसिया में पूज्य महाराज जी के दर्शन करने पहुँचे, वहां के व्यवस्थापक ने बताया कि महाराज जी अभी नहीं आए। प्रश्न उठा कहां से नहीं आए ? पता चला कि महाराज शाम को जंगल में चले जाते हैं किसी शिलाखंड पर, खेत में या स्मारक रूपी किसी छतरी में बैठकर सामायिक करते हैं, और फिर वहीं रात्रि विश्राम होता है, प्रातः शौच आदि के बाद नसिया आ जातेहैं। यह सुनकर दर्शन

की उत्कंठा और बढ़ गयी। प्रतीक्षा की, महाराज पधारे, दर्शनार्थियों क़ो आशीर्वाद दिया और एक क्षुल्लक महाराज के साथ अध्ययन करने बैठ गए आने वालों के प्रति कोई जिज्ञासा नहीं। अध्ययन के बाद बात करना चाही तो बोले कोई धर्म चर्चा करना चाहें तो करें। कुछ दे र बात हुई शब्द गंभीरता के साथ सहज सरल भाषा, करुणामयी वाणी और निस्पृह मुखमुद्रा ने बहुत प्रभावित किया। दक्षिणवासी होते हुये भी संस्कृत और हिन्दी पर अच्छा अधिकार। एक सद्य प्रकाशित काव्यकृति उस समय देखने को मिली, निजानुभव शतक बसन्ततिलका छन्द में 100 छन्दों का यह संग्रह आत्मरस से भरपूर बहुत अच्छा लगा काव्य रचना तो उत्कृष्ट थीही।

मन नहीं होता था उनके पास से उठने का, परन्तु हम तो मोहमाया में बंधे प्राणी हैं, उसी दिन लौटना था। हृदय में आचार्यश्री के प्रति श्रद्धा और भक्ति ने स्थान बना लिया था। पुनः अधिक समय उनके चरणों का सानिध्य पाने की लालसा समा गई थी, किन्तु रुकना हो नहीं पाया अगले वर्ष फिरोजाबाद में चातुर्मास की खबर थी। प्रसन्न था कि दर्शन मिलेंगे हर वर्ष चातुर्मास में मुनिसंघ के दर्शनार्थ कुछ समय निकाल लेता हूँ पर 1975 में भगवान महावीर निर्वाणोत्सव वर्ष के कार्यक्रम और गजरथ महोत्सव की तैयारी में मंत्री पद की जिम्मेदारी से निकलना नहीं हो सका। हमारे पुण्योदय से पूज्य आर्यनंदीजी महाराज का चातुर्मास भी हमारे नगर में था अतः यहीं मुनिदर्शन का लाभ मिलता रहा।

कुंआ आ गया प्यासे के पास-मार्च के प्रारम्भ में यहां पूज्य जयसागरजी महाराज का शुभागमन हुआ अच्छी शास्त्रीय चर्चा का सुयोग मिला, उसी समय खबर मिलीकि छतरपुर में एक युवा तपस्वी मुनिराज पधारे हैं बहुत अच्छा प्रवचन करते हैं नाम ज्ञात नहीं हो सका, जब तक पता किया तब तक महाराज पन्ना आ चुके थे । ज्ञात हुआ कि वहां एक शाम महाराज नगर के बाहर जंगल में चले गये एक शिला पर सामायिक की और वहीं रात्रि विश्राम किया, श्रावक किंकर्त्तव्यविमूढ। यह कैसे महाराज, इनकी व्यवस्था कैसे करें, तब तक खबर भी मिल गई कि यह कठोर तपस्वी आचार्य विद्यासागरजी ही हैं।

17 मार्च को बड़े भाई श्री नीरजजी तथा सतना के अनेक श्रावक श्राविकाओं के साथ नागौद में हमने आचार्यश्री के दर्शन किये। दर्शन करके लगा कि मुख मुद्रा का तेज इन 2 वर्षों के बीच तपस्या से और दमक उठा है। उपदेश सुनकर लगा कि ज्ञान औरअनुभव ने उन्हें जन कल्याण के लिए हृदयग्राही उपदेश देने की अद्भुत शक्ति प्रदान की है। चर्चा करके लगा कि उन्होंने जहां एक ओर आगम ज्ञान में गति प्राप्त की है वहीं उनकी काव्य रचना शक्ति भी अप्रत्याशित रूप से विकसित हुई हैं। संस्कृत और हिन्दी में कई सौ छन्दों की रचना इन दो वर्षों में हो चुकी है और वर्तमान में समणसुत्तं की गाथाओं का हिन्दी पद्यानुवाद हो रहा है।

महाराज जी के साथ उनके चार नवदीक्षित शिष्य क्षुल्लक श्री प्रवचनसागरजी, श्री योगसागर

जी, श्री नियमसागरजी तथा श्री समयसागरजी थे। 17 से 23 वर्ष की आयु के बीच ये चारों बाल तपस्वी महाराज आचार्यश्री के कड़े अनुशासन में तप और ज्ञान का सतत् अभ्यास कर रहे हैं।

हमने सुन रखा था महाराज अपने आगे का कार्यक्रम पहले से ही निर्धारित नहीं करते कब कहां प्रस्थान करेंगे, यह किसी को ज्ञात नहीं हो पाता। रात्रि विश्राम कहां होगा, इसके सारे अनुमान व्यर्थ हो जाते हैं जहां सामायिक का समय हो गया वहीं विश्राम, गांव हो या जंगल, कोई अंतर नहीं पड़ता। हमने भी जब सतना चलने के लिये निवेदन किया तो संक्षिप्त उत्तर मिला - आगे की क्या कहें । जैसा योग होगा सो होगा फिर भी मन में बहुत आशा, उत्साह और प्रसन्नता लेकर हम लौटे।

19 मार्च को दोपहर समाचार मिला कि महाराज का बिहार नागौद से सतना के लिये हो गया है। प्रसन्न मन से हम लोग भागे रास्ते में रात्रि विश्राम की व्यवस्था करें, पर महाराज जी तब तकआधी दूरी तय कर चूके थे और सम्भावना हो गई कि महाराज शाम 6 बजे के पूर्व ही सतना पहुंच जायेंगे। रास्ते में कोई बात नहीं हो सकी। नीची दृष्टि, ईर्या पथ के साथ तेज चाल। कमण्डलु लेने के प्रयास भी व्यर्थ हम सोच रहे थे जब इस यात्रा में भी हम महाराज के साथ नहीं चल पा रहे तो मोक्षमार्ग पर तेजी बढ़ते हुये इन चरणों को साथ हम कैसे और कहां तक पा सकेंगे।

नगर में मंगल प्रवेश - समाज में समाचार फैल गया, नर नारी अगवानी के लिये एकत्रित होने लगे बैंड बाजा और जुलूस की मनाही थी, पर भक्तों की श्रद्धा और भक्ति को हम कहां तक रोकते, लोगों ने गाजे-बाजे के साथ महाराज को नगर में प्रवेश कराया। बच्चों का उत्साह भी देखने योग्य था। जय जयकारों से आसमान गूंज रहा था। जिनेन्द्र दर्शन के बाद महाराज ने 10 मिनिट सम्बोधन दिया और फिर सामायिक के लिये उठ गये।

यह मौसम ऐसा था कि दिन में धूप तेज होने लगी थी पर रात्रि में सर्दी अधिक हो जाती थी। सामायिक के लिये छत पर चटाइयां बिछा दी थीं महाराज लोग सामायिक में बैठे। हम लोगों ने ऊपर कमरे में उनके विश्राम की व्यवस्था की और सामायिक समाप्त होने की प्रतीक्षा करने लगे पर सामायिक के बाद ध्यान प्रारम्भ हो गया और हमें कुछ कहने का अवसर ही नहीं मिला। क्षुल्लक महाराजों ने बताया कि महाराज सामायिक के बाद प्रातःकाल तक उसी स्थान पर रहते हैं अतः विश्राम वहीं होगा, हम लोग हतप्रभ थे, बहुत विनती की महाराज छत पर सर्दी अधिक रहती है पर कोई सुनवायी नहीं न महाराज उठे, और न उनके शिष्य। महाराज ध्यान में थे और शिष्य अपना पाठ याद करने में लगे थे हमने सोचा महाराज विश्राम करने लगें तो हम जायें पर वह समय नहीं आया। 11 बज गये महाराज का ध्यान समाप्त नहीं हुआ हमी हार कर घर चले आये पर नींद नहीं आई, अपनी तुच्छता और महाराज की उच्चता का अंतर

विचारों में घूमता रहा। प्रातः 5 बजे जाकर देखा तो सभी महाराज सामायिक में बैठे थे। पड़ोसियों ने बताया कि 3 बजे से उठकर ध्यान में बैठ गये हैं।

उपदेशामृत की वर्षा - 8 बजते मंदिर में दर्शन और उपदेश सुनने के लिए व्याकुल नर नारियों का समूह एकत्रित हो गया। आठ बजे प्रवचन प्रारम्भ हुआ, नमस्कार पर भाव भरा हृदयग्राही प्रवचन सुनकर आंखे खुल गयीं। दर्शन पूजन रोज होती है पर सही अर्थों में नमस्कार कभी हुआ नहीं।हो जाय तो फिर नमस्करणीय होने की राह भी खुल जाये। जिज्ञासुओं की संख्या बढ़तीा जा रही थी, पर्यूषण में होने वाले प्रवचन का स्थान आज छोटा पड़ गया। महाराज से दोपहर के प्रवचन के लिए निवेदन किया तो बोले दोपहर केवल चर्चा करेंगे। कल के प्रवचन की बात की तो वही उत्तर 'आगे की क्या कहें' फिर भी दोपहर 2.30 बजे से 3 बजे तक चर्चा और प्रातः 8 से 9 बजे तक मन्दिर जी के बाद प्रांगण में शमियाना लगाकर बनाये हुये पान्डाल में प्रवचन की घोषणा मैंने कर दी। सतना के उत्साही नवयुवकों ने दो घड़ी के परिश्रम से मण्डप को सज्जा प्रदान की। त्रलोक्य के प्रतीक केसाथ वाक्य अंकित थे-

''आचरण में अहिंसा, वाणी में स्याद्वाद, विचारों में अनेकान्त। यही है दिगम्बर साधु का जीवन सिद्धांत।''

दूसरी ओर आचार्यश्री की ही दो सार्थक पंक्तिया अंकित थी - **जो स्वयं को समझते सबसे बड़े हैं, वे धर्म से बहुत दूर अभी खड़े हैं ।।**

नीरस आहार, मात्र संयम-साधना के लिए - अब समय था आहारों का। उत्सुक नर नारियों की भीड़, कई जगह चौकों की व्यवस्था पर सब परेशान महाराज या उनके शिष्य आहारों के विषय मे कोई बात नहीं करते। संघ में कोई ब्रह्मचारी या श्रावक है नहीं, जिनसे कुछ पूंछ लें । नागौद, पन्ना से आये श्रावकों ने बताया चार रस, घी, शक्कर, नमक और तेल का त्याग है। क्षुल्लक महाराज भी ये रस प्रायः नहीं लेते। इन चार रसों से रहित साधारण उबला हुआ आहार बिना नमक, घी की रोटी की जगह जगह तैयार। महाराज पांच आहार देने के इच्छुक श्रावक अनेक। 10 बजे शुद्धि करके निकले जिसके चौक में चले गये वह धन्य हो गया, आहार की प्रक्रिया देखने में अत्यंत सरल, नीचा सिर किया, सो आहार समाप्त होने पर ही ऊपर हुआ, इस बीच केवल दिया जाने वाला पदार्थ दृष्टि में , देने वाले की ओर कोई लक्ष्य नहीं, आहार के बाद आहार संबंधी कोई चर्चा नहीं। क्षुल्लक महाराजों के आहार भी उसी प्रकार। फर्कइतना कि बैठकर एक कटोरे में लेते हैं, वृत्ति वही नीचा सिर, इन्कार में केवल हाथ कोई हाँ-हूं नहीं।

दोपहर की सामायिक के बाद वृहद द्रव्यसंग्रह की पढ़ाई , 2.30 बजे से श्रावकों क़ा आना आरम्भ हो गया, डेढ़ घन्टे तक चर्चा चली, प्रश्नों का समुचित समाधान सबकी सुनना और

शास्त्र की कहना, कोई हटाग्रह नहीं ज्ञान का कोई घमण्ड नहीं, सब सन्तुष्ट नतमस्तक उसके बाद काव्य रचना, सामायिक, ध्यान, दिन भर कोई विश्राम नहीं, कोई लौकिक चर्चा नहीं।

दूसरे दिन रविवार था प्रातः 8 बजे प्रवचन हुआ समर्पण पर, जिससे कुछ लेना है उसके प्रति समर्पण आवश्यक है। प्रभु के सामने बात करते हैं उसके जैसे गुण पाने की पर बिना समर्पण वह मिले कैसे।बाहर का प्रांगण भी आज भर गया था समाज तो पूरी थी ही, अनेक अन्य लोग भी थे, व्यापारी, बुद्धिजीवी, श्रमिक। महाराज से विशेष आग्रह करके केवल आज के लिये दोपहर 3 से 4 बजे तक प्रवचन की घोषणा की गयी और तीन बजते बजते पाण्डाल पुन भर गया। धूप की चिंता नहीं , गर्मी का भय नहीं, सुनने की उत्कंठा, प्रवचन हुआ अहिंसा पर। विषय नया नहीं वर्षों से सुन रहे हैं निर्वाणोत्सव वर्ष में तो बार-बार सुना पर आज कुछ और बात है, नई परिभाषायें जीवन में कैसे उतारें अहिंसा को, सरल सुबोध भाषा लगा अभी तक तो हम अपनी हिंसक वृत्ति को जानते ही नहीं थे, उससे विरत कैसे होते। सभा में पूर्ण शांति कब एक घंटा बीत गया पता नहीं चला। महाराज ने समाप्त किया तो घड़ी की ओर नजर गयी।

सतना वालों का पुण्य कुछ विशेष था,सुना था महाराज फिरोजाबाद से चले तो आगरा, ग्वालियर, झांसी, टीकमगढ़ जैसे बड़े शहर कस्बे गांव क्षेत्र सभी पड़े पर कहीं भी 3-4 दिन से अधिक रुकना नहीं हुआ। सतना में श्रावकों की भक्ति भावना या पुण्यबल से महाराज का संघ आठ दिन रुका फिर भी दर्शन और श्रवण कीप्यास सुझी नहीं। प्रवचन का समय होते होते पण्डाल भर जाता जैसे जैसे उपदेशामृत मिलता गया, प्यास और बढ़ती गयी, कुछ सिंधी भाई, बड़े व्यापारी नियमित श्रोता थे। महाराज का एक शब्द भी छोड़ा नही, हमारे टेप रिकार्डर की तरह पर महाराज ने भी छोड़ा नहीं, कह ही दिया एक दिन टेप रिकार्डर की तरह सुन लेने भर से काम नहीं चलेगा, कुछ करना होगा। टेप रिकार्डर तो वापिस सुना सकता है सुना हुआ, आपसे तो वह भी नहीं होगा। प्रवचन हुये क्रमशः सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य,अपरिग्रह, साधना और स्याद्वाद पर। सभी विषय नई परिभाषाओं के साथ सटीक उदाहरण। कैमरा देखकर बोले कैमरा नहीं , एक्सरे बनो, बाहर की फोटो किस काम की ? अंतर में झांकों।

ऐसी निष्पृहता कहीं देखी नहीं- एक दिन 2-3 मिनट लेट हो गया पहुंचने में। देखा महाराज आ चुके थे पण्डाल में , पर अकेले दाएं बांएं दो दो बैठने वाले बालयतिजी पूरे समय एक निष्ठ होकर सुनते थे महाराज को आज कहां रह गये, वे तो बड़े अनुशासनप्रिय हैं कोई समय व्यर्थ नहीं खोते। उपदेश में कभी अनुपस्थित नहीं रहते आज क्या हो गया, देखा जाकर ऊपर कमरे में तो निस्तब्ध रह गया। चारों अपने अपने स्थान पर बैठे सिंह मुद्रा में निर्विकार भाव से अपने काले घने केों को तृणवत उखाड़कर फेंक रहे हैं। विद्यार्थी जीवन के अभ्यस्त

केश, बिना तेल श्रृंगार के भी घुंघराले बने हुये थे, पर उनके घुंघरालेपन पर किसी कोई तरस नहीं । उखाड़ रहे है पूरी शक्ति लगाकर, मुख लाल हो गया है सिर पर जगह जगह रक्त बिन्दु झलक रहे हैं पर विषाद या वेदना की कोई रेखा नहीं। हे भगवन ! कहाँ से आ गई इतनी शक्ति और इतना विराग इस अल्पायु में पहले से कोई इंगित नहीं। आसपास रहने वाले श्रावक भी नहीं जान पाये कि कुछ होने वाला है आज। बाद में भी कोई प्रदर्शन नहीं उपदेश के बाद महाराज से विनती की छोटे महाराजों को कुछ देर के लिये मंच पर ले आएं, केशलोंच के बाद सब लोग दर्शन कर लें पर अस्वीकार पूर्व अभ्यस्त श्रावक योजना बनाने लगे केश विसर्जन के लिये जुलूस बनाकर तालाब जाने की। पर नहीं यह सब नहीं होना चाहिये पानी में तो डालना ही नहीं, मछलियां खाकर कष्ट पायेंगी यहीं कहीं सूखी जगह में डालकर मिट्टी में तोंप दीजिये।

आज मुद्राएं बदल गयी थीं बालयतियों की पर आज भी पठन पाठन के क्रम में कोई परिवर्तन नहीं, यात्रा की थकान, अंतराय, केशलोंच किसी भी कारण पाठ याद करने में कोई छूट नहीं,क्रम में कोई भंग नहीं। धन्य है यह साधना, धन्य हुये हम लोग यह देखकर।

काव्य साधना - पठन पाठन भी चलता रहा और महाराज की काव्य साधना भी 'समणसुत्तं' दूसरा खंड यहां पूर्ण हुआ। 600 गाथाओं को पद्यानुवाद की पाण्डुलिपि तैयार हुई। किसी विद्वान ने कहा है यदि स्वतंत्रता रचना तालाब में तैरने के समान है तो अनुवाद कुएँ में तैरने के समान है। फिर यहां तो गागर में सागर भरा जा रहा है। मूल गाथा में केवल सिद्धांत की बात कही गयी है तो अनुवाद में उदाहरण देकर उसे स्पष्ट भी किया गया है। अध्यात्म का सागर समणसुत्तं अब अमृतकलश बन जायेगा, सभी की प्यास बुझाने के लिये।

याद रहेगा बहुत कुछ - आठ दिन रहे महाराज सतना में , इस बीचउन्हें कभी भी विश्राम करते नहीं देख पाया। कौई लौकिक बात उनसे कभी सुनने को नहीं मिली, न कोई निर्देश न व्यवस्था संबंधी कोई बात न किसी की कुशल क्षेम। कभी कोई बात हमने करना भी चाही तो मौन। कुछ लोगों ने कहा महाराज के साथ किसी श्रावक या ब्रह्मचारी के रहने की व्यवस्था कर दी जाय, सामान आदि की देखरेख करेगा व्यवस्था करेगा यह भी अस्वीकार। सामान है ही क्या पांच महाराजों के बीच दो झोरे उसी में शास्त्र,किताबें,कापियां, पेन्सिल, क्षुल्लक महाराजों के कटोरे और वस्त्र और उस सामान की कोई भी चिन्ता नहीं, बिहार के समय पिच्छी कमण्डलु उठाये चल दिये। आगे क्या होगा ? जो होना होगा।

विदा के क्षण - शनिवार के प्रातः स्याद्वारद पर महाराज का उपदेश हुआ। हम लोगों ने निवेदन किया महाराज कल रविवार है कल दोपहर में भी एक प्रवचन हो जाए तो अधिक लोग लाभ ले सकेंगे उत्तर वही कल की क्या कहें । मैंने तो घोषणा की कल दो प्रवचन की आशा हमें हैं।

दोपहर कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को यह सूचना भेजने की तैयारी में था तभी माली घबराया हुआ आया और बोला भैया महाराज लोग चले गये। भागकर गए हम लोग, शहर में भी खबर फैल चुकी थी, जो जहां जैसा था भागा पैदल, साइकिलों से, रिक्शा से। नगर से बाहर महाराज से निवेदन किया 10 मिनट रुक लें, लोग भागकर आ रहे हैं दर्शन कर लें। 10 मिनट में सैकड़ों क़ी भीड़ पुरुष महिलायें ब़च्चे धूप गर्मी की परवाह किये बिना, दर्शन भी पूरे लोग नहीं कर पाये महाराज फिर चल दिये कोई सम्बोधन नहीं, कोई सुनाई नहीं।

रास्ते में हम लोगों ने बात करनी चाही रात्रि विश्राम के लिये 10 मील पर रामवन आश्रम है, 12 मील पर एक गांव है। उत्तर संक्षिप्त क्या करना है भैया जहां समय हो जायेगा रुक जावें गे कल के आहार के लिये बात करना चाही। रीवा 36 मील है सतना से एक आहार तो रास्तें में होगा ही पर उसमें भी अस्वीकृति, उनके लिये श्रावकों को कुछ करना पड़े यह स्वीकार ही नहीं। हम लोग वापिस आ गये पता चला बस्ता, चटाई सब मन्दिर में रखे हैं शाम लेकर गए 15 मील पर सड़क किनारे एक स्कूल के चबूतरे पर सामायिक के लिये बैठे वहीं रात्रि विश्राम होना था।हम लोग चले आये कुछ नवयुवक रह गये वहीं, साथ छोड़ा नहीं जा रहा था उनसे।

हम लोगों ने तय किया महाराज तो स्वीकृति देंगे नहीं पर विश्राम स्थल से 8 मील दूर बेला में चौके लगाये जायें कल। रात्रि में माली ने बताया क्षुल्लक महाराजों के कपड़े मन्दिर के सूखने को डाले थे सो अभी भी डले है।

28 मार्च रविवार की छुट्टी का दिन था कई श्रावक सामान लेकर प्रातः चल पडे और सतना से 22 मील दूर बेला ग्राम में सड़क किनारे स्कूल में चौकों की व्यवस्था की। क्षुल्लक महाराजों के कपड़े भी ले गये थे। धोकर डाले।8 बजे महाराज पहुंच गये। क्षुल्लक महाराजों से पूछा महाराज ! कपड़े न आते तो क्या होता ? बोले भैया एक दिन तो छोड़ना ही हैं।

स्कूल के मैदान मे गांव के लोग इकट्ठे हो गये सतना से भी बहुत लोग पहुंच गये। महाराज से प्रभावित सतना के दो सिंधी व्यापारी भाई भी पहुंचे। सबके निवेदन पर पौन घंटे प्रवचन हुआ, सिंधी भाइयों ने महाराज के बिना कुछ कहे अपने मन से मद्य मांस का त्याग किया।

चार चौके लगे थे, आहार के बाद, महाराजों ने सामायिक की, तब तक हम लोग भी भोजन कर चुके थे। इस बीच सतना तथा रीवा से और भी लोग आ गये थे। सामायिक के बाद फिर गोष्ठी जमी, एक घंटे तक खूब चर्चा हुई महाराज जी की कुछ स्फुट रचनाएं भी सुनने को मिलीं। तीन बजे रीवा के लिये प्रस्थान, हम लोग भी आंखों में अश्रु लिए सतना वापिस आ गए। ■

ऐलक सिद्धांतसागर

क़हानी

तोता की गवाही

रात के 12 बज रहे। पूनम का चाँद आसमान में छतरारे बादलों से छांक रहा था। वातावरण में ठंडक घुली थी। शहर के मुख्य मार्ग व्यस्त थे परन्तु कोई भी व्यक्ति अपने कार्य छोड़कर दूसरे के कार्य में बाधा नहीं पहुँचाता था। चन्द्रमा भी दुनिया के बदलते रूप को बखूबी निहार रहा था। चन्द्रमा इतना सुन्दर लग रहा था कि समुद्र भी अपनी लहरों के माध्यम से चन्द्रमा को छूने को मानो मचल रहा है। समुद्र के तट पर लगे घने बड़े वृक्ष हवा के प्रवाह में झूम रहे थे वे ऐसे लग रहे थे कि मानों सुहानी चांदनी रात में कोई उत्सव मना रहे हो और समुद्र की लहरों से उठती ध्वनि ऐसे लग रही थी कि समुद्र संगीत के कहरवा में तबला बजा रहा हो और सब वृक्ष मिलकर नृत्य करके कुमुदनी उत्सव मना रहे हो। समुद्र के किनारे बने बहुमंजली इमारतों का समूह प्रकृति पर अपनी अनाधिकृत चेष्टा के लिए चिन्ह साक्षी बन रहे हो। समुद्र, चन्द्रमा, तारे, वृक्ष, हवा और समुद्र की लहरें सभी के योगदान मिशीगन शहर अपनी शोभा को वृद्धिगंत कर रहा हो। मिशीगन अमेरिका की वह सिटी है जिसकी अनेक खूबियाँ पर्यटकों को अपनी ओर आर्कषित करती है।

मिशिगन के समुद्र तट पर एक मिशीगन स्टेट नाम की बहुमंजिला मल्टी है। जिसके सैकड़ो ़फ्लैट कई लोगो के आशियाना बन चुके हैं। इन्हीं में से मार्टिन नाम का शख्स भी फ्लैट नं. 328 में रहता था। उसे किस्मत यहाँ जबरन खींच लाई वैसे यह फ्लैट कभी बड़ा और आंतरिक सज्जा से बहुत ही आकर्षक लगता था जो देखता वह बर्बश ही वाह कह बैठता था मार्टिन भी ऊंचा पूरा हट्टा-कट्टा 40 वर्षीय युवा था जिसकी गहरी नीली आँखें देखकर युवतियां उसका पीछा करने लगती और हसीन सपने देखने लगती थी। मार्टिन गोरा सुशिक्षित युवा था। उसके पास बड़ा कारोबार था और बहुत बड़ी जायदाद का मालिक था इसी वजह से हर कोई उसका दोस्त बन जाता था। मार्टिन भी हर किसी पर विश्वास कर लेता परन्तु मार्टिन भी भोलेपन के कारण हर जगह

धोखा खा जाता था। उसकी पूर्व पत्नी क्रिस्टीना केलर उसे बहुत चाहती थी परन्तु उसकी कुछ अन्य दोस्त महिला उसकी जिंदगी में प्रवेश कर चुकी थी मार्टिन को क्रिस्टीना ने कई बार समझाया कि जोआज जो तुम्हारे बन रहे हैं कि तुम सोचो कि क्या वो बेवफाई नहीं कर सकते हैं। आज की दुनिया में लोग जब भगवान को धोखा दे देते हैं तो क्या तुम्हें छोड़े देंगे। सच में मार्टिन तुम आजाद पंछी हो तुम्हारे अंदर खूब उड़ान है। पर मुझे आश्चर्य इस बात का है कि तेरी उड़ान में कोई दिशा नहीं है। मार्टिन यह बात तुम सोच लेना कि दिशा शून्य उड़ान कितनी खतरनाक होती है जिस तरह समुद्र के जहाज पर बैठा पंछी समुद्र के पर खूब दूर तक इठलाता हुआ चला जाता है परन्तु जब वह उड़ना चाहता है और कोई किनारा पाना चाहता है तो उसे सिर्फ निराशा मिलती है मार्टिन उसे लौटकर फिर जाहज पर आकर बैठना पड़ता है। तुम मानो या न मानो मैं तुम्हारी जिंदगी को गहरे समुद्र की एक जहाज हूँ और तुम मेरे उड़ते हुए दिशाहीन पंछी।

मार्टिन पर क्रिस्टिना की समझाइस का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था वह दिल से चाहने वाली क्रिस्टिना से दूर होना चाहता था और गिलेल्ना को अपने घर लाना चाहता था पर समस्या यह थी जब तक क्रिस्टिना से तलाक न हो जाए तब तक गिलेल्ना फ्लैट न. 328 में प्रवेश करके स्थाई नहीं रह सकती थी क्रिस्टिना मार्टिन को छोड़ कर के कहीं भी नहीं जाना चाहती थी परन्तु मार्टिन के रात दिन के झगड़े वाकयुद्ध तथा होने वाले अपने अपमान से तंग आ जाने के बाद भी क्रिस्टिना मार्टिन को नहीं छोड़ना चाहती थ परन्तु सहने की सीमा होती है। कहने कहने की सीमा होती है यह सिद्धांत चरितार्थ हुआ और क्रिस्टिना मार्टिन को छोड़कर चली गई। क्रिस्टिना 328 फ्लेट से तो निकल गई पर अपने दिल से मार्टिन को नहीं निकाल पाई। क्रिस्टिना हमेशा मार्टिन सही सलामत रहे इसकी दुआ मालिक से मांगती रही अपनी हर प्रार्थना में वह एक ही अरदास करती रही मेरा मार्टिन किसी की क्रूरता का शिकार न हो जाए।

ग्लेन्ना दुरम ने मार्टिन को अपना बना लिया और मार्टिन की जिन्दगी में ग्लेन्ना के आते ही उसकी जिंदगी में पंख फड़फड़ाने लगे। वह उन्मुक्त आसमान में इतना उड़ा इतना उड़ा कि उसे यह पता नहीं चला कि हम किस स्थिति में और कहा है ग्लेन्ना के व्यवहार में धीरे-धीरे परिवर्तन आना शुरु हो गया और उसका मन मार्टिन से कब भर गया इसका पता न तो ग्लेन्ना को चला और न मार्टिन को। बस दोनों एक दूसरे से पीठ करके बैठ गये। ग्लेन्ना को मार्टिन से पिंड छुड़ाने की इतनी आतुरता बढ़ी कि वह भोजन पानी सब छोड़कर सिर्फ एक ही बात सोचने लगी कि कैसे मार्टिन के जाल से बाहर निकला जाए। फ्लैट नं. 328 में मार्टिन ग्लेन्ना और उसका बड़ तोता रहता था ग्लेन्ना ने रोज मार्टिन से छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा करना शुरु कर दिया। मार्टिन भी झगड़ालू न होते हुए भी ग्लेन्ना के साथ रहते-रहते झगड़ा करने

में पीछे नहीं रहा। विचारों के मेल न खाने पर दोनों के बीच तलाक का प्रस्ताव भी रखा गया किन्तु ग्लेन्ना ने एक ही बात मन में सोची मैं तो सिर्फ मार्टिन की जायदाद के लिए इसकी जिन्दगी में आई हूँ और मैं अगर तलाक दे दूंगी तो मेरे हाथ में क्या रहेगा। मुझे तो मार्टिन की पूरी प्रापर्टी चाहिए। ग्लेन्ना ने मार्टिन की पिस्टल एक दिन अपने हाथ में ले ली और मार्टिन जिन्दगी की भीख मांगता रहा पर ग्लेन्ना ने उसकी एक नहीं सुनी और रात को 12 बजे 2 अक्टूबर 2015 अहिंसा दिवस के दिन ग्लेन्ना ने गोली मार्टिन के जिस्म में उतार दी।

मार्टिन तड़फ-तड़फ कर अपनी आखिरी श्वास लेकर चल बसा। जब मार्टिन को मृत अवस्था में देखा तो ग्लेन्ना अपनी क्रूरता पर अफसोस करने लगी और आत्म ग्लानी से भर गई उसने भी अपने जुनून में आकर आत्महत्या करने का प्रयास कर लिया किन्तु उसकी मृत्यु न हो पाई वह एक हेल्थ केयर सेन्टर पर पहुंच गई और उसकी जिन्दगी बच गई। जब यह खबर क्रिस्टिना केलर को पता चली तो वह अपने प्रियतम की मौत पर खोजबीन करने में जुट गई वह उन सबूतों को ढूंढने लगी जो मार्टिन की हत्या के रहस्यों पर से एक-एक कर परते उठाने लगी। क्रिस्टिना ने ऐसे कुछ सबूत जुटाने की कोशिश की जो मार्टिन के हत्यारे को कानून के शिकंजे में ला सके। क्रिस्टिना मार्टिन की हत्या से बहुत दुःखी थे। वह भीतर से टूट चुकी थी। भले ही मार्टिन ने क्रिस्टिना को छोड़ दिया था उसकी तरफ से मुँह मोड़कर ग्लेन्ना से अपने पूरे संबंध जोड़ चुका था। मार्टिन ने क्रिस्टिना को खूब प्रताड़ित एवं अपमानित किया था पर क्रिस्टिना का मार्टिन के प्रति अंतिम फर्ज (कर्त्तव्य) निभाने के लिए कटिबद्धता दिखाई। क्रिस्टिना फ्लैट नं. 328 में गई। सूबत जुटाने में खूब बारीकी से निरीक्षण किया। तब क्रिस्टिना को देखकर मार्टिन का तोता मार्टिन की आवाज में चिल्ला पड़ा। ग्लेन्ना मुझे गोली मत मारो, ग्लेन्ना मैंने तेरा क्या बिगाड़ा। मुझ पर दया करो, मुझे मत मारो। तोता की यह बात सुनकर क्रिस्टिना को एक बहुत बड़ा सबूत मिल गया। मार्टिन को मारने वाली ग्लेन्नाथी। क्रिस्टिना ने कानूनी प्रक्रिया को आगे बढ़ा दिया। अब क्रिस्टिना को उन वकीलों से सलाह मशविरा लेना आवश्यक हो गया जो ऐसे पेचीदा मामलों को सुलझाने में व अपराधियों को सजा दिलवाने में महारत हासिल किये हुए थे। क्रिस्टिना ने एक भी पल व्यर्थ नहीं खोया और अपने मोबाइल से वकील के सामने तोता की वीडियो बनाई।

दो बर्ष बाद वो दिन आया 23 जुलाई के दिन जब अदालत खचाखच भरी थी और सारे लोग फैसले को सुनना चाह रहे थे। ग्लेन्ना के वकील भी तोते की गवाही को स्वीकार कर चुते थे। जज व जूरी ने मार्टिन की हत्या के मामले में आरोपी ग्लेन्ना को दोषी सिद्ध करने का अवसर दिया। अब सिर्फ ग्लेन्ना को सजा सुनाई जाना थी। क्रिस्टिना सन्तुष्ट थी ग्लेन्ना हत्या के आरोपों से बच नहीं पाई।

जूरी ने अपने फैसले को सुनाते हुए ग्लेन्ना को भरपूर सजा दी। अदालत से सजा सुनने वाले इस बात पर खुश रहे कि अंधे कत्ल को भी बड़ तोते की गवाही ने अपराधी को बचने का कोई मौका नहीं दिया ? ■

श्रमण– शतक में और एक परिशीलन

• डॉ. नीलम जैन सर्राफ, ललितपुर •

साहित्य किसी देश की संस्कृति की सप्राणता का प्रतीक है और प्रतीक है वह देश की समृद्धता का जो केवल उसे वर्तमान की समृद्धि ही नहीं वरन् अनेक-अनेक वर्षों तक जीवंतता प्रदान करती है यही कारण है कि भाषा और साहित्य के विकास विस्तार और प्रस्तार में सन्तों ने बड़ा योगदान दिया है। अपने कथ्य और तथ्य को प्रभावशाली ढंग से सम्प्रेषित करने के लिए उन्होंने भाषा से परहेज नहीं किया। सन्तों का सारा ज्ञान अनुभव जनित था और वे अपने ज्ञान को अपने तक सीमित नहीं रखना चाहते थे, इसलिए उन्होंने सहज सम्प्रेषण के माध्यमों की तलाश रूप साहित्य को ही आधार बनाया।

यही कारण है कि आचार्य विद्यासागर जी महाराज ने अनेक प्रकार के साहित्य की रचना की। उसमें 'श्रमणशतक' एक है। आचार्यश्री ने संस्कृत एवं हिन्दी दोनों ही भाषा में साहित्य को समृद्ध किया है। कवि हृदय आचार्यश्री ने युग को युगीन भाषा हिन्दी में तथा शाश्वत को अमरवाणी संस्कृत में निबद्ध किया। जैन संस्कृत काव्यों की लम्बी श्रृंखला में 'श्रमण शतक' एक दैदीप्यमान मणि के समान है। जो कभी भावों की विशुद्धता के कारण धवल मुक्ता-सा प्रतीत होता है। तो कभी अपनी सरसता के कारण मणि प्रतीत होता है। अध्यात्म के प्रति प्रगाढ़ आसक्ति के कारण जहाँ आचार्यश्री अध्यात्म योगीराज प्रतीत होते हैं वहाँ काव्य रस से सराबोर श्रमण शतक के कृतिकार होने पर काव्य रसिक प्रतीत होते हैं।

प्रगाढ़ ज्ञान के सूर्य की रश्मियों से निर्मित श्रमण शतक इन्द्रधनुष की छटा बिखेरता हुआ अद्भुत काव्य है। इसी रूप इसका एक रंग देखें-

श्रमैकफलारम्भतः पौद्गलिक-पुण्यपापोपलम्भतः।
दृक्कथमुदेति हन्त ! नवनीतं नीरमन्थनतः ॥10॥

एक खेद ही जिसका फल है ऐसे आरम्भ से तथा पौद्गलिक पुण्य पाप की प्राप्ति से सम्यग्दर्शन कैसे उत्पन्न हो सकता है ? खेद की बात है कि, क्या कहीं जल के मन्थन से मक्खन की प्राप्ति होती है ? अर्थात् नहीं ।

इस तरह आचार्य ने सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हेतु आन्तरिक भावों को प्रमुखता दी है न कि पुण्य कर्मों को। श्रमण शतक में शुभ का भी मोह नहीं है, फिर अशुभ के लिए तो अवकाश का प्रश्न ही कहा हैं। भावों की धवलता को अक्षुण्ण रखते हुए भी आचार्यश्री की कृति कल्पना ने सरलता को नहीं छोड़ा है। मन हंस है, चेतना सरोवर है विकल्प तरंग है और धर्म कमल है। यह एक सॉग रूपक है। कल्पना कोमल है अतः पदावली भी कोमलकान्त ही होनी चाहिए जिसे कवि ने बखूबी निभाया है।

अमन्दमनोमराल! विविक्तविविध विकल्पवीचिजालम्।
कलितवृषकनालं वित्-सरो मुक्त्वाऽन्येनालम्॥15॥

वीतरागता कवि का साध्य है, साधन है आत्मानुराग। यह आत्मानुराग ही श्रमणशतक का केन्द्र बिन्दु है। यह शतक विशेष रूप से शब्दालंकार प्रधान है, पर कवि ने अर्थपक्ष को भी गौण नहीं होने दिया है।

व्रतिनो न शल्यत्रयं कलयन्तु किलाऽखिलारत्नत्रयम्।
शुद्धं स्पृशन्त्वत्र यं निजाल्मानं स्तुत जगत्त्रयम्॥19॥

यहाँ 'गय' शब्द तीन बार आया है। तीनों बार उसका वाच्यार्थ एक ही है। किन्तु भावार्थ भिन्न-भिन्न है। इसके अर्थ को देखे-

समस्त व्रती मनुष्य यथार्थ में रत्नत्रय को प्राप्त हों, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को प्राप्त करने का प्रयत्न करें। माया, मिथ्यात्व और निदानरूप शल्य को प्राप्त न हों। साथ ही, उस रत्नत्रय रूप लक्षण से जगत्त्रय के द्वारा स्तुत निजशुद्ध आत्मा का स्पर्श-अनुभव करें।

चूँकि अर्थालङ्कारों का शिरोमणि उपमा अलङ्कार है और आचार्यश्री ने इसे अपनी विशिष्टता के साथ प्रयोग किया है। इसका एक उदाहण रूप देखते हैं कि-

समुपलब्धौ समाधौ साधुस्ततथागत रागाद्युपाधौ।
यथा सरिद्वारिनिधौ मुदमुपैति च निर्धनो निधौ॥25॥

अर्थात् योगी को समाधि में कैसा आनन्द मिलता है ? कवि ने उपमा दी कि सरिता को समुद्र में विलीन होकर जैसा आनन्द प्राप्त होता है वैसा ही आनन्द समाधि में योगी को मिलता है। उपमा उचित है। सरिता का स्वभाव है समुद्र में लीन हो जाना। योगी भी अपने स्वभाव में लीन है किन्तु कवि को एक उपमा से सन्तोष नहीं हुआ। सरिता के आनन्द को किसने जाना? उपमा तो परिचित पदार्थ से हो वह अनुभव शील है अतः कवि ने इसी सन्दर्भ में दूसरी उपमा दी कि जैसा आनन्द निर्धन को खजाना मिलने पर मिलता है, वैसा ही आनन्द योगी को समाधि में मिलता है। यह परिचित विषय से उपमा दी गई है। इस प्रकार हम देखते हैं कि आचार्यश्री की रचनात्मक प्रतिभा और प्रौढ़ता और काव्य ग्रन्थ की विलक्षणता न केवल भाव सौन्दर्य से सम्पन्न है वरन् शब्दों की जादूगरी भी अद्वितीय है। श्रमण शतक के प्रथम पाँच श्लोक मंगलाचरणात्मक है। इनमें से अन्तिम श्लोक में अत्यंत शरल शब्दों में सरस्वती माँ से प्रार्थना की गई है।

अये ! सरस्वति ! संसारादहमतिभीतो मातः।
विलम्बं कलय मा त उपासकं प्रपालय माऽतः॥5॥

अर्थात् हे सरस्वतिमातः। मैं संसार रूप बंध से अत्यन्त भयभीत हूँ, अतः विलम्ब मत करो, अपने सेवक, मुझ की रक्षा करो।

पुनः साधुता के स्वरूप का वर्णन करने की प्रतिज्ञा करके कवि आत्मज्ञान, एकान्तसेवन, आडम्बर हीनता, विषय-विमुखता, तप, अपरिग्रह, स्थिरता, इन्द्रिय विजय, संवर, रत्नत्रय, अप्रमाद, ज्ञान चरित्र, ध्यान, वीतरागता, समता, भेदविज्ञान, दिगम्बर मुद्रा, जिन भक्ति आदि की प्रशंसा में काव्य को नियोजित कर संस्कृत काव्य परम्परा को समृद्ध किया है।

आचार्यश्री ने अपनी सम्पूर्ण साहित्य साधना को आत्म जीवनगत दृष्टि को अर्पित किया है। आचार्यश्री का साहित्य युग-युगों तक हमको सत्य, ज्ञान, तप और आत्मगत जीवन का विश्वास दर्शित करता रहेगा। ■

परिचर्चा-संयम स्वर्ण महामहोत्सव

सागर सी अटल गहराईयों वाला विलक्षण व्यक्तित्व -आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागरजी महाराज

• पुष्पेन्द्र जैन 'शिक्षक', मडवरा •

आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज के 50 वें संयम स्वर्ण महामहोत्सव के अवसर पर विद्वानों व समाजसेवियों ने रखें अपने अपने विचार

गुरु की महिमा वरणी न जाय कहा गया है कि गुरु की महिमा का कभी वर्णन नहीं किया जा सकता उनके उपकार को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। साधु संतों के पग जहाँ पर भी पड़ते हैं वहाँ पर ऐसा प्रतीत होने लगता है कि दशहरा व दीपावली एक साथ मनाएं जा रहे हों। इन्हीं भावना को लेकर भक्तों ने आचार्य श्रेष्ठ 108 विद्यासागरजी महाराज के 50 वें स्वर्णिम दीक्षा दिवस के अवसर पर परिचर्चा में अपने-अपने विचार रखें।

समाजसेवी व चिकित्सक डॉ. राकेश जैन सिंघई का मानना है कि आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज के 50 वें संयम स्वर्ण महामहोत्सव को आज भारत देश ही नहीं अपितु आचार्यश्री के भक्तगण विदेशों में भी 50 वें संयम स्वर्ण महामहोत्सव को मना रहे हैं, आचार्यश्री ने जो उपकार हम सब पर किये हैं उनका वर्णन नहीं किया जा सकता है उनका उपकार का वर्णन किया जाये तो न जाने कितना समय व वर्ष व्यतीत हो जाएं उसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता है।

प्रभावना जनकल्याण परिषद ललितपुर के मानद निदेशक डॉ. सुनील जैन संचय का कहना है कि आचार्यश्री के 50 वें स्वर्णिम दीक्षा दिवस को आज पूरा विश्व मना रहा है। उन्होंने कर्नाटक प्रांत में जन्म लिया लेकिन बुंदेलखंड की भूमि पर आकर उसे पवित्र कर दिया उन्होंने बुन्दलेखण्ड की गरीबी को देखकर भाग्योदय तीर्थ पर भाग्योदय हास्पिटल का निर्माण करवाया, यह हमारे गुरुदेव का बुंदेलखंड वासियों पर

बहुत बड़ा उक़ार है। उनके गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकताहै। उन्होंने अनेक ग्रन्थों को लिखकर श्रावकों पर बड़ा ही उपकार किया है जिनका अध्ययन करके साधक अपनी साधना में लीन है। सेवानिवृत्त प्रवक्ता रमेशचन्द्र जैन का मानना है कि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के दर्शन करने पर उनमें भगवान महावीर स्वामी की झलक दिखाई देती है, क्योंकि मैंने शासन नायक भगवान महावीर स्वामी को नहीं देखा परन्तु परोक्ष रूप में आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज को भगवान महावीर स्वामी का लघुनंदन कहते हैं, उन्होंने अनेक योजनाओंन को चलवाकर प्राणी मात्र का उपकार किया है गुरु के उपकारों को भुलाया नहीं जा सकता है। दिगम्बर जैन महासमिति ईकाई मडावरा के महामंत्री पुष्पेन्द्र जैन का मानना है कि आचार्य श्रेष्ठ 108 विद्यासागरजी महाराज पंचम युग के महावीर है मैंने तो जब आचार्यश्री के दर्शन किए तो उनकी छवि भगवान महावीर स्वामी जैसी ही लगी। हम लोगों ने शास्त्रों में ही पढ़ा व सुना है लेकिन भगवान महावीर स्वामी को देखा नहीं है लेकिन आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की चर्या को देखकर लगता है कि भगवान महावीर स्वामी जी भी ऐसे ही होंगे। आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागरजी महाराज प्राणी मात्र का कल्याण करने वाले हैं। उन्होंने कहा है कि भारत भूमि को भारत ही रहने दो, इंडिया नहीं, भारत कहो, मांस निर्यात बंद करो, मूक प्राणियों की रक्षार्थ उन्होंने दयोदय गौशालाओं का निर्माण करवाया, आचार्यश्री के गुणों की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता है।

विनय जैन संचालक-हाथकरघा स्वरोजगार केन्द्र मडावरा का कहना है कि गुरु जी के आशीर्वाद से भारत देश में लगभग 132 हथकरघा केन्द्र संचालित हैं जिनमें हजारों निर्धनों को काम मिला व बेरोजगारी से दूर हो रहे हैं, हथकरघा योजना के माध्यम से युवाओं को स्वरोजगार मिल रहा है व खादी वस्त्रों का प्रचार-प्रसार भी हो रहा है। आचार्यश्री का कहना है कि खादी वस्त्रों को पहनों अपने ही देश का बना हुआ कपड़ा पहनों विदेशों का त्याग करो, जिससे पुनः भारत देश सोने कीा चिड़िया कहलाने लगे।

आनंद जैन अहिंसा का मानना है कि आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज ने जीवदया व करुणा, अहिंसा, शाकाहार को जीवंत रखने के लिए एक उदाहरण पेश किया है वह है हमारी जीवंत दयोदय गौ संरक्षण केन्द्र गौशालाएं, आचार्यश्री का का मानना है कि गौ-रक्षा से ही देश की रक्षा होगी। गौ संवर्धन से ही यह देश खुशहाल होगा। ■

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की त्याग तपस्याचर्या है अनूठी और बेमिसाल

• श्रीमति प्रियंका जैन 'संचय', ललितपुर •

यह हम सभी का परम सौभाग्य है कि हमें परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का 50 वां स्वर्णिम संयमोत्सव मनाने का अवसर प्राप्त हो रहा है। उनकी महान त्याग, तपस्या, साधना से पूरा जगत सुपरिचित है।

- आजीवन चीनी का त्याग
- आजीवन नमक का त्याग
- आजीवन हरी का त्याग
- आजीवन दही का त्याग
- सुखे मेवा का त्याग
- आजीवन तेल का त्याग
- सभी प्रकार के भौतिक साधनों का त्याग
- थूकने का त्याग
- एक करवट में शयन
- पूरे भारत में सबसे ज्यादा दीक्षा देने वाले
- पूरे भारत में एकमात्र संघ जो बाल ब्रह्मचारी है
- पूरे भारत में एक ऐसे आचार्य जिनका लगभग पूरा परिवार ही संयम के साथ मोक्षमार्ग पर चल रहा है।
- शहर से खुले मैदानों में नदी के किनारों पर या पहाड़ों पर अपनी साधना करना
- अनियत विहारी यानि बिना बताये विहार करना
- प्रचार प्रसार से दूर-मुनि दीक्षाएं, पिच्छि परिवर्तन उसका उदाहरण
- आचार्य देशभूषण जी महाराज जब ब्रह्मचारी व्रत से लिए स्वीकृति नहीं मिली तो गुरुवर ने व्रत के लिए 3 दिवस निर्जला उपवास किये और स्वीकृति लेकर माने।
- ब्रह्मचारी अवस्था में भी परिवारजनों से चर्चा करने अपने गुरु से स्वीकृति लेते थे और परिजनों को पहले अपने गुरु के पास स्वीकृति लेने भेजते थे।
- आचार्य भगवंत सम दूसरा कोई संत नजर नहीं आता जो न केवल मानव समाज के उत्थान के लिए इतने दूर की सोचते हैं वरन मूक प्राणियों के लिए भी उनके करुण हृदय में उतना ही स्थान है।

- शरीर का तेज ऐसा जिसके आगे सूरज का तेज भी फीका और कांति में चांद भी फीका है।
- ऐसे हम सबके भगवन चलते फिरते साक्षात् तीर्थंकर सम संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी के चरणों में शत शत नमन।
- आचार्यश्री के संघ में टीवी, कूलर, एसी पंखा, मोबाइल आदि का उपयोग नहीं किया जाता है।
- आचार्यश्री के संघ में साथ में कोई वाहन नहीं चलता न ही कोई संघपति होता है।
- आचार्यश्री के संघ में तंत्र, मंत्र, ताबीज आदि करना सर्वथा वर्जित है।
- आचार्यश्री चलते-फिरते तीर्थ हैं। महावीर के लघुनंदन हैं.
- हम धन्य हैं जो ऐसे महान् गुरुवर का मंगल सान्निध्य हमें प्राप्त हो रहा है। ■

धूपदशमी के पावन अवसर पर श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर में महासन्त की महायात्रा

इन्दौर। श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर इन्दौर में धूपदशमी के पावन अवसर आचार्यश्री विद्यासागर महाराज के संयम स्वर्णिम वर्ष के उपलक्ष्य पर **महासन्त की महायात्रा** झांकी का आयोजन किया गया।जिसमें गुरुदेव के सम्पूर्ण जीवन का दर्शन कराया गया। जिसकी अध्यक्षता श्री हुकुमचंदजी सांवला (अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विश्व हिन्दू परिषद),मुख्य अतिथी श्री रमेशजी मेन्दोला (विधायक), मुख्य अतिथि श्री शोभित-मोना जैन, विशेष अतिथि श्री मुन्नालालजी यादव, श्रीमती सरोज चौहान थे। कार्यक्रम में सहयोगी बनने का सौभाग्य सर्वश्री सुन्दरलाल भैयाजी (बीड़ी वाले), मनोज बाकलीवाल, प्रकाश-अंजलि छाबड़ा (लखनऊ), नरेन्द्र जैन (जयपुर वाले), मनोज जैन (बबीना वाले), राजीव सेठी (गया वाले), धर्मेन्द्र जैन (सागर वाले), डी. के. जैन (पूर्व डीएसपी), आजाद मोदी (मोदी प्रिन्टर्स), वीरेन्द्र जैन (कृति इन्टरप्राइजेस), हर्ष जैन (कॉटन) आदि ने प्राप्त किया है। झांकी निहारने आये समाजजनों ने झांकी का अवलोकन करने के बाद तो यह कहा कि पूरा पंचबालयति मन्दिर ही आचार्यश्री की झांकी जैसा लग रहा है। ■

गुल्लिकायज्जी पर भारी पड़े यक्षरक्षित जिनबिम्ब

• अखिल बंसल •

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक समारोह की हलचल है, परन्तु विवादग्रस्त मोनोग्राम के कारण उत्तर भारत का जैन समाज ठिठका हुआ है। इस समारोह के इतिहास में पहला अवसर है जब मोनोग्राम के कारण सम्पूर्ण कार्यक्रम पर ही ग्रहण लग गया है। इस मोनोग्राम में एक रूपसी कन्या को भगवान बाहुबली के सिर पर खड़े होकर दुग्धाभिषेक करते प्रदर्शित किया गया है। कौतुहल इस बात को लेकर भी है कि कलश करने वाली यह रूपसी बाला आखिर है कौन ? यदि कहें कि वह गुल्लिकायजी है तो कोई कैसे मानेगा। क्योंकि गुल्लिकायजी तो वृद्ध स्त्री थी, परन्तु मोनोग्राम में तो लावण्यमयी रूपसी बाला है। अब यदि कहें कि कुष्माण्डिनी देवी है तो किसी भी आगम में देवियों द्वारा अभिषेक का विधान नहीं है। इस प्रकार यही कहना समीचीन होगा कि आयोजकों की ठग विद्या है। सप्तरंगी अभिषेक की चर्चा का विषय है क्योंकि सप्तरंगी अभिषेक का जल गन्धोदक नहीं है। वह तो पूर्णरूपेण अशुद्ध ही है। अतः धारण योग्य नहीं ? इस मोनोंग्राम का जब प्रदर्शन हुआ तभी से विरोध प्रारम्भ हो गया पर आयोजकों ने प्रेस्टीज इशू बना लिया और समय रहते चेते नहीं। अब विरोध की छोटी सी चिंगारी ने वृहद रुप ले लिया है। सांगानेर में मुनिपुंगव सुधासागरजी, उदयपुर में मुनिश्री प्रमाणसागरजी तथा दिल्ली में एलाचार्य अतिवीर सागरजी ने मोनोग्राम पर खुलकर विरोध दर्शाया है। यही नहीं विद्वत् परिषद् के दोनों धड़े चाहे वह डॉ. जयकुमारजी के नेतृत्व वाला हो अथवा डॉ. भारिल्ल जी के नेतृत्व वाला इस मुद्दे पर दोनों के स्वर एक हैं और दोनों संस्थाओं के महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र भारती व अखिल बसंल विरोध के अगुवा हैं। तीर्थक्षेत्र कमेटी के पूर्व अध्यक्ष स. सिं. सुधीरजी मूलसंघ के बैनर तले अपनी आवाज बुलंद कर रहे हैं। अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रवीन्द्रजी मालव व संगठन के कार्याध्यक्ष व महामंत्री ने भी विरोध में झण्डा गाड़ रखा है। इस प्रकार दिनोंदिन विरोध का दायरा बढ़ता ही जा रहा है।

इस चर्चा के साथ ही इन दिनो सांगानेर के यक्षरक्षित जिनबिम्बों के दर्शनों की ख्याति चहुं ओर व्याप्त है। गुलाबी नगरी जयपुर के सांगानेर में श्रमणसंस्कृति संस्थान के जनक पूज्यमुनि श्री सुधासागरजी का विराजमान होना और फिर मूलसंघ की अलख जगाना, आर्षमार्ग का यथार्थ स्वरूप बताना समाज को पच नहीं रहा है। गणधराचार्य कुंथुसागर व अन्तरमना मुनिश्री प्रसन्नसागजी की वीडियो क्लिप को खूब प्रचारित किया गया पर मुनि पुंगव सुधासागरजी ने जिज्ञासा समाधान ने जो हुंकार भरी अच्छे-अच्छे के होश फाखता हो गए। बीसपंथियों के गढ़ में वह करिश्मा कर दिखाया की गुल्लिकायज्जी भी फीकी पड़ गई। इस मोनोग्राम की चर्चा उनके कानों तक भी पहुँची थी उन्होंने जिज्ञासा समाधान में मोनोग्राम का अच्छा मोस्टमार्टम कर समाज को चेताया। लगता है कि कहीं न कहीं मुनिश्री का भी सोच इस प्रकार का हो रहा हो कि उत्तरभारत के मूल अम्नायी समाज का बहुमूल्य द्रव्य व्यर्य न बह जाए, अतः उन्होंने 12 जून को यक्षरक्षित भूगर्भ के रत्नमयी भव्य जिनालय के दर्शन अभिषेक की ऐसी भूमिका बांधी कि 19 से 25 जून को सम्पन्न हुए इस कार्यक्रम में अथाह जन समुद्र उमड़ पड़ा। देशभर में ख़बर आग की तरह फैल गयी और इस सप्तदिवसीय समारोह में आगन्तुकों ने पैसों की बरसात ही कर दी। चौबीसों घंटे अटूट श्रृंखलाबद्ध अनुशासित समाज की उपस्थिति ने सभी को आश्चर्यचकित कर वर्ल्ड रिकार्ड में नाम दर्ज करा दिया। मुनि पुंगवजी की एक आवाज पर पूरा देश उठ खड़ा हुआ और 15 लाख से अधिक लोगों ने दर्शनलाभ लेकर पुण्यार्जन किया। कलश करने वालों की होड़ लगी रही। सभी ने कम से कम 51 सौ का कलश तो लिया ही लिया। फ्री कलश व्यवस्था थी ही नहीं। अरबों रूपया एक सप्ताह के कार्यक्रम में आना मायने रखता है। सभी हतप्रभ है। शिथिलाचारी साधुओं की सिट्टी-पिट्टी गुम हैं, कहीं कोई भाव नहीं दे रहा। गुल्लिकायज्जी गौण हो गई हैं और यक्षरक्षित जिनालय ने ऐसी बाजी मारी की फरवरी में होने वाले समारोहस के आयोजकों के माथे पर चिन्ता के बल पड़ गए हैं। रही सही कसर 28 से 30 जून तक हुए स्वर्णिम संयमोत्सव ने पूरी कर दी है। अब गाँव-गाँव में संयमवर्ष को यादगार बनाने हेतु कीर्तिस्तम्भों के निर्माण की श्रृंखलाबद्ध रूपरेखा तैयार है। जहाँ देखों वहीं मूलसंघ की गर्जना सुनाई देने लगी है। स. सिं. सुधीरजी व उनकी मित्र मंडली मूलसंघ की आवाज बुलन्द करने प्राण पण से जुट गए हैं। पत्रकार की कलम का कमाल भी देखते जाओ।

■

मेरी कुण्ठा मुखरित हो गई : अखिल बंसल

• अनुपम जैन •

सन्दर्भ- समन्वयवाणी 16 से30 जून का सम्पादकीय

बसंल जी ! आप अपना सम्पादकीय टेबल पर रखें और बिन्दुवार जवाब पढ़े।

1. अनेक पत्र-पत्रिकाओं ने गणाचार्य के यशोगान में विशेषांक प्रकाशित किये, जिन्हें ग्यारह-ग्यारह हजार की राशि प्रदान कर उपकृत किया गया। हम जैसे पत्रकारों जिन्होंने प्रकाशित नहीं किये थे, तिलक दुपट्टे से सम्मानित किया और गिफ्ट पैक प्रदान कर कर्त्तव्य का निर्वहन किया।

उत्तर - महाशयजी ! जिस विचारधारा को आप और भारतीजी पानी पी पी कर कोसते हैं, गालिया देते हैं, ''बीस पंथ विष पंथ है'' जैसे गीत रचते-गाते हैं उस मंच पर आप अपना खून जलाने क्यों गये थे। आपका चंदन-रोरी से मंच पर तिलक किया, दुकूल ओढ़ाया, गिफ्ट दी, आप महाशय और क्या उम्मीद लेकर गये थे ? क्या आप बिना कुछ किये ग्यारह-ग्यारह हजार पाना चाहते थे ?

विशेषांक प्रकाशकों को मंच ने पैसा नहीं दिया, बल्कि अलग अलग प्रायोजक थे जिनके नाम विशेषांक प्रकाशकों ने प्रकाशित किये हैं। आप स्वयं पत्रकार हैं, विशेषांक प्रकाशित करने के लिए ग्यारह हजार की राशि नाकाफी है।ये तो उन पत्र-पत्रिकाओं का गणाचार्यश्री के प्रति समर्पण है कि उन्होंने उस अंक पर अपना लगभग चालीस हजार रूपया खर्च कर प्रकाशित किया और आप महाशय अपने पत्र के मुखपृष्ठ पर लिखा करते हैं ''सच लिखने का साहस''। तो आप में यदि सच लिखने का साहस था तो इसी सम्पादकीय में आप यह भी लिख देते कि आज से पांच वर्ष पूर्व समन्वयवाणी ने ग्यारह-ग्यारह हजार की राशि लेकर जिस विचारधारा का विरोध करते हैं उनसे सम्बन्धित विशेषांक निकाल कर कसीदे पढ़े थे। दुनिया को बेवकूफ न समझे, अपने कृत्यों को ध्यान में रखा करें।

2. बसंल जी ! शायद आपको पता नहीं, सामने देखकर लिहाज वश औरों के साथ आपका सम्मान भी कर दिया जाता है, अन्यथा आपके दर्शन होते ही लोगों के मुँह से आपके प्रति गाली ही निकलती है कि ''दुष्ट यहाँ भी आ गया।'' दूसरों को गाली देकर आप सम्मान की अपेक्षा न करें। आप सम्मान दोगे तो मिलेगा।

3. ''विद्वानों को गोष्ठी के नाम पर मोटे मोटे लिफाफे मिल गये ''

महाशयजी ! विद्वान शोध आलेख तैयार करने में एक-एक माह तक परिश्रम करते हैं, अपना अमूल्य समय खर्च कर पहुँचे थे, यदि उन्हें मार्ग व्यय दे दिया गया तो आपको इतनी

खीझ क्यों हो रही हैं। हाँ यही ऐसा जरूर हुआ कि आयोजकों ने स्वयं अपने हाथों से तिलक लगाकर सम्मान किया तथा लिफाफे सौंपे, अन्यथा आपके साथ विष-वमन करने वाले भारतीजी के बारे में तो जगजाहिर हो या कि वे आमंत्रित विद्वानों की लिस्ट देकर आयोजकों से उतने लिफाफे ले लेते हैं और जो नहीं पहुँचे उनके लिफाफे भी वे अपनी जेब में रख लेते हैं, इस पर भी कभी-कभी प्रकाश डालते रहा करें, या इस तरह की कारिस्तानी पर कुछ सफाई ही देते रहा करें।

आप इस सम्पादकीय में मुनि पुंगवजी द्वारा यक्षरक्षित जिनालय दर्शन पर चुटकी ले रहे हैं, वहीं अपने वाट्सएस की पोस्ट पर '6/23/17 रात्रि 11.27 अखिल बंसल पर क्या लिखा है? इतने संक्षिप्त समय में देश-विदेश में बहुत भारी धर्म प्रभावना हुई है।

आप विरागसागरजी के मंच पर गोम्मटेश्वर बाहुबली के मोनोग्राम पर चर्चा करने की अभिलाषा से गये थे, ऐसा आपने सोच कैसे लिया ? आपको हम मूर्ख नहीं कहेंगे, कुछ और शब्द खोजना पड़ेगा। ये तो आपको हुकुमचंद भारिल्ल जी वाले कार्यक्रम में विचार करना था, वहाँ आपको कुछ तालियां भी मिल जातीं ।

इस आयोजन के खर्च से आपने एक विश्वविद्यालय खोलने की सलाह दी है। महाशयजी ! गाल बजाना आसान है। अब तक किसने कितने आयोजनों के खर्च को परिवर्तित कर दिखाया है ? लोगों की जिसमें श्रद्धा होती है उसी में खर्च करते हैं। हाँ ! आप स्वयं से शुरुआत करते और इस आयोजन में न जाकर फिर लिखते कि देखो मैंने कितना खर्च बचाया-और मेरे साथ एक दो लगेठो के लिए इतनी भीड़ में आवास व्यवस्था की गई थी, भोजन व्यवस्था में प्रातः चाय-दूध, मठरी, मीठा, पोहा, हलुआ, बड़ा, पकौड़ी, दोपहर का शुद्ध भोजन, सायं का भोजन। सामान्य जनता को भोजनालय के बाहर रोककर आपको आगे ले जाकर कमेटी के सदस्यों ने स्वयं परोसकर भोजन कराया, मंच पर आगे स्थान दिया, रोरी चंदन से तिलक, दुपट्टा, उपहार आप लिखते कि मै नहीं गया मुझ पर होने वाले खर्च को मैंने बचाया। आप महाशय कमेटी सेऔर क्या चाहते थे ? जो आप लिखते हैं कि आधा अधूरा सम्मान प्राप्त कर कोरे के कोरे वापस आ गये। क्या आप यह चाहते थे कि बसंजी पंथवाद फैला रहे हैं , समाज में कटुता-वैमनस्यता उत्पन्न कर रहे हैं, उन्हें पुरस्कार दिया जाय। या बिना कुछ परिश्रम किये शोध-आलेख वाचकों का या विशेषांकों प्रकाशकों का मार्गव्यय वाला लिफाफा आपको दिया जाना चाहिए था। उनसे आप जरा पूछते तो करोड़ों के मालिक होते हुए बिना किसी आवास के पाण्डाल में लेटे थे, अपने साथ ले जायी गई पूड़ी आचार के साथ खाकर भी स्वयं को आयोजन में सम्मिलित कर धन्य मान रहे थे।

यह आयोजन अपने आप में अनूठा था जो समाज और साधुओं को तोड़ने में संलग्न हैं उन्हें साधुओं की एकजुटता, समाज की एकजुटता कभी रास नहीं आ सकती। ■

ओ मेरे हमदर्द ! मत चीरों किसी कली का हृदय

• विनोदकुमार जैन टडैया (एम.काम.) •

मकरन्द लुटाते इठलाते झूमते गर सुमन हो
अथवा उद्यान के रक्षक बागवान सा डॉक्टर हो
मत उछालो कीचड़ व्यक्तित्व पर दूसरे के
हरी भरी डाल पर आमोद प्रमोद करती गर पुरवैया हो
मत भेदो उस आंख को तीर से तर्कस से
खंजन सी भोली वो मोम सी नाजुक जो
चितवन बदलते ही अश्रपात करती है
अपने दिल में छिपी कथा यो व्यथा न तो मर्यादा या शर्म के मारे
किसी से कह सकती ना ही रोकर मन हल्का कर सकती है
बस मन मसोस कर रह जाती हूँ
मत बढ़ो उस दिशा में, प्रगतिशीलता में
जिसके सफर में हार जीत जीवन मृत्यु की
घटनाएं रहती है। एक मन हंसता है, दूसरे रोता है
क्या मल्ल युद्ध का दृश्य कभी आपने प्रत्यक्ष या
टी.वी. पर देखा हैं , कितना खौफनाक मंजर
रहता है ? चैनर वाले भी क्या खूब हैं , पर धन्यवाद के पात्र हैं
कोई इनकी भर्त्सना क्यों नहीं करता ? मल्ल युद्ध क्यों नहीं रोकता ?
क्या बापू विनोबा का देश इतना हिंसामय हो गया मेरे हमदर्द ! भाई बहिनों की
स्वार्थ भरी बातों में आकर बिना कसूर
मुझे ही जली कटी सुनाते हों
मैं तो तुम्हारी अर्धांग्नि हूँ, पत्नी-धर्म
निभा रही हूँ, समर्पण की भावना से
ओ मेरे हमदर्द क्यों अठखेलियों करता है उनसे

जिनकी दग्दीर ही मनहूशियत का जहर उगलती है
पत्थर भी रोता है उसे सुकोमल वधु पर
पनघट से से नीर खींचने पर मेहंदी रचे हाथों पर
फोड़े हो जाते हैं, दुःख बोल मुखर नहीं पाते हैं
तुम्हें नहीं दिखते ये जल कण अश्रु कण
तुम भला उसे कहाँ समझ पाते हो
पत्थर पर खिचे रेखांकन नहीं देख पाते हो
कृपया हृदयहीन न होकर संवेदनशील बनो
मत चीरों किसी कली का हृदय
गर्भपात और भ्रूण हत्या मत करो
बालिकाओं को संसार में आने से मत रोको
लिंग अनुपात गड़बड़ मत करो,
पुत्रों के समान उनका भी भरण पोषण, शिक्षा दीक्षा आदि दे
अन्यथा उत्तम बालिकायें, शिक्षिकाएं,बहुये, आर्यिकाएं,
प्रधानंत्री, राष्ट्रपति आदि समाज को कैसे मिलेगी
तुम क्या जानो इनमें क्या क्या कितनी-कितनी प्रतिभाएं छिपी हैं

रामटेक की पावन धरती पर एक और इतिहास रचा

रामटेक (नागपुर) महा.। रामटेक की पावन धरतीपर विराजमान परम पूज्य आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज के संघस्थ परमपूज्य मुनिश्री 108 संधानसागजी महाराज ने त्याग तपस्या की तरफ एक कदम और बढ़ाया। मुनिश्री दिनांक 5 से 7 अगस्त 2017 तक बेला (दो उपवास) के साथ 48 घंटे के प्रतिमायोग (ध्यान) में साधनारत रहे। हम सभी श्रावक श्राविकाओं की तरफ से मुनिश्री के चरणों में बारम्बार नमोस्तु नमोस्तु हम सभी की भावना है कि आपका रत्नत्रय अच्छे से इसी तरह ध्यान अऔर साधना के साथ बढ़े एवं आपको मोक्षमार्ग प्रशस्त हो।

हमारे गौरव

अन्तिम गंगराजे

मारसिंह के राज्य का परित्याग के प्रायः साथ ही साथ राष्ट्रकूटों का सूर्य अस्तगंत हुआ और स्वयं गंगराज्य में भारी अव्यवस्था उत्पन्न हो गई। दो तीन वर्ष की गड़बड़ी के उपरान्त 977 ई. में मारसिंह का छोटा भाई (लगभग डेढ सौ वर्ष बाद के एक शिलालेख में उसे मारसिंह का पुत्र लिखा है) राचभल्ल सत्यवाक्य चतुर्थ 'धर्मावतार' गंगराज्य का स्वामी हुआ और लगभग सात वर्ष तक शासन करता रहा। इस राजा के प्रथम वर्ष पेग्गूर ग्राम की जिनवसदि भट्टारक के शिष्य अनन्त वीर्य गुरु को पेग्गूर ग्राम तथा अन्य भी कुछ भूमि का दान दिया गया था। श्री पुरुष महाराज (एक पूर्व गंगनरेश) द्वारा दिये गये पुराने दान पात्रों की भी पुष्टि की गयी थी। इसी राजा के शासन काल में श्रवणबेलगोल की गोम्मटेश प्रतिमा प्रतिष्ठापित हुई थी। राचमल्ल चतुर्थ के पश्चात्त 958 ई. में उसका भतीजा (गोविन्द या वासव का पुत्र रक्कसगंग पेम्मर्मनडि राजा हुआ। उसके पतोन्मुख गंगराज्य को बचाये रखने का यथाशक्ति प्रयत्न किया। इस राजा ने गुरु द्रविड संघी हेमसेन वादिराज के शिष्य श्री विजयदेव थे। कन्नड़ कादम्बरी एवं छन्दाम्बुधि के रचयिता कन्नड़ भाषआ के सुप्रसिद्ध जैन कवि नागवम एवं राज्य के रक्कससंग ने राजधानी तलकाड में तथा अन्यत्र कई जिन मन्दिर बनवाये थे। बेलूर में एक सरोवर बनवाया था और दानादिक दिये थे। वह निस्सन्तान था। अतएव उसने अपनी दो भतीजियो और एक भानजे विद्याधर का पालन-पोषण किया था। रक्कसगंग की पुत्री चट्टलदेवी दुम्मच के सान्तर वंश के शिलालेखों में देवी की तरह पूजित हुई। सन् 1004 ई. के लगभग चोलों ने आक्रमण करके राजधानी तलकाड तथा गंगवाडी के बहुभाग पर अधिकार कर लिया। रक्कसगंग उसके पश्चात् भी लगभग बीस वर्ष जीविथ रहा और सम्भवतया चोलों के अधीन एक छोटे से उपराज्य या सामन्तवश के रूप में गंग राजे फिर भी चलते रहे, क्योंकि रक्कसगं ग के उपरान्त गंगराजा के रूप में नीतिमार्ग तृतीय राचमल्ल का नाम मिलता है। जिसके गुरु वज्रपाणि पण्डित थे, जैसा कि उसके 1040 ई. शिलालेख से प्रकट है। उसके उपरान्त रक्कसगंग द्वितीय राजा हुआ। उसकी पुत्री चालुक्य सम्राट सोमेश्वर प्रथम (1076-1126 ई.) कीरानी थी। रक्कसगंग द्वितीय के गुरु अनन्तवीर्य सिद्धांत देव थे। इस राजा का उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई कलिगंग भी परम जैन था। वह होयसलो का सामन्त बन गया था और 1116 ई. में उसने चोलों को मैसूर प्रदेश से बाहर निकालकर अपने स्वामी विष्णुवर्धन होयसल को साम्राज्य निर्माण में अद्वितीय सहायता दी थी। उसका प्रधान सामन्त भुजबलगंग भी परम जैन था। कलिगंग के उपरान्त भी गंगवश किसी न किसी रूप में प्रायः 16 वीं शती तक चलता रहा। पैरिवी, कैरवि, पासिण्डि, पूर्वी या कलिंगी आदि कई शाखाओं में यह वंश पहले ही बँट चुका था और भी शाखाएं प्रशाखाएं हुई। गंगवंश में उत्पन्न अनेक व्यक्ति स्वयं गंगराज्य उसके शाखा राज्यों तथा अन्य भी चालुक्य, चोल, होयसल, विजयनगर आदि दक्षिणी राज्यों के सामन्त सरदार होते रहे।

इस प्रकार दक्षिण भारत का गंगवंश एक सर्वाधिक दीर्घजीवी राजवंश रहा, साधिक एक सहस्र वर्ष पर्यन्त अविच्छिन्न बना रहा। बीच-बीच में उसने साम्राज्य शक्ति का रूप भी धारण किया था। चिरकाल तक एक महत्वपूर्ण एवं बलवान राज्यसत्ता का स्वामी तो वह बना ही रहा। उसका कुलधर्म और बहुथा राजधर्म भी जिनशासन ही रहा, जिसके संरक्षण और प्रभावना के लिये वंश के अनेक पुरुषों, महिलाओं, सामन्त सरदारों, राज्य कर्मचारी और राज्य की जनता ने यथाशक्ति प्रयत्न किया। फलस्वरूप उस काल एवं प्रदेश में जैन धर्म सशक्त ब ना रहा, अनेक प्रसिद्ध आचार्य, मुनि, आर्यिका आदि त्यागी महात्मा हुए, अनेक विद्वानों और कवियों ने कन्नड़, तमिल, प्राकृत, संस्कृत आदि भाषाओं में विविध विषयक विपुल साहित्य का निर्माण किया। जैन साधुओं ने लोक शिक्षा में प्रधान योग दिया, राजाओं का यथावश्यक पथ प्रदर्शन किया, जनता के नैतिक स्तर को उन्नत बनाये रखा और अनेक लोकोपकारी कार्य किये। कई धर्मतीर्थ विकसित हुए और गंगनरेशों द्वारा तथा उनके प्रश्रय में निर्मापित भव्य जिनालयों के रूप में मूर्त एवं शिल्प स्थापत्य की अनेक दर्शनीय एवं मनोज्ञ कलाकृतियां उदय में आयी। ■

योग गीत

योग राष्ट्र को स्वस्थ बनाये
हर जन-मन अपनाओं
योग से रोग भगाओं
जिन्दगी स्वस्थ बनाओं
यह ऋषि मुनि गुनियों का
दिया हुआ नुक्सा है
स्वस्थ साधना कर पाया
इसको सब मिल पाओं
उषा काल सूर्य आराधन
जीवन में अपनाओ... योग से राग....
आज योग को से जन जन ने
गांव शहर अपनाया
स्वस्थ बने निरोगी काया
यह अमृत अब पाया
रोगों से लड़ने अब सब
जीवन में अपनाओं....योग से राग....
भारत के आह्वान कों,
विश्व मंच अपनाया
योग दिवस पर विश्व राष्ट्र
हर जन मन को भाया
जीवन की तरुणाई का फल
जीवन में अपनाओ... योग से राग....

• रमेशचन्द्र मंगल, गुना •

बाल कहानी

मेमने की चतुराई

कान्हा किसली के जंगल में एक मेमना अपनी बकरीके साथ चर रहा था। उसे कोमल-कोमल घास चरने को मिल गयी। वह घास को चरता चला गया। उसने सूर्य को नहीं देखा। लेकिन धीरे-धीरे सूर्य अस्त होने लगा। उसके मालिक ने सब बकरियों को घेर कर अपने टापरे में बंद करने ले गया। वह यह भूल गया कि मेरा एक मेमना छूट गया है। तभी जब मेमना घास खाने में मस्त था कि उसी समय झाड़ियों में छिपा भेड़िया बाहर निकल आया और मेमने को पकड़ने लगा। मेमने ने कहा-मालिक आप हमें खाइये, क्योंकि आप मेरे मालिक है। मैं आपके सामने अपने आपको परोसने तैयार हूँ।परन्तु अभी मेरे पेट में बहुत सारी घास भरी है। वह आपका स्वाद बिगाड़ सकती है। आप मुझे थोड़ा सा लेट लेने दे जिससे कि घास पच जायेगी और आपको मजा भी आयेगा। भेड़िये ने मेमने की बात मान ली उसने सोचा थोडी देर में मेरा क्या बिगड़ जाता है ? फिर मेमना भेड़िये से बोला क्या आप मुझे नाचने का मौका देंगे। भेड़िये ने कहा तेरी आखिरी इच्छा जो भी होगी। मैं उसको पूरा करूंगा। मेमना नाचने लगा। नाचते-नाचते वह बोला दादाजी मजा नहीं आ रहा नाचने में। भेड़िये ने कहा तो मैं क्या

करूं। मेमने ने कहा कि आप मेरे गले की घंटी बजाये तो नाचने में मजा आयेगा। भेड़िये ने मेमने के अनुसार घंटी बजाना शुरु कर दी। घंटी आवाज किसान ने सुन ली और वह समझ गयाकि मेरा मेमना मुसीबत में फंस गया है। किसान ने अपने सारे कुत्ते मेमने को बचाने में छोड़ दिये। कुत्तों का झुंड देखकर भेड़िया डर गया और जंगल में भाग गया। मेमना बहुत खुश हुआ और उसने अपनी पूरी घटना अपनी माँ बकरी को सुना दी। बकरी बहुत खुश हुई और उसने अपने बेटे की सूझबूझ और चतुराई पर खूब शबासी दी। ■

संस्कार गीत

हिन्दी एक महान

सागर सी गहरी भाषा यह
हिन्दी एक महान है
भारत की संस्कृति है हिन्दी
भारतवासी प्राण हैं
कोटी कोटी जन रहे समर्पित
भाषा के विस्तार में
सरवर में नीरज सी खिलती
भाषा के परिवार में
प्रेम और करुणा बिखराती
भाषा विश्व प्रधान है
जन्म जन्म के पुण्य प्रतापी
हिन्दी भाषा पाते है
सत् शिव सुन्दर अमृत भाषा पाते है
सुर नर इसको ध्याते हैं
हिन्दी से मिश्रित जो होता
शोभा पाता ज्ञान है
मोह और समता को हरती
अध्यात्म प्रवाह है
मानवत का पाठ सिखाती
ममता का संवाह है
हिन्दी भाषा धर्म की भाषा
इसका जग में मान है

बाल कविता

जय हो सुधासागर महाराज

सबके दिल पर करते राज
मुनिश्री सुधासागर महाराज
इनका नाम बड़ा है सच्चा
जिसको जपता बच्चा बच्चा
जिनवाणी के सच्चे प्रहरी
गुरु चरणों में लगन है गहरी
तत्त्व ज्ञान के मुनि पिटारे
भक्तों के नित संकट हारे
ज्ञान ध्यान में लीन रहे नित
आत्म ध्यान में लीन रहे चित्त

हास्य तरंग

■ नई नवेली पत्नी अपने पति से झगड़ा कर रही थी । पति - मैं कोई डरता नहीं हूँ तुमसे ।

पत्नी-डरते तो तुम हो, पहली बार जब मेरे घर आये थे तो पूरे 20 आदमी साथ लाये थे और मुझे देखो मैं अकेली ही चली आई थी । बड़ी बातें करते हो ।

■ बिजली मेकेनिक एक दिन अपने घर की बिजली ठीक कर रहा था कि अचानक टेस्टर गिरकर टूट गया तोउसने पत्नी को आवाज लगाई, सुनती हो जरा इधर आना ।

पत्नी -क्या हैं ?

पति-ये दो तारें हैं इनमें से एक पकड़ तो सही।

पत्नी- क्यों ? पति-अरे पकड़ तो सही।

पत्नी - लो पकड़ लिया तार।

पति कुछ नहीं हुआ, पति समझ गया करंट दूसरे तार में है।

■ महिला- डॉक्टर जी मेरे कानों में सुरीली आवाजें आती हैं

डॉक्टर- मैडमजी आप गलत जगह आ गई है। मैं डॉक्टर नहीं हूँ। संगीत सिखाता हूँ।

महिला - इसलिए तो मैं आपके पास आई हूँ कि कान में सुरीली आवाज कौन से राग की है।

■ भावित को नानी ने समझाया, बेटाजब खाँसी आये, तो मुँह के आगे हाथ या रूमाल रख लिया करो ।

भावित - नानीजी फिक्र की कोई बात नहीं हैं। मेरे दांत आपकी तरह नकली नहीं हैं ।

– जिनेन्द्रकुमार जैन,
बाकल वाले, इन्दौर

महामस्तकाभिषेक प्रभावना रथ इन्दौर से प्रारम्भ

इन्दौर । 15 अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक प्रभावना रथ का प्रारम्भ बड़ी धूमधाम व उत्साह के साथ प्रारम्भ हुआ । इसका प्रारम्भ इन्दौर के समवशरण मंदिर कंचनबाग से आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में विशाल जनसमूह के साथ प्रारम्भ होकर रवीन्द्रनाट्य गृह पहुंचा । जहां विशाल सभा का रूप ले लिया । यहां विभिन्न समाजसेवियों ने इसके उद्देश्य व महत्व पर प्रकाश डाला । यह रथ समाज में समरसता, धर्मप्रचार, श्रवणबेलगोला में प्रत्येक बारह वर्षों में होने वाले भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक के महत्व को बताने आदि के उद्देश्य से प्रवर्तित किया जा रहा है । श्रमणाचार्यश्री विशुद्धसागरजी ने समरसता, भाईबन्धुत्व का आह्वान करते हुए भगवान के बाहुबली के गुणों को धारण करने का सन्देश देते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति में भगवान बनने की क्षमता है। सभा को प्रदीपकुमार जी कासलीवाल, कीर्ति पांड्या, राजकुमार जी पाटोदी, पं. सुरेश मारौरा, विद्वत् परिषद् के महामंत्री डॉ. महेन्द्र मनुज आदि ने संबोधित किया। श्री महेन्द्रकुमार जैन एलआईसी, सुबोध मारौरा आदि ने संचालन में सहयोग किया। जैन प्रख्यात विद्वान पं. रतनलालजी ने रथ पर केशर से स्वस्तिक बना कर प्रारम्भ किया ।

समाचार

हुकुमचंदजी सांवला का अभिनंदन

इन्दौर (म.प्र.)। अहिंसा, शाकाहार, गौरक्षा के महानतम उद्देश्य और परानुभूति के प्रयासों में जिन्होंने खुद को केन्द्रित कर राष्ट्र निर्माण के संकल्प को साकार रूप दे अपनी पहचान वैयक्तिकता, क्षमता और महत्त्व को सदियों के लिए दीर्घजीवी बना दिया है ऐसे व्यक्तित्व के स्वामी श्री हुकुमचंदजी सांवला जी (अन्तर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद, संस्कार सागर इन्दौर सलाहकार सम्पादक) का अभिनन्दन मुनिश्री पुलकसागरजी महाराज के आशीर्वाद से अखिल भारतीय पुलक जन चेतना मंच एवं राष्ट्रीय जैन महिला जागृति मंच के तत्वावधान में 14 अगस्त 2017 को इन्दौर में किया गया । जिसमें मुख्य अतिथि श्री पारसचंद जैन, श्री कृष्णमुरारीजी मोघे, डॉ. नरेन्द्रजी धाकड़, विधायक सुदर्शनजी गुप्ता एवं सुश्री उषा ठाकुर आदि गणमान्य नागरिक उपस्थित थे ।

राष्ट्रसंत कमल मुनि व गच्छाधिपति प्रद्युम्नविमल सूरीश्वर नवकार गुरु महारत्न की उपाधि से होंगे अलंकृत

उज्जैन (म.प्र.) । जैन धर्म का सबसे बड़ा उपाधि अलंकरण नवकार उपाधि 2017 की प्रथम सूची जारी करते हुए आयोजक विनायक अशोक लुनिया ने बताया कि गत वर्ष आयोजन को एक प्रथा के रूप में प्रारंभ करने वाले स्व. अशोकजी लुनिया के अधूरे कार्यों को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष भी नवकार उपाधि का अलंकरण किया जा रहा है। जिसमें नवकार गुरु महारत्न में राष्ट्रसंत कमलमुन कमलेश, गच्छाधिपति आचर्यश्री प्रद्युम्न विमल सूरीश्वरजी , नवकार जीवदया रत्न संत मुनिश्री विनम्रसागरजी महाराज, नवकार गौरव श्री संजय जैन (ब्रह्मचारी) जबलपुर, नवकार धर्म रक्षक श्रीमती सुनीला जैन घंसौर को दिया गया ।

कुण्डलपुर में चल रही पयूर्षण पर्व की कठोर तप- साधना

कुण्डलपुर (दमोह) म.प्र. । कुण्डलपुर में पर्यूषण पर्व के दौरान आर्यिका रत्न गुरुमति माताजी एवं तपोमति माताजी के ससंघ मंगल सानिध्य में चल रहे 11 दिवसीय वीरान्त श्राविका संस्कार शिविर में महिला शिविरार्थी आर्यिका श्री के निर्देशन में कठोर साधना तप चल रही है । आर्यिकाश्री ने कहा कि जीवन में सरलता होनी चाहिये मायाचारी करने वाले तिर्यंच गति में जन्म लेते हैं जिसका स्वभाव सरल होता है वह उतना ही सुखी होता है जीवन में मुक्ति सरलता से ही प्राप्त होती है । किन्तु बिल में प्रवेश करने के पहले उसे सीधा ही होना पड़ता है ।

मुनिश्री स्वभावसागरजी महाराज के समाधिमरण पर विनायंजलि सभा

ललितपुर (उ.प्र.)। विद्यासागर महाराज के संघस्थ श्रेष्ठ साधक मुनि श्री स्वभावसागरजी महाराज की विनयांजलि सभा में क्षेत्रपाल जैन मंदिर में मुनि अभयसागरजी महाराज ने धर्मसभा में कहा कि उन्होंने मुनि धर्म को अपनाते हुए जीवन के शाश्वत सत्य को प्राप्त किया। मुनिश्री ने प्रसंगों के माध्यम से बताया कि मुनि स्वभाव सागर महाराज का ग्रहस्थ जीवन अत्यंत सरल रहा व स्वभाव से दूसरों के साथ मिलनसार रहे। मुनिश्री श्रेष्ठ साधक थे।

भगवान को पाने में गुजर रहा है जीवन -एलाचार्य अतिवीर मुनि

दिल्ली। त्रिलोक तीर्थ प्रणेता पंचम पट्टाचार्य परम पूज्य गुरुवर आचार्यश्री 108 विद्याभूषण सन्मतिसागरजी महाराज के शिष्य परम पूज्य एलाचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज का 12 वां चातुर्मास राजधानी दिल्ली की धर्मनगरी करोलबाग क्षेत्र में श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में व्यापक धर्मप्रभावना के साथ चल रहा है। एलाचार्यश्री ने धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज का जीवन केवल लालच के आधार पर टिका हुआ। जहां कुछ लालच है वहीं हमारा रुझान है। हमारे पास जो है उससे हम संतुष्ट नहीं है परन्तु हमें और कुछ भी चाहिए, यही लालच आज मानव जीवन को बर्बाद करने में लगा है। वर्तमान और भविष्य के फासले को मिलाने की पुरजोर ताकत हम लगा देते हैं। लौकिक जीवन में लालच की परकाष्ठा देखने को मिलती ही है। परन्तु वर्तमान में भगवान को पाने के लिए भी प्रलोभन और लालच की बुनियाद ही खड़ी करनी पड़ती है।

डॉ. शीतलचन्द्र जैन जयपुर पीठाध्यक्ष नियुक्त

जयपुर (राज.)। जैन जगत के सुविख्यात मूर्धन्य विद्वान डॉ. शीतलचन्द्र जैन जयपुर को राज्य सरकार ने जयपुर स्थित राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय में महाकवि ज्ञानसागर जैन दर्शन पीठ के पीठाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया है। डॉ. शीतलचन्द्र जी जैन दिगम्बर जैन संस्कृत महाविद्यालय जयपुर में प्राचार्य पद पर विगत 35 वर्षों से सेवाएं देकर निवृत्त हुए हैं।

सिद्धायतन अध्यात्म के साथ आधुनिकता का अद्भुत संगम

सम्मेदशिखर। सिद्धायतन का कार्य द्रुतगति से चलकर अपने अंतिम पड़ाव पर पहुँच गया है। तथा फीनिशिंग का कार्य प्रगति पर है सिद्धायतन के द्वार अक्टूबर 2017 में खुलने की योजना है। सिद्धायतन महान तीर्थक्षएत्र श्री सम्मेदशिखर जी मुख्य मार्ग पर स्थित एक आध्यात्मिक और आधुनिक केन्द्र हैं। जिसे जैन समुदाय के सभी उम्र के लोगों के लिए स्थापित किया जा रहा है। विश्वस्तरीय सुख-साधन एवं मूलभूत सुविधाओं से सम्पन्न सिद्धायतन परिसर में श्री 1008 भगवान आदिनाथ जिनालय के साथ विश्व प्रसिद्ध डॉ. मंजू जैन के मार्गदर्शन में भक्तामरध्यान केन्द्र भी निर्माणाधीन है। सामूहिकपूजा, भजन एवं धार्मिक कार्यों हेतु 5000 वर्ग फीट का डबल ऊंचाई का स्तम्भ रहित वातानुकूलित हाल 11 से 5बजे तक चलने वाली धार्मिक कक्षाओं / चर्चाएवं प्रवचन हेतु 3 बडे वातानुकूलित हाल, ध्यान, योग, केन्द्र, अनुसंधान केन्द्र,पुस्तकालय, वायफाय युक्त कम्प्यूटरहाल व 32विद्वानों की निःशुल्क साधना की उत्तम व्यवस्था के साथ बच्चों एवं युवाओंकेलिए इंडोर आउटडोर खेल, बैडमिंटन कोर्ट, लान टेनिस, वालीबाल, जिम, व्यायामशाला, टहलने के लिए पौन किलोमीटर लंबा ट्रेक, बच्चों के 3 बड़े पार्क इत्यादि सुविधाएंन होंगी।

दशलक्षण महामंडल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ

इन्दौर (म.प्र.)। इन्दौर। संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का संयम स्वर्ण महोत्सव वर्ष 2017-18 एवं पर्यूषण पर्व दिनांक 25 अगस्त से 05 सितम्बर 2017 तक आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद से श्री दशलक्षण महामंडल विधान एवं विश्वशांति महायज्ञ का आयोजन श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विजयनगर इन्दौर में किया गया। जिसमें प्रवचनकर्ता श्री प्रदीप जी जैन(टड़ा), श्री राजीव जैन (लार), श्री एम.सी. चौधरी, पं. रविन्द्र जैन है। महायज्ञनायक वीरेन्द्र-सुनीता जैन, सौधर्म इन्द्र -नरेन्द्र-कमलेश जैन(जयपुर),कुबेर इन्द्र- सुनील-पूजा जैन, मुख्य कलश-के.सी. सरोज जैन, डी.के. - माला जैन, स्वेदशीलाल-राखी जैन, यज्ञनायक- हर्ष-तृप्ति जैन, विमल-मीना गंगवाल, ध्वजारोहण- भरत-रितु जैन, ईशान इन्द्र- मनोज-सुनीता जैन, अच्युतइन्द्र-ज्ञानचंद-चंदादेवी, माहेन्द्र- सुरेश-अनिता जैन, अखंड दीप स्थापितकर्ता- कमलेश-सीमा जैन, प्रियदर्शी -कल्पना जैन, आशीष-निधि जैन, ब्रह्मेन्द्र-सूरजमल-पदमा जैन, ब्रह्म प्रत्येन्द्र- विनोद-मंजू जैन,, लांतव इन्द्र- विकास-अनुभा जैन (पैराडाइज), लांतव प्रत्येन्द्र- अरविन्द्र-रश्मि जैन, शुक्रेन्द्र- आर.सी-किरण जैन, शुक्रप्रत्येन्द्र- राजकुमार-समता जैन, शतारेन्द्र- कोमलचंद-शीला जैन, शतार प्रत्येन्द्र-विवेक-आकांक्षा जैन, आणतेन्द्र- एम.सी. कमलेश चौधरी, प्राणतेन्द्र-रमेश-स्नेहलता जैन, आरनेन्द्र- सुभाष-सुधा जैन (जबलपुर वाले), अच्युतेन्द्र - प्रणय-आरती जैन एवं मुख्य कलश स्थापित कर्ता- श्री राजेन्द्र जैन(जेसी नगर वाले), श्री सुधीर बांझल, श्री राजेन्द्र कंठाली (दिल्ली वाले), श्री जैनेश रोकड़िया, श्रीमती शोभा डॉ. नरेन्द्र जैन, श्रीमती विद्या प्रेमचन्द्र जैन, श्रीमती सारिका संजय जैन, श्रीमती आराधना कासलीवाल आदि ने पुण्यार्जन प्राप्त किया।

संयम की राह...

संयम की राह चलो
राही बनना ही तो
हीरा बनना है।
स्वयं राही शब्द ही
विलोम रूप से कह रहा
रा - - ही-- - ही- -
राख बने बिना
खरा दर्शन कहां
रा--ख---ख--रा
निर्ग्रन्थ दशा में ही
अहिंसा पलती है
पल पल पनपती है
--- बल पाती है।
हम निर्ग्रन्थ-पंथ के पथिक है
इसी पंथ को हमारे यहां
चर्चा--अर्चा--प्रशंसा
सदा चलती रहती है।
यही जीवन इसी भांति
आगे-आगे भी चलता रहे, बस !
और कोई वांछा नहीं ॥
मोक्ष की यात्रा सफल हो,
मोह की यात्रा विफल हो,
धर्म की विजय हो,
कर्म का विलय हो,
जय हो, जय हो
जय हो, जय हो ॥
परिषह उपसर्ग के बिना कभी
स्वर्ग और अपवर्ग की उपलब्धि न हुई,
न होगी त्रैकालिक सत्य है यह ॥
मूकमाटी बोलती है, पर
श्रवण की शक्ति अपने में
सभी को जगाती है
दे रही संदेश को
त्याग कर दो अहं मन का
राग छोड़ो मलिन मन का
मार सहना सीख लो तुम कुम्भ-सी
तपन सीखों अग्नि में तुम कुम्भ-सी
खुद तरो, औरों को तारों
यही हो आराधना
विद्या के जो है स्वयं सागर
ज्ञान गुण के जो है आगर
इन्हीं के चरणों में नत हो
हम करे नित साधना
मूकमाटी की सुगन्धी
फैलती बन आज चन्दन
शब्द को दे अहर्य स्वामी ॥

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा

माह : सितम्बर 2017

संक्षेप में उत्तर दीजिये :

1. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
2. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित मुनिश्री समयसागरजी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
3. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित मुनिश्री नियमसागरजी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
4. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित मुनिश्री सुधासागरजी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
5. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित मुनिश्री प्रमाणसागरजी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
6. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित मुनिश्री अभयसागरजी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
7. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित एलकश्री सिद्धांतसागरजी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
8. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित मुनिश्री समतासागरजी महाराज का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
9. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित आर्यिकाश्री गुरुमति माताजी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
10. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित आर्यिकाश्री दृढ़मति माताजी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
11. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित आर्यिकाश्री पूर्णमति माताजी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
12. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित आर्यिकाश्री गुणमति माताजी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
13. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित आर्यिकाश्री ऋजुमति माताजी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
14. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित आर्यिकाश्री अकम्पमति माताजी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
15. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित आर्यिकाश्री आदर्शमति माताजी का चातुर्मास कहाँ हो रहा है ?
16. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का बुंदेलखण्ड में प्रथम चातुर्मास कहाँ हुआ ?
17. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के श्री सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर में कुल कितने चातुर्मास, कब-कब हुये हैं ?
18. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के अजमेर (राज.) में कुल कितने चातुर्मास, कब-कब हुये हैं ?
19. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के श्री सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि में कुल कितने चातुर्मास, कब-कब हुये हैं ?
20. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के बीनाबारहा में कुल कितने चातुर्मास, कब-कब हुये हैं ?
21. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के श्रीसिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर में कुल कितने चातुर्मास, कब-कब हुये हैं ?
22. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के जबलपुर में कुल कितने चातुर्मास, कब-कब हुये हैं ?
23. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के श्री अतिशयक्षेत्र रामटेक में कुल कितने चातुर्मास, कब-कब हुये हैं ?
24. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के श्री सिद्धक्षेत्र नैनागिर में कुल कितने चातुर्मास, कब-कब हुये हैं ?
25. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के श्री तीर्थक्षेत्र अमरकंटक में कुल कितने चातुर्मास, कब-कब हुये हैं ?

26. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के इन्दौर में कुल कितने चातुर्मास,कब हुये हैं ?
27. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के छत्तीसगढ़ में कुल कितने चातुर्मास, कब-कब हुये हैं ?
28. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के महाराष्ट्र में कुल कितने चातुर्मास कब-कब हुये हैं ?
29. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के गुजरात में कुल कितने चातुर्मास, कब-कब हुये हैं ?
30. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के राजस्थान में कुल कितने चातुर्मास, कब-कब हुये हैं ?
31. मुनिश्री विद्यासागरजी महाराज के राजस्थान में कुल कितने चातुर्मास, कब-कब हुये हैं ?
32. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के उत्तरप्रदेश में कुल कितने चातुर्मास, कब,कहाँ हुये हैं ?
33. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के बिहार में कुल कितने चातुर्मास, कब-कहाँ हुये हैं ?
34. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के भाग्योदय तीर्थ,सागर में कुल कितने चातुर्मास, कब हुये हैं ?
35. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के अतिशयक्षेत्र आहारजी में कुल कितने चातुर्मास, कब-कब हुये हैं ?
36. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के अतिशयक्षेत्र पपौराजी में कुल कितने चातुर्मास, कब-कब हुये हैं ?
37. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के अतिशयक्षेत्र थूबौनजी में कुल कितने चातुर्मास, कब-कब हुये हैं ?
38. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के सिद्धक्षेत्रों पर कुल कितने चातुर्मास हुये हैं ?
39. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का म.प्र. की राजधानी में चातुर्मास कब हुआ ?
40. ब्र. विद्याधर जी कि मुनि दीक्षा कहाँ पर हुई थी ?
41. ब्र. विद्याधर जी कि मुनि दीक्षा कब हुई थी ?
42. ब्र. विद्याधर जी कि मुनि दीक्षा किस माह की किस तिथि को हुई थी ?
43. ब्र. विद्याधर जी कि मुनि दीक्षा कौन से विक्रम संवत् में हुई थी ?
44. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज क़ी आज्ञासे चलने वाले शिष्यों का चातुर्मास कितने स्थानों पर हो रहा है ?
45. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के दीक्षित शिष्यों का चातुर्मास कितने प्रांतों में हो रहा हैं ?
46. आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज को आचार्य पद किसने दिया था ?
47. आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज को आचार्य पद कब दिया था ?
48. मुनिश्री विद्यासागरजी महाराज ने आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज के साथ कितने चातुर्मास किये ?
49. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का तीन-तीन वर्ष के अंतराल में तीन चातुर्मास कहाँ हुये ?
50. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित शिष्योंका चातुर्मास कितने स्थानों पर हो रहे हैं ?

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा : सितम्बर 2017

प्रश्नपत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम .....स्थान .....

उम्र .....सदस्यता क्र. .....

पूर्ण पता .....

पिन कोड ..... फोन नं..... (एस.टी.डी.) .....

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम ..... हस्ताक्षर

नियम :– ..... जब तक दूसरा प्रश्न–पत्र भरकर नहीं भेजते तब तक के लिए।

वर्ग पहेली : 221

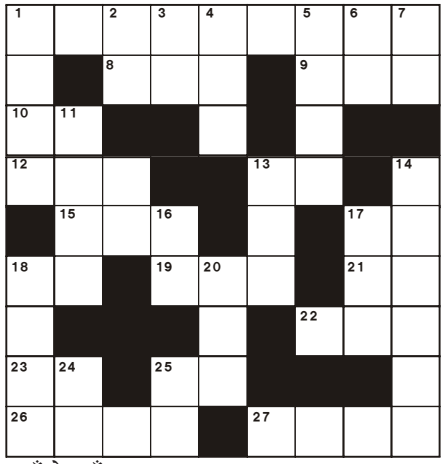

बाएँ से दाएँ

1. बीना बारह तीर्थ परर आचार्य विद्यासागरजी महाराज द्वारा चलाई एक योजना (9)
8. विटामिन ए से युक्त सब्जी, जमीकंद (3)
9. क़लश, घड़ा (3)
10. संज्ञा, नामाक्षर (2)
12. रुकना (3)
13. बहुत बड़ा, अधिक (2)
15. आंखों में लगाने वाला काला पदार्थ (3)
17. जन्म, संसार (2) 18. युक्ति,समाधान(3)
21. रन का बिगड़ा शब्द (2)
22. जीत का भाव (3)
23. दरवाजा, द्वार, रेट (2)
25. मर्यादा वाचक शब्द (2)
26. पूजन करने वाला, यज्ञ का मुख्य पात्र (4)
27. आचार्य विद्यासागरजी का जन्म प्रदेश (4)

ऊपर से नीचे

1. रामटेक तीर्थ के मूलनायक भगवान (4)
2. डोरा,मांझा (2)
3. रहस्य, राज्य सत्ता (2)
4. पाप, अघ, बुरा कार्य (3)
5. आचार्य जो इंदुदेव रचित योग का ग्रंथ (4)
6. संसार (2)
11. ममत्व, मेरा पन(4)
14. आचार्य विद्यासागर जी द्वारा रचित एक संस्कृत शतक,
17. आर्यव्रत (3)
18. आत्मानुशासन का आचार्य विद्यासागरजी द्वारा अनुवाद का नाम (4)
20. धोबी (3)
24. धूल (2)

वर्ग पहेली : 220 का हल

1 नि	2 जा	मृ	3 त	4 पा	न	■	5 र	6 फ
7 जा	मा	■	8 प	थ	■	9 स	ब	ला
10 नु	त	■	न	■	11 अ	लि	■	■
भ	■	12 म	■	13 स	क	ल	■	14 सु
15 ब	16 त	न	■	17 म	ल	■	18 दा	नी
19 श	र	■	20 त	य	■	21 सु	म	ति
त	■	22 त	मा	सा	■	■	23 न	श
24 क	25 म	ल	■	र	26 ज	27 त	■	त
■	28 त	क	ली	■	29 य	दा	■	क

.....सदस्यता क्र. .....

पता : .....

वर्ग पहली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को **हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन** (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रू., तृतीया पुरस्कार 41 रू.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी ■

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

रत्नत्रय से पावन जिनका

नियम
१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

भारत की प्राचीनतम् संस्कृति पर आधारित कार्यक्रमों का सैटेलाइट टिवी चैनल

नवग्रह चैनल पर प्रमुख जैन संतो के प्रवचन

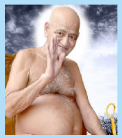
संत शिरोमणी विद्यासागर महाराज
प्रातः 10.30 बजे

गणाचार्य कुंथुसागर महाराज
सायं 6.30 बजे

आचार्यश्री विशुद्धसागर महाराज
रात्रि 9.30 बजे

आचार्यश्री ज्ञानसागर महाराज
रात्रि 11.00 बजे

कवितीर्थ मुनिश्री प्रतिभासागर महाराज
रात्रि 8.00 बजे

श्री नवग्रह चैनल निम्न डि. टी. एच. एवं केबलों पर देखीए।

■ निवेदन
श्री नवग्रह टि.वी. चॅनल पर विज्ञापन, पंचकल्याण कार्यक्रम, प्रभू अभिषेक, एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों के सीधा प्रसारण हेतू संपर्क करें ।

NAVGRAH MEDIA NETWORK PVT. LTD.
NH-4, ROAD, VARUR - 581207 Dist. Hubali (Karnataka)
Mob. No. : 07536888870, 07996446847, 08362237108
- R. C. Raina (C.O.) - 09999797340,
- Hemlata - 08941888876,
- Trilok Jain - 9654720200
- Deepali r k Gandhi - 8422917190

e-mail : navgrahveertha@gmail.com www.navgrah.tv

श्री नवग्रह चैनल देखने के लिए सभी दर्शकों से निवेदन है की आपने केबल ऑपरेटर से संपर्क करे ।

स्थान : भोपाल (म.प्र.)
दिनांक 14 अक्टूबर 2016
संत शिरोमणि 108 आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज जी के सम्मुख प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी,
श्री शिवराजसिंह जी चौहान म.प्र. मुख्यमंत्री एवं श्री मनोहर जी पर्रिकर गोवा मुख्यमंत्री
सम्पर्क करे – 0731-2571851, मो. : 8989505108, 8989121008
संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org